परंब्रह्म पराशक्तिः सीतारामेति कथ्यते।

आदि रामायण १.७९.२०क

The Supreme Brahman,The Supreme Power, is called Sita Rama.

श्रीरामो राघवेन्द्रो वै रसिकेन्द्रशिरोमणि।
एस वै देवकार्याय प्रादुर्भवति नित्यशः।।
बलकृष्णादिरुपेण जगत् कल्याणकारकः।
इदानींपुर्णरुपेण भगवद्गेहेप्यवातरत्।।
एष एव श्रिया सांक शेते प्रमुदकानने।।
अस्य एव अंशः स पुरुषो यः सहस्राननेक्षणः।।

आदि रामायण १.७१.१८-२०

Sri Rama, the lord of the Raghus, is the chief of the connoisseurs. He incarnates for the service of the gods

He is the welfare-giver of the world in the form of Balaram, Krishna and other avtars. Now he descended in

his full form even in the house of the Lord. This is the one who lies with the beauty in the pramodvan. That very man who has a thousand faces is a part of this.

अस्यां तुरीयावस्थायां स्थितिं प्राप्याविनाशिनीम् ।
आनन्दैकान्तशीलत्वादनानन्दपदं गतः ॥४॥
अनानन्दमहानन्दकालातीतस्ततोऽपि हि ।
मुक्त इत्युच्यते योगी तुर्यातीतपदं गतः ॥५॥
अनुभूतिमयं तस्मात्सारं ब्रह्मेति कथ्यते ॥६॥

Annapurna upanishad

In this fourth stage(तुरीय अवस्था), the state of being is indestructible (अविनाशी) Because of his characteristics of bliss and solitude he attained the state of non-bliss. 14there is no bliss, no great bliss, beyond time.

A yogī who has attained the fourth transcendental stage (जो योगी तुरीय अवस्था को प्राप्त कर लिया है)is called

liberated (मुक्त). 15. Therefore the essence of perception is called the Absolute Truth (ब्रह्म). 17.

स एष सर्वभूतान्तरात्मापहतपाप्मा दिव्यो देव एको नारायणः ।।

Subal upanishad sashtam khand and adhyatm upanishad shlok 1

त्वम् सर्वान्तरात्मापहतपाप्मा दिव्यो देव एको रामचन्द्रः ।।

आदि रामायण १.२९.१४

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रम् एव अभिसंविशन्ति तथा एतानि नामानि सर्वाणि पुरुषं त्वाम् अभिसंविशन्ति।।

आदि रामायण १.२९.१२

Just as rivers flowing into the sea itself, so all these names flow into you, the Purusha Shri Ramchandra

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्

Manduka upanishad 3.2.8

Just as rivers flowing become lost in an ocean, giving up both their name and form, just so, the knower, freed from name and form, attains the bright Purusha which is beyond the avyakta.

श्रीरामः शरणं ममेति परमो मंत्रोऽयमष्टाक्षरः स्मर्तव्यः सततं निवेद्य सहसा स्वात्मनमस्मैः मुहुः ।
श्रीरामः सहजापति सकलमित्याभाषमाणो गिरा त्यक्त्वा कृत्यमकृत्यम् एतद् अखिलं चिन्मात्रो संस्थो भवेत्। ।

Aadi Ramayan

This eight-syllabled supreme mantra, ‘Sri Rama is my refuge’, should be remembered constantly and suddenly offering ourselves to us again and again. Sri Rama, the lord of the creators, speaking with words, saying, ‘This whole universe, leaving behind action and inaction, becomes established in the mere consciousness.

इडादि मार्गद्वयं विहाय सुषुम्नामार्गेण आगच्छेत् तद् विष्णोः परमं पदम् ।

शाण्डिल्य उपनिषद

Leaving the two paths, Ida Nadi and pingala nadi, one should come by the Sushumna nadi (a nadi where all 7chakras are located), that Vishnu param padam (shri Ram)

This has been explained in adi ramayan and yoga upanishad that shri Ramchandra is the complete brahman who is beyond all 7 chakras.

सदाशिवोयमाराध्य परम स्थानं आगतः ।
स रामो मन्मनस्त्यक्त्वा न क्वापि परिगच्छति। ।

Padmapuran 5.42.18

सदाशिव स्वयं जिनकी आराधना करके सर्वोत्कृष्ट स्थान को प्राप्त हुए हैं, वे भगवान श्री रामचन्द्र हैं।

Sadashiv himself, by worshiping whom he attained the supreme position, is God Shri Ramchandra

एक एव परमा लक्ष्मी प्रमोदवनचन्द्रिका।
सहजानन्दानी साक्षाद् रमते रामसंगिनी। ।
स एव श्रीजानकी सीता नित्यम् अद्भुतकेलिनी।
नाम धाम स्वरुपं च तस्या वेदाद्य गोचरम्। ।
विपुलं च यशस्तथा गीतं कविवरैर्मुहुः ।
यस्तां संसेवते प्रेम्णा नित्यानुकुल्य वृत्तिना। ।
सः धन्ये पुमान् लोके पुरुषार्थ निकेतनः ।

स एव सर्ववेदानाम् रहस्यं वेत्ति नापरः ।।

आदि रामायण ३ भाग पेज 260

There is only one supreme Lakshmi, the moon of the forest of delight.

Sahajanandani is directly enjoying herself as the companion of Rama.

That is Sri Janaki Sita ever wonderful Kelini

Her name, abode and form are now visible in the Vedas.

His vast fame has been sung again and again by the great poets

He who serves her with love and with an ever-conducive conduct.

That blessed man is the abode of manly purpose in this world.

He alone knows the mystery of all the Vedas and no one else.

शिव उवाच:-

एकस्तवं पुरुषः साक्षात् प्रकृते पर ईर्यसे।
यः स्वांशकलया विश्वं सृजत्यवति हन्ति च।।
अरूपस्तवमेश जगतः कारणं परम्।
एक एव त्रिधा रूपं गृह्णासि कुहकान्वितः।।
सृष्टौ विधातृस्वरूपं पालने स्वप्रभामयः।
प्रलये जगतः साक्षाद् अहम् शर्वाख्यातं गतः।।

पद्मपुराण पाताल खंड अध्याय २८ श्लोक ६-८ तथा गीता प्रेस कल्याण शिव उपासना अंक पृष्ठ ७१ से उद्धृत

Shiva says:- O Shri Ram! You are the only unique person beyond nature, through part of your art you create, maintain and destroy the world in the form of Brahma, Vishnu and Rudra. Despite being formless, you are the cause of the entire universe. Despite being one, you get mixed with Maya and take a triple form. For creation of the world you take the form of Brahma, for maintenance of the world you take the form of Vishnu and for destruction, you take the form of Shiva.

ततः जड अजड आत्मनाम् विश्व वैचित्रि आत्मना क्रीडति इति राम।

तंत्र लोक ख १ आ १ पृष्ठ १३१

तंत्र आचार्य अभिनव गुप्त के अनुसार:- जड़,अजड़ और विश्व वैचित्र्य द्वारा क्रीड़ा करनेवाला राम को परम तत्व बताया है।

Shri Ramchandra as supreme personality of godhead in shaiv sect of sanatan dharma

रामः सदाशिवो मुर्तिः कालमुर्तिः दिगंबरः।
रामकृपाकरो देवो विश्वव्यापी निरंजनः।।

ब्रह्मयामल तंत्र

Rama is the idol of Sadashiva, the idol of time, the divine.shri ram is merciful and pervades the universe and is devoid of deception.

अहं शक्ति शिवोरामः इति वेद प्रगीयते।

Sundari tantra

Sita is paratpar shakti and Shri Ram is Shiva(bhagwan) this is sung by vedas.

राम परोशिवो ज्ञेयो नाऽवतारो नरोऽपि च।
मत् परं ब्रह्म विख्यातं तद् राम इत्यक्षर द्वयं।।

शक्तिसंगम तंत्र

It is to be understood that Ram who is Parashiva is not an incarnation nor is he a human being. That Supreme Brahman known as Me is the two syllables Ram.

गौरीरुपा परासीता महासाम्राज्यनायिका।
रामः पराशिवो ज्ञयो न अवतारो नरोपि च।।

महाकाल संहिता

सीता ही परागौरी/पराशक्ति है और श्रीराम स्वयं पराशिव है। वे न अवतार है ना साधारण मनुष्य।

रामो हरः पार्वतीशः स्मर्यते च दिवानिशं।

रुद्रयामल तंत्र सृष्ट प्रकरण छन्द ९७०

Rama is Hara, the Lord of Parvati,who is remembered day and night.

पादाम्बुज नखज्योत्स्ना परंब्रह्म प्रकाशिनीम्।

(आदि रामायण, ब्रह्मा संहिता तथा सदाशिव संहिता)

भगवती सीता जी के चरण के नख से जो ज्योति निकलता उसी को परंब्रह्म कहा जाता है।

The light that emanates from the nails of the feet of Bhagwati Sita ji is called Parambrahman.p

सद्योजातः प्रवृत्तेस्त्वमीशिषे क्षेत्ररक्षकः ।
वामदेवः प्रतिष्ठाया वासनातनुमास्थितः ।।
विद्याया अपि अघोरस्त्व तेजसां निधिरक्षयः ।
प्राणः तत्पुरुषः शान्तेस्तत्त्वाणां यंत्रवाहकः ।।
ईशानः शान्त्यतीताय व्यापको व्योमविग्रहः ।

स्कन्द पुराण रामगीता

शंकर भगवान श्री राम से कहते हैं:-

हे श्रीराम! आप क्षेत्र के रक्षक होकर प्रवृत्ति के स्वामी "**सद्योजात**" हैं। आप वासना रूपी शरीर मे स्थित होकर प्रतिष्ठा के स्वामी "**वामदेवः**" हैं। आप तेज के अक्षय निधि "**अघोर**" हैं विद्या के भी स्वामी और तत्वो के यंत्र वाहक होकर शान्त के प्रणव स्वरूप "**तत्पुरुषः**" हैं। आप चिदाकाश व्यापक होकर शान्त्यतीता "**ईशानः**" हैं।

एवं राधा सीता एव तद्रूपी रामचन्द्र इत्यभेद एव मूलराधाकृष्णयोः श्री सीतारामरूपत्वात्।

पुराण संहिता

Thus, Radha is Sita and Ramachandra is in form of Krishna, since the original form of Radha and Krishna are Sri Sita and Rama.

इस प्रकार, राधा सीता हैं और रामचन्द्र कृष्ण का रूप हैं, क्योंकि राधा और कृष्ण का मूल रूप श्री सीता और राम हैं।

Shri Ramchandra as supreme personality of godhead in shakta sect of sanatan dharma

सीता तारा पद्मा।

Sita shasranaam stotram of bhushundi ramayan says

Maa sita is Devi Tara.

रक्ताशोकलतामंडपमध्ये स्मरमंत्र महाविधे श्रीमंत्र निधे महामंत्र विधे महा श्रीयंत्र नायिके महाचक्र नायिके मातंग कुल पुजनीय चिन्तामणि चरणनख चन्द्रिके।

Aadi Ramayan says maa Sita being goddess worshipped by shri mantras and shri tantras

(extremely auspicious tantra for worshipping supreme goddess of shakta sect of sanatan dharma)

रामं मुर्तिश्चतारिणी

Mundamala tantra that shri Ram is mata Tarini (synonym of supreme goddess in shakta sect)

कदाचिदाद्या ललिता पुंरूपा रामकृष्णविग्रहा ।

Shaktisangam tantra

Shri Ram being male form of Lalita sundari

अण्डपरिपालक**महाविष्णोः**
स्थितिप्रलयावादिविराट्पुरुषस्याहोरात्रिसंज्ञकौ ते अहोरात्रे एकं दिनं भवति ।एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते । स्थित्यन्ते
आदिविराट्पुरुषः स्वांशमायोपाधिकनारायणमभ्येति ।

तस्य विराट्पुरुषस्य यावत्स्थितिकालस्तावत्प्रलयो भवति । प्रलये

सर्वशून्यं भवति विराट्स्थितिप्रलयौ
मूलाविद्याण्डपरिपालक-

स्य **आदिनारायण**स्याहोरात्रिसंज्ञकौ ते अहोरात्रे एकं दिनं भवति ।

एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन

शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते स्थित्यन्ते
त्रिपाद्विभूतिनारायण

स्येच्छावशान्निमेषो जायते तस्मान्मूलाविद्याण्डस्य

सावरणस्य विलयो भवति ततः सविलासमूलविद्या

सर्वकार्योपाधिसमन्विता सदसद्विलक्षणानिर्वाच्या

लक्षणशून्याविर्भावतिरोभावात्मिकानाद्यखिलकारण-

कारणानन्तमहामायाविशेषणविशेषिता

परमसूक्ष्ममूलकारणमव्यक्तं विशति ।

Tripad vibhuti maha narayan upanishad

Dissolution of Mahā-viṣṇu, the Ādi-virāṭ-puruṣa

The durations of existence and dissolution, (the two together) of Brahman, (the creator), should be understood as constituting the day and night of Mahā-viṣṇu, the protector of the cosmos, incarnate as an incarnation of a part of Ādi-nārāyaṇa. The two, day and night together, constitute a day. In this manner, by computing the different periods, such as day, fortnight, month, year and the like, a period of one

hundred crores of years, in accordance with the computation relating to him, (Mahā-viṣṇu), is said to be the duration of his existence. At the end of such duration, he approaches the Mahā-virāṭ-puruṣa, of whom he is a part. Thereafter, the macrocosm of Brahman, along with the veil of ignorance covering it, attains dissolution. When the veil of the macrocosm of Brahman perishes, what is revealed is verily the form of Viṣṇu. Then takes place his dissolution also, (for a duration, as along as for his existence). With (his) dissolution, all becomes void. (5)

Dissolution of the Ādi-virāṭ-puruṣa in Ādi-nārāyaṇa

The durations of existence and dissolution, (the two together) of Mahā-viṣṇu, the protector of the macrocosm, should be understood as constituting, the day and night of the Ādi-virāṭ-puruṣa. The two, day and night together, constitute a day. In this manner, by computing the different periods, such as day, fortnight, month, year and the like, a period of one hundred crores of years, in accordance with the computation relating to him, (the Ādi-virāṭ-puruṣa), is said to be the duration of his existence. At the end of such period, the Ādi-virāṭ-puruṣa approaches Ādi-nārāyaṇa, of whom he is a part and who is subject to the Upādhi of Māyā. For a period as long in duration as that of his existence, for such a period, the dissolution of the Ādi-virāṭ-puruṣa takes place. With (his) dissolution, all becomes void. (6)

Maha Vishnu à aadi Virat purusha à aadi narayan à tripad Narayan aka Shri Ram

महा विष्णु à आदि विराट पुरुष à आदि नारायण à त्रिपाद विभुति नारायण अर्थात श्री राम

1)

चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिवा भवति ।तावता कालेन पुनस्तस्य रात्रिर्भवति ।द्वे अहोरात्रे एकं दिनं भवति । तस्मिन्नेकस्मिन्दिने आसत्यलोकान्तमुदयस्थितिलया जायन्ते ।पञ्चदशदिनानि पक्षो भवति ।पक्षद्वयं मासो भवति । मासद्वयमृतुर्भवति ।ऋतुत्रयमयनं भवति ।अयनद्वयं वत्सरो भवति ।वत्सरशतं ब्रह्ममानेन ब्रह्मणः परमायुः प्रमाणम् ।तावत्कालस्तस्य स्थितिरुच्यते । स्थित्यन्तेऽण्डविराट्पुरुषः स्वांशं हिरण्यगर्भमभ्येति । हिरण्यगर्भस्य कारणं परमात्मानमण्डपरिपालकनारायणमभ्येति ।पुनर्वत्सरशतं तस्य प्रलयो भवति ।तदा जीवाः सर्वे प्रकृतौ प्रलीयन्ते ।प्रलयं सर्वशून्यं भवति ।तस्य ब्रह्मणः स्थितिप्रलयावादिनारायणस्यांशेनावतीर्ण-स्याण्डपरिपालकस्य महाविष्णोरहोरात्रिसंज्ञकौ ।

One thousand quartets of yuga is the duration of brahma's daytime. Again same duration is his nighttime. The two day and night constitute a single day for brahma. In the course of one such day, the rise, development and dissolution of all the worlds upto satya loka takes place. Fifteen such days are fortnight. Two such fortnight constitute a month. Two months form a Ritu. Three Ritu constitute a ayana(6 month). Two ayanas form a year. One hundred of year according to this computation is max limited age of brahma. At the expiry of his tenure, the Virat purusha ie maha Vishnu approaches hiranyagarva that is part of his own. Hiranyagarva approaches his originator narayana, the paramatma and protector of universe. For the next hundred years is the dissolution of that brahma. All the jivas attain dissolution. All becomes void.

2)

तस्य ब्रह्मणः स्थितिप्रलयावादिनारायणस्यांशेनावतीर्ण-स्याण्डपरिपालकस्य महाविष्णोरहोरात्रिसंज्ञकौ ।ते अहोरात्रे एकं दिनं भवति ।एवं दिनपक्षमास- संवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते । स्थित्यन्ते स्वांशं महाविराट्पुरुषमभ्येति ।ततः सावरणं

ब्रह्माण्डं विनाशमेति ।ब्रह्माण्डावरणं विनश्यति तद्धि विष्णोः स्वरूपम् ।तस्य तावत्प्रलयो भवति ।प्रलये सर्वशून्यं भवति ।

The duration of existence and dissolution of brahma Is to be considered as day and night of Maha Vishnu, incarnate of incarnation of adi narayana. The two day and night constitute a single day. In this way computing different periods such as day, fortnight, month, year. Periods of one hundred crore Years, in accordance with computation rating to him is said to be duration of his existence. At the end of such duration, maha Vishnu approaches maha Virat purusha, of whom he is a part. Then the macrocosm of brahma ,along with veil of ignorance covering attains dissolution. When the veil of macrocosm of brahma perishes, what is revealed is verily the form of vishnu. Then takes place his dissolution

3)

अण्डपरिपालकमहाविष्णोः
स्थितिप्रलयावादिविराट्पुरुषस्याहोरात्रिसंज्ञकौ ते अहोरात्रे एकं दिनं भवति ।एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते । स्थित्यन्ते आदिविराट्पुरुषः

स्वांशमायोपाधिकनारायणमभ्येति ।तस्य विराट्पुरुषस्य यावत्स्थितिकालस्तावत्प्रलयो भवति ।प्रलये सर्वशून्यं भवति ।

The duration of existence and dissolution of maha Vishnu, the protector of macro cosm, should be understood as the day and night of the adi Virat purusha. The two day and night constitute a single day. In this manner by computing the different periods such as day, fortnight, month, year and like one hundred crore of years in accordance with the computation relating to him is said to duration of adi Virat purusha. At the end of such period, adi Virat purusha approaches adi-narayana of whom he is a part. For a period long in duration as that of his existence for such a period, the dissolution of adi Virat purusha takes place. With his dissolution, all becomes void

4)

अण्डपरिपालकमहाविष्णोः
स्थितिप्रलयावादिविराट्पुरुषस्याहोरात्रिसंज्ञकौ ते अहोरात्रे एकं दिनं भवति ।एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते ।

स्थित्यन्ते आदिविराट्पुरुषः
स्वांशमायोपाधिकनारायणमभ्येति ।तस्य विराट्पुरुषस्य
यावत्स्थितिकालस्तावत्प्रलयो भवति ।प्रलये सर्वशून्यं
भवति ।विराट्स्थितिप्रलयौ मूलाविद्याण्डपरिपालक-
स्यादिनारायणस्याहोरात्रिसंज्ञकौ ।ते अहोरात्रे एकं दिनं
भवति ।एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन
शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते ।स्थित्यन्ते
त्रिपाद्विभूतिनारायण स्येच्छावशान्निमेषो जायते ।

At the end of such a period, in accordance with the desire of tripadvibhuti maha narayan, there takes place the closing of eyelids of adi narayana

त्रिपाद् नारायणाख्यं तद् रामचन्द्रपदं भजे ।।

वराह उपनिषद

Salutations to feet of Shri Ramchandra who is known by tripadvibhuti narayan

जानकीनाथ साक्षाद् आदिनारायण प्रभुः ।

पराशर संहिता

श्रीराम स्वयं भगवान आदि नारायण हैं।

यस्यांशा एव सर्वे वयमिह भुवने ब्रह्माविष्णु ईश मुख्याः ।
सृष्टि स्थिति अन्त लीला विचरण चतुरा वर्तयन्तीह चक्रम। ।

Adi Narayana says, “O Rama! From a portion of yours, I Incarnate myself as Brahmā, Viṣṇu and śankara in Different universes and Perform the process of Creation, Maintainance and Destruction and reside there.

Aadi Ramayan 1.91.1 b

सदाशिव उवाच

मम इष्टदेवो श्रीरामो विभुतिद्वय नायकः ।
सर्वेश्वरेश्वरस्साक्षात् परात्परम् प्रभुः ।।

(कौण्डिन्य संहिता)

सदाशिव कहते हैं:- मेरे परम आराध्य इष्टदेव श्री राम हैं जो दो विभुति (एक पाद विभुति अर्थात अनन्त ब्रह्माण्ड तथा त्रिपाद विभुति अर्थात अनन्त वैकुंठ) के भगवान है। वे सर्वेश्वर के ईश्वर तथा परात्पर भगवान हैं।

Sadashiv says:- My most adorable Ishtadev is Shri Ram who alone is the Lord of two Vibhuti (one foot Vibhuti i.e. infinite universe and three foot Vibhuti i.e. infinite Vaikuntha). He is the God of all and the supreme God.

स एव सच्चिदानन्दो विभूतिद्वयनायकः ।
वात्सल्याद्यद्भुतानन्त कल्याण गुणवारिधिः ॥१८॥

Narad pancharatra antargat vashist Samhita

Shri Ram is alone god of two vibhuti (ek pada vibhuti ie infinite universes and tripad vibhuti ie infinite vaikunthas) and has infinite divine attributes.

Śrīmad Valmiki Ramayana is Veda itself as said in Vālmiki Rāmayan;

“वेदोपबृंहणार्थाय” तावग्राहयत प्रभुः ॥

In Skandh Puran also;

‘रामायणाद काव्यं सर्व “वेदार्थ सम्मतम्”॥

(Skāndh Puranā uttarkhand)

In Mantra Ramayana aslo;

“वेदार्थानभिज्ञे सति न रामायणमपराद्धघति”

As said;

वेदवेद्ये परेपुंसि जाते दशरथात्मजे ।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद् रामायणात्मना ।।
तस्माद् रामायणं देवि "वेद एव न संशयः ।।

(Śrīmad Valmiki Ramayan and Agastya Samhita)

The one who is the son of Dasarātha is the Vedvedyā i.e. the supreme personality known from the Vedās, on his appearance the Vedas themselves incarnated in the form of Śrī Rāmayana from the mouth of Prāchetas Vālmiki Muni. Lord Shiva himself says, O Goddess! There is no doubt that Śrī Rāmayana is the Veda itself.

तदेव त्रिपाद्विभूति वैकुण्ठस्थानम्, तदेव परमसाकेत महाकैवल्यम्, तदेवाबाधित परमतच्च विलास विशेषमण्डलम् ।

TripadVibhuti Mahanarayanopanishad uttrakand 2, Adhyaya 7, Mantra 7

The same Tripad Vibhuti is Vaikunth place, the same supreme abode is Saket, the same is Mahakaivalyamukti, the same trikalaabhit Param,

रकारोऽनलबीजं स्यात् ये सर्वं वाडवादयः ।
कृत्वा मनोबलं सर्वं भस्मकर्म शुभाशुभम् ।।
अकारो भानुबीजं स्यात् वेदशास्त्रप्रकाशकम्।
नाशत्येव सद्दीप्त्याऽविद्या हृदये स्थिता ।।
मकारश्चन्द्रबीजं च पीयूषपरिपूर्णकम् ।
त्रितापं हरते नित्यं शीतलत्वं करोति च ।।
सर्वेषामेव मन्त्राणां, राममन्त्रः परात्परः ।
रामनाम्नः समुत्पन्नः , प्रणवो मोक्षदायकः ।।
शतकोटिमहामंत्राः चित्तविभ्रमकारकाः ।
तेषां मध्ये एकं रत्नं, रामेति अक्षरद्वयम् ।।

(इति महारामायण वचन)

ओङ्कारार्थतया भातं तुर्योङ्कारागभास्वरम् ।
तुर्यतुर्यंत्रिपाद्रामं स्वमात्रं कलयेऽन्वहम् ।।

Atharvaveda Atharvshikhopanishad

सर्वापह्नवसंसिद्धब्रह्ममात्रतयोज्ज्वलम् ।
त्रैपदं श्रीरामतत्त्वं स्वमात्रमिति भावये ।।

Atharvaveda Annapurnopanishad

न भेदो नामरूपाणां नामात्परतरं नहि।
तस्मान्निन्तरं देवि नामसंस्मरणं चरेत् ।।

बृहद् ब्रह्मा संहिता

O Goddess, even if there is no difference in name and form, name is paramount in the state of sadhana. Therefore, one should chant the Name constantly.

भानुकोटि प्रतीकाश चन्द्रकोटि प्रमोदकम् ।
इन्द्रकोटि सदा मोद वसुकोटि वसप्रवम् ।।

विष्णु कोटि प्रतीपाल ब्रह्मकोटि निसर्जनम् ।
रुद्र कोटि प्रमद वै मातु कोटि विनाशनम् ।।
भैरव कोटि सहार मृत्युकोटि विभक्षणम् ।
यम कोटि राघर्ष कालकोटि प्रधावकम् ।।
गधर्व कोटि संगीत गण कोटि गणेश्वरम् ।
काम कोटिकला नाथ दुर्गाकोटि विमोहनम्।।
सर्वसौभाग्यनिलय सर्वानन्वेकदायकम् ।
कौसल्यानन्दन राम वदेऽह भवखण्डनम् ।

सदाशिव संहिता

मत्स्यकूर्मो किरिर्नैको नारसिंहोऽप्यनेकधा ।
वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवः हरिः केशव वामनौ ।
यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च ।
देवकीनन्दनः कृष्णो वसुदेवो बलोऽपि च।।
पृश्निगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोऽपि च ।
वासुदेवो परोऽनन्तः सङ्कर्षण इरापतिः ।
प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धश्च व्यूहाः सर्वेऽपि सर्वदा ।
रामं सदोपतिष्ठन्ते रामादेशे व्यवस्थिताः ।
एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामनामा महेश्वरः ।
तेषामैश्वर्य दातृत्वाद्रामोऽपीशः निरीश्वरः ।
इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिः साक्षी गतिः प्रभुः ।
विष्णुः स्वयं स विष्णूनां पतिर्वेदान्तकृद्विभुः ।
ब्रह्मा स ब्रह्मणां कर्ता प्रजापतिपतिर्गतिः ।
रुद्राणां स पतिः रुद्रो रुद्रकोटि नियामकः ।

चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च।
अवतारसहस्त्राणि शक्तिकोटिशतानि च।।
ब्रह्म कोटिसहस्त्राणि दुर्गाकोटिशतानि च।
महाभैरवकालादि कोट्यर्बुदशतानि च ।
गंधर्वाणां सहस्त्राणि देवकोटिशतानि च ।
सभां यस्य निषेवन्ते स श्रीराम इतीरित इति ।

Shīv Samhitā 5th Patal, 2nd chapter, shloka 24 to 33

सा गतिः सा परा काष्ठा भक्तानां स्निग्धचेतसाम्।
यस्य स्वधाम एव वृहदित्यद्धा श्रृतिरवोचत।।
आदि रामायण

That is the path, that is the pinnacle of the devotees of affectionate minds, whose own abode is the greatest (साकेत लोक)said Sruti.

शुक उवाच:-
कल्पादौ भगवान रामः स्वेऽच्छामात्रेणचोदितः ।

त्रैलोक्यं कृतवांचागादाविर्भाव प्रदर्शयन्।।
अमोघमुप्तबान्बीजमंशुं सप्तावर्णवेषु च।
हिरण्यगर्भसंकाशः सुर्यकोटि समप्रभः।।
ततश्चराचरस्यादौ तत्व सृष्टि विनिर्ममे।
तेषु चैतन्यमाधाय ब्रह्माण्डं संजघाट सः।।
उच्चावचानि भुतानि रचयामास विश्वकृत।
महीं रचितवान्देवः सप्तसागर संवृताम्।।
पर्वतान् विविधान्नम्यान्देवगन्धर्व भोगवान्।
संरासि रम्यरुपाणि राजहंसाश्रयाणि च।।
उत्फुल्लकमलामोदवारीणि रुचिराणि च।
मेरु रचितवांस्तत्र स्थानानि त्रिदिवौकसाम्।।
एवं कृत्वा जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्।
देवानामसुराणाम् च मनुष्याणां सौख्यदम्।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत श्रीशुकसंहिता

शुकदेव जी कहते हैं:-
कल्प के आदि में श्रीराम ने अपनी इच्छामात्र की प्रेरणा से तीनों लोक अपने शरीर से उत्पन्न किए। वहां अमोघ वैष्णवी

वीर्य तेज संयुक्त इच्छा से जल प्रकट कर उसमें छोड़ दिया (एको नारायण आसीत् ...यहां उपनिषद, पैंगी ब्राह्मण) वह वैष्णवी वीर्य इच्छा करके कोटि सुर्य से प्रकाश वाला स्वर्ण से कान्ति वाला एक गोलाकार अण्ड हो गया, और उस अण्ड से , सर्वलोको को रचनेवाले हिरण्यगर्भ भगवान ब्रह्मा रूप से प्रकट हुए (नारायणात् ब्रह्मा जायते) उसी से भगवान शंकर प्रकट हुए (नारायणात् रुद्रो जायते) उसी से सब चराचर पैदा हुए, उसी चैतन्य स्थापन कर कोटि ब्रह्माण्ड रचना हुआ तथा ऊंच नीच योनि को ब्रह्मा रचते गए और सात सागर से युक्त पृथ्वी को रचा तथा देव गंधर्व के भोगवान नाना प्रकार के सुंदर पर्वत रचे। नाना प्रकार के कमल रचे। लक्षयोजन वाला मेरु पर्वत रचा।

वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः ।
चतुर्मुर्ति स्वयं विष्णुरादिदेवस्त्रयीस्तुतः ।।
महापुरुष इति उक्तः साक्षान् नारायणो हरिः
वैकुंठनाथो भगवान एषः एव सनातनः ।।
ब्रह्मानन्दमयी तस्य रमा सर्वांगसंगिनी।
विशुद्धं सत्त्वम् अतुलं विग्रहोऽस्य प्रकीर्तितः ।।
रामस्य पुर्ण एव अंशः स्वयं भगवतो ह्ययम्।
चतुर्विधम् असौ मोक्षं सेवकेभ्यः प्रयच्छति।।
ज्ञानसंमिश्रया भक्त्या तस्य सेवा प्रकीर्तिता।

सहस्त्रशीर्षनयनः पुरुषोऽस्यांश उच्यते।
तस्माद् रामचन्द्रो देवः सर्वकारणकारणम्।।

आदि रामायण

Vasudeva, Sankarshana, Pradyumna and Aniruddha. Vishnu himself in four forms/vyuhas is the original god and is worshiped by the three Vedas.The Supreme Personality of Godhead, Nārāyaṇa, is directly described as the Supreme Personality of Godhead

This is the eternal Lord of Vaikuntha. Rāma(रमा), full of Brahman bliss, was companion of laxmi in all his limbs.

Its pure Sattva and incomparable conflict have been described. This is a whole amsha of Rama and the Lord Himself.

He grants four kinds of liberation to His servants. His service with devotion mixed with knowledge is described.

The man with the thousand eyes , thousand heads is said to be a part of shri ram.**Therefore Ramachandra is the supreme god and the cause of all causes.**

एतस्य ऋषिवर्यस्य सुनोरत्रेर्महात्मनः ।
मुखाम्बजाद्विगलितं श्रृण्मो रामकथा अमृतम्। ।
तदेव परम् वेद्यं सारात्सारं जगत्त्रये।
सर्वोपनिषदां वेद्यं सर्वानुभाव गोचरम्। ।

Aadi Ramayan

Ram Katha amritam is the supreme knowable essence of the three worlds. It is knowable by all the Upanishads and visible to all powers. Shri Ram is knowable by vedas and is essence of essence in all three worlds. He is known by all upanishads.

सर्वधामशिरोरत्नं प्रमोदवन नामकम्।
राजते रामवैकुण्ठं सहजायाः परम् पदम्। ।

Aadi Ramayan

The jewel of the head of all the abodes is called Pramodavan. The heaven of Rama shines, the supreme abode of Sahaja.

अयोध्यां परितो देशे देवश्रुतुर्विंशति योजनः ।
प्रमोदवनमुद्दिष्टं श्रीरामस्य परं पदं। ।

Aadi Ramayan

Pramodvan is twenty-four yojanas in the country around Ayodhya.The forest of delight is the supreme abode of Sri Rama

यद् ब्रह्मेति श्रुतं वेदै सर्वदा रस स्फुटं।
निर्गुणं च निराकारं तद् धाम परमं हरे। ।

आदि रामायण

The one that is heard in vedas by nirguna and nirakar and is always filled with rasa, that dham is none other than saket loka.

In Ramayan Shiromani Tika, Shiv Sahay ji says,

अहमात्मानं दशरथात्मजं मानुषं मन्ये भगवान् भवान् तु यः यत्स्वरूपोऽहं यस्य स्वामी अहं यतो लोकादागतोहं तत्सर्वं ब्रवीतु दशरथात्मजं मन्ये इत्यनेन तद्वदेव धर्मप्रवर्तना ममाप्युचितेति सूचितम् तेन राक्षसादिष्वपि स्वस्वदाराणां संरक्षणार्थमेवं मया क्रियते इति सूचितम् ।।

Shri Ram here says this is my mool swaroop I come as son of Dashrath for Dharma pravartan to anhilate the evil and protect my loved ones, my devotees.

यन् नाम स्मरतो नित्यं ह्यज्ञान बन्धनम्।
छिद्यते च आश्रमेणैव तमहं राघवं भजे। ।

आदि पुराण

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं:- जिनके नाम का नित्य स्मरण मात्र से बिना श्रम ही महान अज्ञान का बन्धन छिन्न छिन्न हो जाता है उन भगवान श्री राम का मैं भजन करता हूं

APURV

@vishnuprabhanc
Vishnu
@vishnuprabhanc
@vishnuprabhanc
Vishnu Arts
@vishnuprabhanc

राम अभिन्ना पराशक्तिः शत्रुनाशम् करोतु मे।

तारा रहस्यं

श्रीराम जो जो पराशक्ति तारा से अभिन्न हैं शत्रुओं का नाश करते हैं।

स हि देवैरुदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभिः ।
अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णुस्सनातनः ।।

(श्रीवाल्मीकि रामायण २.१.७)

Sa hi dēvair-udīrṇasya rāvaṇasya vadhārthibhiḥ l
Arthitō mānuṣē lōkē jajñē viṣṇuḥ sanātanaḥ ll

(Śrī Vālmīki Rāmāyaṇa 2.1.7)

.

शद्बार्थ और अन्वय

सः — वह (श्री राम), हि — वस्तुतः , स्वयं, साक्षात्, विष्णुस्सनातनः — अनादि सनातन विष्णु हीं थे जो कि; उदीर्णस्य रावणस्य — उद्भट रावण के; वधार्थिभिः — वध की इच्छ रखने वाले; देवैः — देवताओं द्वारा; अर्थितः — प्रार्थित होने पर, मानुषे लोके — मनुष्य लोक में; जज्ञे — अवतीर्ण (प्रकट) हुए थे।

.

Synonyms

Saḥ — He (Śrī Rām), hi — was indeed, himself; Viṣṇus-sanātanaḥ — Sanātana-Visnu : the eternal-Viṣṇu; udīrṇasya rāvaṇasya — of arrogant Ravaṇa's, vadhārthibhiḥ — by those desirous of slaying; dēvaiḥ — by devatas, arthitaḥ — entreated, mānuṣē lōkē — in the mortal world, jajñē — had appeared.

भावार्थ —

"वह श्रीराम वस्तुतः (स्वयं, साक्षात्) अनादि सनातन-विष्णु [अर्थात विष्णु के भी विष्णु साकेताधीश सनातन विष्णु] हीं थे

जो कि उद्भट (प्रचण्ड) रावण के वध की इच्छ रखने वाले देवताओं द्वारा प्रार्थित होने पर मनुष्य लोक में अवतीर्ण (प्रकट) हुए थे। ”

.

Translation —

“He Śrī Rāma was indeed (himself) the Sanātana-Visnu [the Lord of Sāket] who had appeared in the mortal world after entreated by the devatas (gods) desirous of slaying arrogant Rāvaṇa.”

पुजा पुरुष सुक्तैश्च राघवस्य प्रचक्षते।
श्रीसुक्तैः जानकी पुजा कार्य्या सा साधकोत्तमैः।।

बृहद् विष्णु पुराण १९.२२०

महान साधकों को श्रीराम का पुजा पुरुष सुक्त के द्वारा करने चाहिए और माता जानकी का पुजा श्रीसुक्त के द्वारा करना चाहिए।

Great sadhakas should worship shri ram with purush sukta and worship janki with shri sukta

गोलोक संज्ञके नित्य साकेतभवनोत्तमे।
भ्रातृभिरनु जैर्भाति देवदेव सनातनः ।।

Maha Sundari tantra

गोलोक कहे जाने वाले धाम मे सब भवनों में सबसे उत्तम साकेत भवन जो कि गोलोक के पुरे मध्य में स्थित वहां भगवानों के भी सनातन भगवान श्रीराम अपने भाईयों के सहित निवास करते हैं।

सनातन धर्म की परिभाषा....

श्रीलोमश उवाच:-

सनातनश्च परमात्मा रामः सीतापतिः प्रभुः ।
सनातनानां जीवानां भ्रमतां भवकानने ।

सनातनानां दुःखानां सनातननिवृत्तये ।
सनातनेषु वेदेषु यानुपायान् सनातनान् ।

जगाद तत्र यत्तेषां सङ्कलनं सनातनम् ।
तस्य सङ्कलनस्याऽथ या सनातनसंहिता ।

स सनातनधर्मोऽयं निगमागमसम्मतः ।
निःश्रेयसाभ्युदयकृत् तस्य नाशो न कर्हिचित् ।

- (श्रीलोमशसंहिता अध्याय १/१-४)

भावार्थ :- श्रीसीतापति सर्वसमर्थ प्रभु परमात्मा श्रीराम 'सनातन' हैं, (उसी प्रकार उनके अंशस्वरूप होने से) जीव भी 'सनातन' हैं जो संसार गहनवन में भटक रहे हैं ।उन 'सनातन' जीवों के दुःखों की 'सनातन' निवृत्ति के लिए जो 'सनातन' उपाय भगवान् ने उच्चारित किए, अर्थात् कहे, उनकी 'सनातन' संकलनरूपी जो सनातनीसंहिता अर्थात् वेद हैं, ऐसे निगमागम से सम्मत, परिपोषित यह 'सनातन'

धर्म है! यह सभी के निः श्रेयस और अभ्युदय की प्राप्ति कराने वाला है, जिसका किसी भी प्रकार से और कभी भी नाश संभव नहीं है!

मुलकासुर तां सीता चंडां मां विद्धि चण्डिकाम्।
यन्निमित्तात्कुलं नष्टं तव लंका प्रधर्षिता।।

आनंद रामायण ७.१.६.६ख &७क

छाया सीता कहती हैं:- हे मुलकासुर! इस समय उग्र रूप धारण किए मैं चण्डिका सीता हुं जिसके कारण तुम्हारा सारा कुल नष्ट हो गया था और लंका ध्वस्त हो गई थी।

यां सीतेत्यभिजानासि येयं तिष्ठति ते गृहे।
कालरात्रि इति तां विद्धि सर्वलंकविनाशिनीम्।।

Valmiki Ramayan 5.52.34

Hanuman ji says:- O Ravan! What do you think that maa Sita is residing in your house, you should understand that she is kalratri herself who can destroy all of your lanka kingdom.

हनुमान जी कहते हैं- हे लंकेश! तुम्हारे यहां जो मां सीता निवास कर रहीं हैं उनको तुम कालरात्रि समझो जो सम्पुर्ण लंका का विनाश कर देंगी।

सीतावमानीता येन तेन अहम् अवमानिता।
त्यक्तुकामा त्वया चोक्ता त्यजाम्येना पुरींकपे।।

बृहद्धर्म पुराण

देवी चण्डी कहती हैं:- रावण में भगवती सीता जी का अपमान किया है मतलब मेरा अपमान किया है। इसलिए हे हनुमान! मैं इस लंका पुरी को त्याग दुंगी।

अह्लादिनी पराशक्ति स्तुयाः सात्वत संमताम्।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत अगस्त्य संहिता

Ahladini shakti of shri Ram ie Janki is supreme shakti and praiseworthy and is accepted by the Satvata.

न बिना सहजां रामो भक्तायाशु प्रसीदति।
तस्मात् श्रीरामतुष्ट्यर्थम् आराध्या सहजेश्वरी।।

Aadi Ramayan

राम अपने भक्त पर सीता जी के कृपा के बिना तुरंत प्रसन्न नहीं होते। इसलिए, श्री राम की संतुष्टि के लिए सहजेश्वरी की पूजा की जानी चाहिए।

रामभक्तेर्विशुद्धायाः श्रीभक्तेश्च विशेषतः।
श्रीभक्ती रामभक्तिश्च भक्तिद्वयम् उदाहृतम्।।
सहजानन्दिनीरक्तिः श्रीभक्ति शद्विता।
श्रीमद् रामचन्द्रे भक्तिः सा वै रामविशेषिता।।

Aadi Ramayan

Especially of pure devotion to Rama and Sri.

Sribhakti and Ramabhakti are two kinds of devotion mentioned.The inherently joyful blood is called Sribhakti.

That devotion to the blessed Ramachandra is the distinctive feature of Ramabhakti

रामात् नास्ति परोदेवो रामात् नास्ति परिवर्तम।
न हि रामात् परोयोगो न हि रामात् परोमखः । ।

Padmapuran

भगवान श्रीरामचन्द्र से श्रेष्ठ कोई भगवान नहीं, भगवान श्रीराम के लिए की जाने वाली तपस्या से बढ़कर किसी भी तपस्या का फल नहीं है, भगवान श्रीराम से परे कोई योग नहीं है और कोई भी यज्ञ भगवान श्रीराम से बढ़कर नहीं है।

स जायमानो भवति विसृष्टो यथाविधानं सकलं ससर्ज। ।

अद्भुत रामायण

हे श्री राम! आप ही से प्रादुर्भूत विराट् पुरुष नारायण ने समस्त संसार तथा समस्त संसार को उत्पन्न किया।

वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः।
चतुर्मुर्ति स्वयं विष्णुरादिदेवस्त्रयीस्तुतः।।
महापुरुष इति उक्तः साक्षान् नारायणो हरिः
वैकुंठनाथो भगवान एषः एव सनातनः।।
ब्रह्मानन्दमयी तस्य रमा सर्वांगसंगिनी।
विशुद्धं सत्त्वम् अतुलं विग्रहोऽस्य प्रकीर्तितः।।
रामस्य पुर्ण एव अंशः स्वयं भगवतो ह्ययम्।
चतुर्विधम् असौ मोक्षं सेवकेभ्यः प्रयच्छति।।
ज्ञानसंमिश्रया भक्त्या तस्य सेवा प्रकीर्तिता।
सहस्त्रशीर्षनयनः पुरुषोऽस्यांश उच्यते।
तस्माद् रामचन्द्रो देवः सर्वकारणकारणम्।।

आदि रामायण

वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध। विष्णु स्वयं चार रूपों में आदि देव हैं और तीनों वेदों द्वारा पूजित हैं। भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व, नारायण को सीधे भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व के रूप में वर्णित किया गया है।ये वैकुण्ठ

के शाश्वत स्वामी हैं। ब्रह्मानन्द से परिपूर्ण रमा (लक्ष्मी)उनके सभी अंगों में सखा थे। इसके शुद्ध सत्त्व और अतुलनीय द्वंद्व का वर्णन किया गया है। यह स्वयं भगवान श्री राम का संपूर्ण अंश है। वह अपने सेवकों को चार प्रकार की मुक्ति (सायुज्य, सालोक्य, साष्टर्य तथा सारूप्य मोक्ष) देते हैं। ज्ञानमिश्रित भक्तियुक्त उनकी सेवा का वर्णन किया गया है।

कहा जाता है कि एक हजार सिरों वाली आंखों वाला व्यक्ति भी इसी का हिस्सा है। इसलिए रामचन्द्र भगवान हैं और सभी कारणों के कारण हैं।

शिवसंहितायाम्-

परं ज्योतिः परं स्थानं पराकाश परात्परम् ।कौशल्यानन्दनं रामं केवलं भवखण्डनम् ॥16 ॥

कौशल्यानन्दन श्रीराम ही परम तेजस्वरूप, परम स्थान, पराकाश परमात्मस्वरूप हैं। केवल वहीं संसार से मुक्ति प्रदान करने वाले हैं ||16||

जानकीशः समस्तेशः परमात्मा स्वयं प्रभुः ।

तव अपि से नियन्तेति प्रार्थनीयस्त्वया विभुः । ।

आदि रामायण

Janakivallabh Shri Ram is the Lord of all, the Supreme Soul, the bhagwan Himself. You should pray to the almighty that he is your controller too.

THE ART
EVERYTHING THAT EXISTS.
THE ARTIST
@Bajrangbali_insta

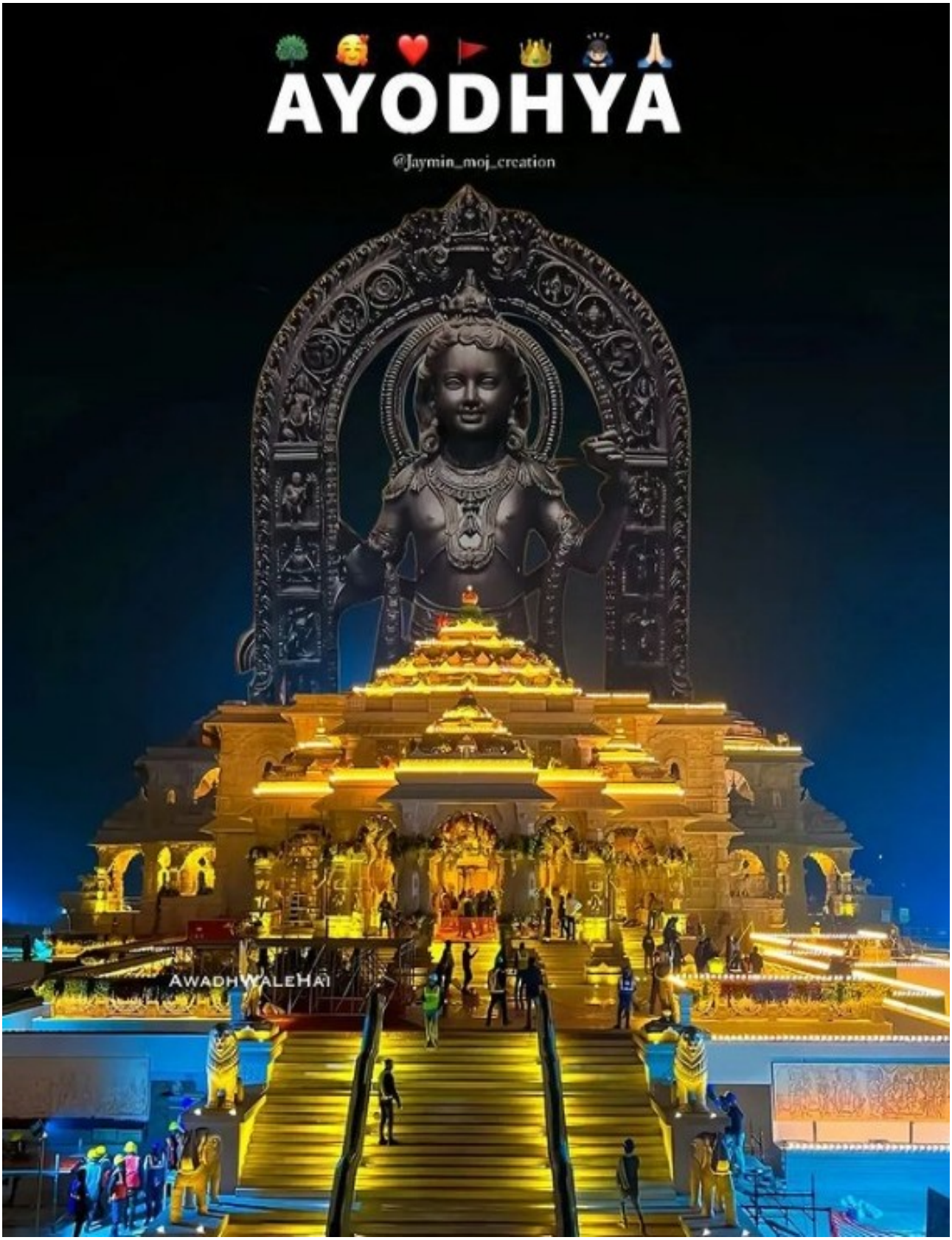
AYODHYA
@Jaymin_moj_creation
AwadhWaleHai

चरित्राणि च भुरीनि नित्यं संकीर्तयेन् नरः ।
जनानां च समक्षं वै शैवशास्त्रपरेषु अपि। ।
निर्भयः स्वेन भावेन गृणेन् मामेव मत् परः ।

आदि रामायण ४.२१.६५ & ३६a

श्रीराम कहते हैं:- मनुष्य को सदैव मेरे अनेक चरित्रों का पाठ करना चाहिए। और उन लोगों की उपस्थिति में जो शिव के शास्त्रों के प्रति समर्पित हैं। वह निर्भय होकर अपने भाव से मुझमें समर्पित होकर मेरी ही स्तुति करते हैं।

यावन्ति चरितान् यत्र रामस्य परमात्मनः ।
तानि सर्वानि बोध्यानि सहजायश्चिद् आकृते। ।

आदि रामायण

There are many charitra of Rama the Supreme Soul. All of them are understandable in the form of janki charit

बालः केशः इति प्रोक्तः कशद्वेन प्रजापतिः ।
बाले बाले ककारस्तु जायते तस्य नित्यदा। ।
इति बालकशद्वेन परंब्रह्म अभिधीयते।

बालकस्यास्य च अर्थोऽयं मया ज्ञातः सुनिश्चितम्।।

सत्योपाख्यान २३.२०-२१

The “bala” is called Kesha, the creator by the word “ka”. In every bala, the prajapati is always born of him. This is the Supreme Brahman by the word “balak”. And I know for sure what this means for the balak Shri Ramchandra.

“बाल” को केशा कहते हैं, “क” शद्ब से रचयिता। हर केश में हमेशा उनसे ही प्रजापति पैदा होते हैं। इसलिए बालक शद्ब से यही परम ब्रह्म है। और मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि बालक श्री रामचन्द्र के लिए इसका अर्थ है।

Sketches and Songs

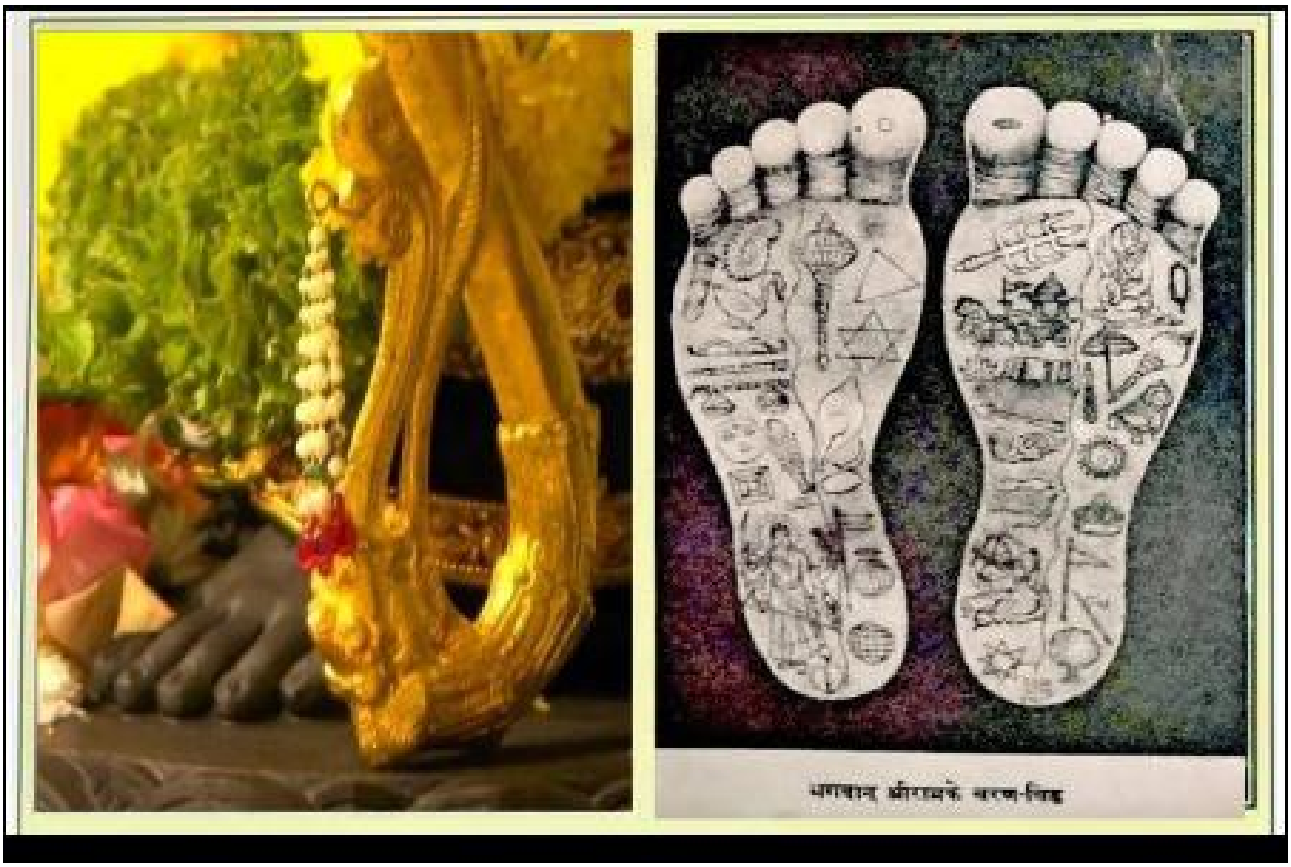

मानुषं जन्म संप्राप्य रामं न भजते हि यः ।
वञ्चितः कर्मणा पाप इति जानीहि बुद्धिमान्। ।

सत्योपाख्यान ३.२

महा ऋषि शौनक कहते हैं :-जो मनुष्य जन्म पाकर राम का भजन नहीं करता, हे बुद्धिमान सुत जी! यह जान ले कि वह पापी है जो अपने कर्मों से वंचित हो गया है।

रामं मुक्त्वा हि ये मर्त्या ह्यन्य देवमुपासते देह्यन्ते तेऽग्निना।।

स्कन्द पुराण

जो श्रीराम को छोड़कर किसी अन्य देवता का पुजा करते हैं वे मुढ अग्नि द्वारा जल जाते हैं।

राम देवम् परित्यज्य योन्यदेवमुपासते।
दिव्य वर्ष सहस्त्राणि कुम्भीपाके प्रपच्छते।।

लोमेश संहिता

शंकर भगवान कहते हैं:- जो श्रीराम को छोड़कर किसी अन्य देवता का पुजा करते हैं वे कुम्भीपाक नामक नरक में सहस्र दिव्य वर्षों (१ दिव्य वर्ष= १००० मानव वर्ष) तक सड़ते हैं।

जे न भजहिं अब प्रभु भ्रम त्यागी।
ज्ञान रंक नर मंद अभागी।।

रामचरितमानस

जो श्रीराम को छोड़कर किसी अन्य देवता का पुजा करता है, वो अज्ञानी, मढमती तथा अभागी होता है।

श्री रामे ये च विमुखा खलमति निरता ब्रह्ममन्यद् यदति।
ते मूढा नास्तिकास्ते शुभगुण। रहितास्सर्वबुध्यातिरिक्ता
पापिष्ठा धर्महीना गुरुजन विमुखा वेद शास्त्रे विरुद्धा।
तेहित्वा गागमभो रवि किरणि जल पातु मिच्छति त्रस्ता।।

(इति महारामायण वचन)

जो लोग श्री रामचन्द्रजी से विमुख है, जो #दुष्टमति वाले है, और जो उन्हे परब्रह्म से अतिरिक्त दूसरा (साधारण_देवता या अवतार मात्र) मानते हैं, वे महामूर्ख है, नास्तिक है, और सद्गुणो से रहित हैं तथा #सब प्रकार की बुद्धि से शून्य, महापापी, धर्महीन, सत्गुरुजनो से विमुख, वेद और शास्त्र के

विरोधी हैं वे लोग प्यासे होने पर गङ्गाजल को छोड दूषितजल पीने की इच्छा करते हैं ।

ये राम निन्दका दुष्टास्तानि मे यमकिंकराः ।

ताडयतिष्यन्ति लोहस्य मुद्गुरैः पाशबन्धनैः ।।

पद्मपुराण

जो श्रीराम का निन्दा करते हैं वे महादुष्ट हैं, उन्हें यमदूत कालपाशाओं से बांधकर लोहे के मुद्गुर के द्वारा मारते हैं। उन्हें कोई भी नहीं बचाता।

तस्माद् राम परित्यज्य येऽन्यान् अपि भजन्ति ते।

विहाय सरसः स्रोतः कुपं कुर्वन्ति बालिशाः ।।

आदि रामायण १.२०.४४

इसलिए, , जो लोग श्रीराम को त्याग देते हैं और दूसरों की पूजा करते हैं, वे महामूर्ख लोग नदियों की स्रोत को छोड़ कर कुआँ बनाते हैं।

ॐ श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

अंकुश अंबर कुलिश कमल जव ध्वजा धेनुपद।
शंखचक्र स्वस्तीक जम्बुफल कलस सुधाह्रद।।
अर्धचंद्र षटकोन मीन बिँदु ऊरधरेषा।
अष्टकोन त्रयकोन इंद्र धनु पुरुष बिशेषा।।
सीतापतिपद नित बसत एते मंगलदायका।
चरन चिन्ह रघुबीर के संतन सदा सहायका।।

श्रीभक्तमाल, पद संख्या ६

परात्पर ब्रह्म श्रीराम के चरणकमलों के दिव्य२४ चरणचिह्न हैं –

(१) अङ्कुश (बर्छी)
(२) अम्बर (आकाश)
(३) अम्बर- वस्त्र
(४) कुलिश (वज्र)
(५) कमल
(६) यव
(७) ध्वजा
(८) धेनुपद – गोपद

(९) शङ्ख

(१०) चक्र

(११) स्वस्तिक

(१२) जम्बूफल – जामुन

(१३) कलश

(१४) सुधाह्रद – अमृतसरोवर

(१५) अर्धचन्द्र

(१६) षट्कोण

(१७) मीन – मछली

(१८) बिन्दु

(१९) ऊर्ध्वरेखा

(२०) अष्टकोण

(२१) त्रिकोण

(२२) इन्द्र

(२३) धनुष एवं

(२४) विशेष जीवात्मा

ये चौबीस चिह्न सीतापति भगवान् श्रीराम के चरणों में निरन्तर विराजते रहते हैं। ये निरन्तर स्मरणमात्र से मङ्गलदायक बन जाते हैं और ये ही भगवान् श्रीराम के

चरणकमलों के चौबीस चिह्न संतों के लिए निरन्तर सहायक सिद्ध होते हैं।

तानि सर्वाणि रामस्य पादे तिष्ठन्ति वामके।
यानि चिन्हानि जानक्या दक्षिणेचरणे स्थिता।।
यानि चिन्हानि रामस्य चरणे दक्षिणे स्थिता।
तानि सर्वाणि जानक्या पादे तिष्ठन्ति वामके।।

महारामायण

भगवान् श्री राम के चरणकमलों में २४ दिव्य चिन्ह हैं, वही २४ चिन्ह श्री सीता जी के चरणकमलों में दिव्य शोभा पा रहे हैं। जो चिन्ह श्री राम के बाएं चरण में हैं वही जानकी जी के दाएं चरण में हैं और जो प्रभु के दाएं चरण में हैं वे चिन्ह श्री किशोरी जी के बाएं चरणकमल में सुशोभित हैं।

श्रीराम के चरणकमलों के चिन्ह

चिन्हानि सर्वानि पादारविन्दे प्रदृश्यन्ति
निजसेवकेभ्यः ।२३ख
पदं च धन्वाः कुलिशं च बिन्दुं तथा ध्वज ह्यमृतकुण्डकं च।

वस्त्रांकुशं जम्बुफुलं च मत्स्यं धनुर्महेन्द्रस्य तथा त्रिकोणं।।२४

वज्रं च पद्मं च तथा यवं च षट्कोणकं चाप मनुष्यमेके।

शंखं च चक्रं च तथा अष्टकोणं मुर्द्धे च रेखा घट स्वस्तिकम् च।।२५

सत्योपाख्यान अध्याय १६

श्रीराम के चरणकमलों के चिन्ह:-

बज्र, बिन्दु, अमृतकुण्ड, वस्त्रांकुश, जम्बुफुल, मत्स्य, इन्द्रधनुष, त्रिकोण, पद्म, त्वं, षट्कोण, शंख, चक्र, अष्टकोण,मुर्द्धा पर रेखा, घट, स्वस्तिक तथा चन्द्र का चिह्न है।

श्रीसीताराम चरण चिह्न स्तोत्रम् (नारद पंचरात्र)

श्रीराम दक्षिण पदस्थ मथोर्ध्व रेखा, स्वस्त्यष्टकोण कमला हल मौशलं च।

शेषं शराम्बर सरोजरथं सवज्रं, ध्यायद्येवं सुरतरुं जनकामपुरम्। ।

भुयोंकुशध्वजं किरीटयुतं सचक्रं सिंहासनं च ललितं यमदंडचिह्नम्।

छत्रं सचामरणं जयमालमेतद् वेदाक्षिसंख्यमनिशं मनसा स्मरामि। ।

वामे परे स्थितंह सरयु सुतीर्थं गोपाद भुमि घटशोभितम् उत्पातकम्।

जम्भुफलाघं शशि शंख षडस्त्रयुक्तम् त्रैकोणकं च गद्या सहजीवमीडे। ।

बिदुं च शक्तयमृतकुण्ड वलित्रयं च, संपुर्णशशि वीणमहं भजामि।

वंशी शरासन युतेषुधिराजहंस सीतापतेः श्रु तिनुतश्च सचन्द्रिकश्च। ।

सीतांघ्रिपंकजमिदं हि विषर्ययेण वामेतरञ्च सुधियः परिभावन्तु।

चिन्हानि चाष्टजलधिप्रमितानित्यं ध्यायञ्जनो रघुपतेर्लभतेसुधाम्।

यः पंचकमिदम् मनुजः पठेद्ध्यात्वा हृदि प्रतिदिनम् रघुनन्दाघ्रीम।

हित्वा बहुनि दुरितानि पुरार्जितानि प्राप्नोति अभीष्ट धनधर्ममथापवर्गम्। ।

श्री राम के दक्षिण चरण चिन्ह में उर्ध्व रेखा स्वस्तिक, अष्टकोण, लक्ष्मी, हल, मुशल, शेष बाण, वस्त्र, कमल, रथ, वज्र त्वं तथा ध्याताजनकी मनोकामना पुर्ण करने वाली कल्पवृक्ष का ध्यान करें। पुनः अंकुश ध्वज किरीट, चक्र ललित, सिंहासन, यमदंड, उम्र, पुरुष, तथा जयमाला इन २४ चरनचिह्नों का मैं निरन्तर भजन करता हूं। बाएं का चरण में विराजमान सुन्दर सरयु तीर्थ गोपाल, पृथ्वी,कलश तथा सुशोभित पताका जामुन का फल, उर्ध्व चन्द्र, शंख, षटकोण, त्रिकोण तथा जीव के चिन्हों को मैं पुछता हुं। बिन्दु, शक्ति, अमृत कुण्ड, त्रिवली, मछली, पुर्णचन्द्रमा तथा वीणा के चिह्नो को मैं भजता हूं। वंशों धनुष राजहंस, तथा चन्द्रिका के चिन्ह वेद वन्दनीय श्री सीता पति के चरण में हैं। जो चिह्न श्री राम जी के दक्षिण चरण में है वही चिह्न श्री सीता जी के बाएं चरण में है तथा जो चिह्न श्री राम के बाए चरण में है वही चिह्न श्री सीता जी के दाहिने चरण में हैं। सद्बुद्धि भक्तजनों को ऐसा विचार कर श्री युगल सरकार के चरणों का ध्यान

करना चाहिए। अड़तालीस चिह्नो का ध्यान करने वाला मनुष्य श्रीराम नाम (नित्य अयोध्या) को जाता है। ये पांच श्लोकों का जो मनुष्य प्रतिदिन श्रीसीताराम के चरणों को हृदय से पाठ करता है वो बहुत जन्मान्तरों से पुनर्वासित पापों को नष्ट कर अपना अभीष्ट फल पुर्ण प्राप्त करता है।

राम एत्यक्षरयुग्मंहि सर्व मंत्राधिकं द्विज।

यद् उच्चारणमात्रेण पापीयाति परांगतिं। ।

स्कन्दपुराणम्

राम नाम समस्त मंत्रो से श्रेष्ठ है, जिसके उच्चारण मात्र के द्वारा पापी भी परम गति को प्राप्त कर लेता है।

@vishnuprabhanc
@vishnuprabhanc
Vishnu Arts
@vishnuprabhanc

मध्वो ब्रह्मा शिवो विष्णुर्निम्बार्कः सनकस्तथा ।
शेषो रामानुजो रामो रामानन्दो भविष्यतीति ।।

~भार्गव पुराण

वैखानसः सामवेदादौ श्रीराधावल्लभी तथा ।गोकुलेशो महेशानि तथा वृन्दावनी भवेत् ।।

पाञ्चरात्रः पञ्चमः स्यात् षष्ठः श्रीवीरवैष्णवः ।रामानन्दी हविष्याशी निम्बार्कश्च महेश्वरि ।।

ततो भागवतो देवि! दश भेदाः प्रकीर्त्तिताः शिखी मुण्डी जटी चैव द्वित्रिदण्डी क्रमेण च ।।

महेशानि! वीरशैवस्तथैव च। सप्त पाशुपताः प्रोक्ता दशधा वैष्णवा मताः ।।

एतेषां वासनं देवि! शृणु यत्नेन शाम्भवि ! वेवेष्टि सर्वं संव्याप्य यस्तिष्ठति स वैष्णवः ।।

(श्रीशक्तिसंगम तन्त्र प्रथम खण्ड, अष्टम पटल)

अर्थात्, हे शिवे! आदिमें वैखानस (सामवेदी वैखानस), श्रीराधावल्लभ, गोकुलेश, और इसी प्रकार वृन्दावनी होते हैं। हे महेश्वरि ! पाँचवा [वैष्णव] पाञ्चरात्र होता है। छठा

श्रीवीरवैष्णव होता है। शिवे! [ऐसे ही] रामानन्दी, हविष्याशी (हविष्य या खीर खाने वाला) और निम्बार्क। और इनके बाद भागवत् हे देवि! ये दस भेद कहे गये हैं, हे शिवे ! शिखी, मुण्डी, जटी, क्रम से द्विदण्डी, त्रिदण्डी और एकदण्डी और वीरशैव सात पाशुपत (शैव) कहे गये हैं [और] दस प्रकारके वैष्णव माने गये हैं। हे शाम्भव देवि! इनका ज्ञान यत्नसे सुनो। जो सब कुछ सम्यक् रूपसे व्याप्त करके फैलता है, वह वैष्णव है।

ततः काले च संप्राप्ते कलौ कोऽपि महानिधिः ।

हरिनाम प्रकाशाय गंगातीरे जनिष्यति ।।

(कुलार्णव तंत्रे)

अनन्तर कलियुग के प्रारम्भ(कलि के ४४०० वर्ष बीतने पर) में हरिनाम का प्रचार(राम नाम का प्रचार) करने के लिए गंगातट(प्रयाग में) पर कोई सम्पूर्ण सद्गुणों की निधि(भगवान श्री रामानंदाचार्य जी) जन्म ग्रहण करेंगे।

भविष्यंति कली घोरे जीवा हरिबहिर्मुखाः रामाऽज्ञया हनूमान् वै मध्वाचार्यः प्रभाकरः ।।

शंकरः शंकरः साक्षाद्व्यासो नारायणः स्वयम् शेषो रामानुजो रामो रामदत्तो भविष्यति ।।

(इति सदाशिव संहिता)

अर्थ: महाघोर कलियुग में सब जीव ईश्वरसे विमुख होजायेंगे तब श्रीरामजीके आज्ञासे निश्चयपूर्वक हनुमानजी मध्वाचार्यजीके अवतार होंगे, शंकरजी साक्षात् शंकराचार्य होंगे और व्यासजी स्वयं नारायण होंगे। शेषजी (लक्ष्मण जी) श्रीरामानुजस्वामी होंगे और श्रीरामजी स्वयं (रामदत्त) श्रीरामानंदाचार्य होंगे।

भावार्थ यही की भविष्य में श्रीराम ही स्वयं श्रीमद् रामानंदाचार्य के रूप में प्रकट होंगे।

परान्नारायणाच्चापि कृष्णात्परतरादपि
यो वै परतमः श्रीमान् रामो दाशरथिः स्वराट् १६ ॥

उस दिव्यधाम श्री अयोध्या में अन्य देवापेक्षया पररूप से निरूपित श्रीनारायणजी से परस्वरूपतया निरूपित श्री कृष्णजी हैं उनसे भी परात्पररूप से सर्वशास्त्रों से निरूपित षडैश्वर्यशाली सर्वतोभाव से देदिप्यमान श्रीदशरथनन्दन श्रीरामजी नित्य विराजमान रहते हैं ॥

यस्यानन्तावताराश्च कला अंशाविभूतयः ।
आवेशाविष्णुब्रह्मेशाः परब्रह्मस्वरूपभाः ॥१७॥

उन्हीं परधाम अयोध्याविहारी श्रीरामचन्द्रजी के विभूतियां एवं आवेशावतार कलावतार तथा अंशावतार प्रभृति अनेक हैं तथा परब्रह्म के स्वरूप ऐश्वर्यादि से सादृश्यापन्न श्रीविष्णु, ब्रह्मा एवं ईश-शंकरादी हैं ॥१७॥

स एव सच्चिदानन्दो विभूतिद्वयनायकः
वात्सल्याद्यद्भुतानन्तकल्याणगुणवारिधिः ॥१८॥

वे ही सत्, चित् एवं आनन्दरूप तथा नित्यविभूति और लीलाविभूति दोनों के अधिपति तथा वात्सल्य आदि अद्भुत और अनन्त कल्याण गुणों के वारिधि, समुद्र हैं

Vasisht samhita

रामाद् अन्यः परो ध्ययो नास्ति इति जगतां प्रभुः ।
तस्माद् रामस्य ये भक्तास्ते नमस्याः शुभार्थिभिः ।।

महारामायण

There is no meditation other than Ram, the Lord of the worlds. Therefore those who are devotees of Rama with their auspicious wishes offer their obeisances to him.

अर्चयित्वा तु गोविंद तदीयान् न अर्चयन्ति ये।
न ते रामप्रसादस्य भाजनो दम्भिका जनाः ।।

Vasisht smriti

But those who worship Govinda and do not worship Shri Ram and rambhaktas. Those arrogant people are not deserving of Rama's grace

लेकिन जो लोग गोविंदा की पूजा करते हैं और श्री राम तथा रामभक्तों की आराधना नहीं करते। वे अहंकारी लोग राम की कृपा के पात्र नहीं हैं

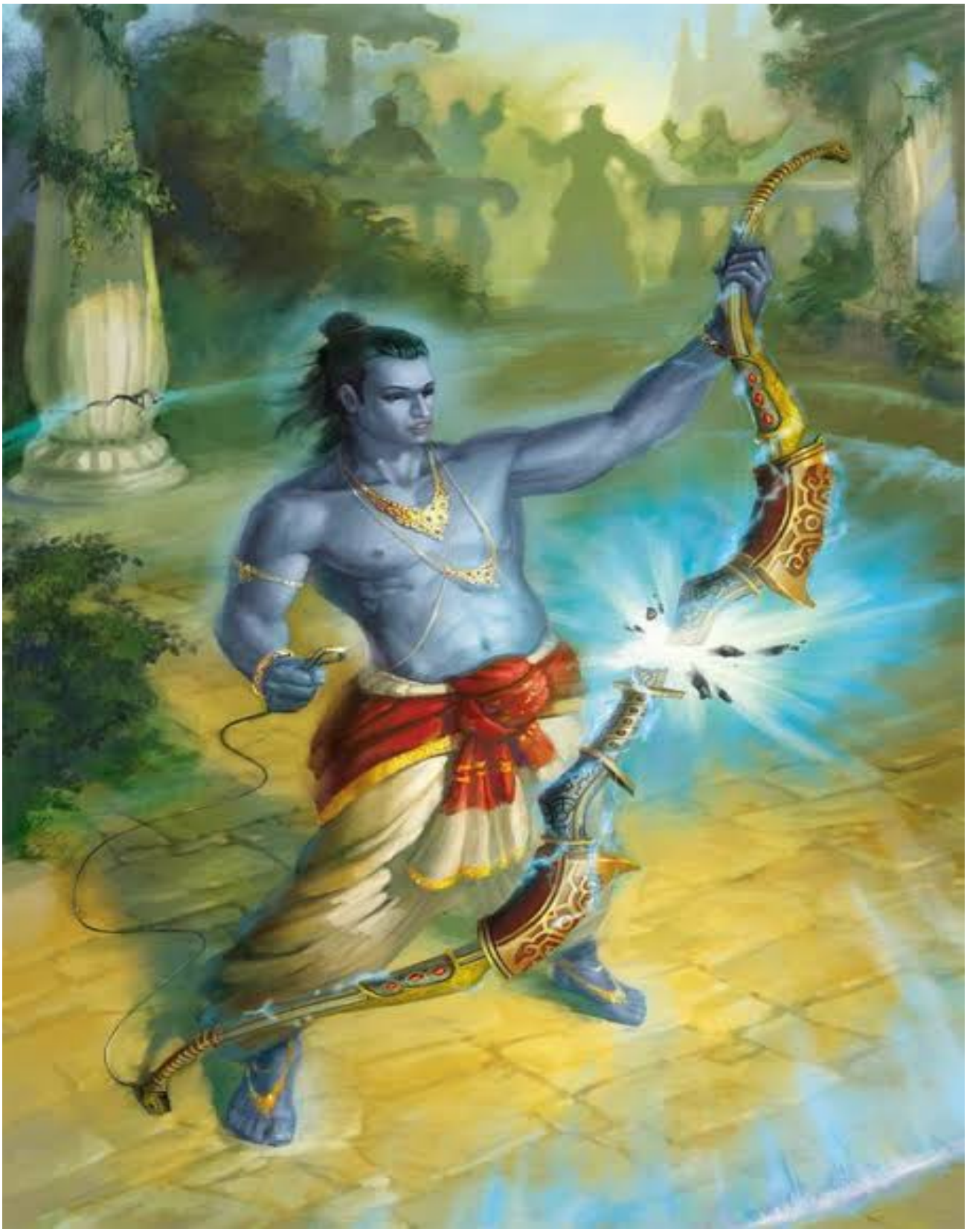

Shiva dhanusha

अतिसृष्टं सुरैरेकं त्र्यम्बकाय युयुत्सवे।
त्रिपुरघ्नं नरश्रेष्ठ भग्नं काकुत्स्थ यत्त्वया।।

Valmiki Ramayan 1.75.12

O Best among men! O Descendant of Kakustha! This broken by you, was given by the viswakarma to the three eyed Siva, who, wishing to fight the demon Tripura with this bow, destroyed him.

हे पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ हैं! हे ककुस्थ के वंशज! आपके द्वारा तोड़ा गया यह धनुष, विश्वकर्मा द्वारा तीन आंखों वाले शिव को दिया गया था, जिन्होंने इस धनुष के साथ राक्षस त्रिपुरा से लड़ने की इच्छा रखते हुए, उसे नष्ट कर दिया।

दृष्टवा हर धनुः सद्यो लीलयैव समाददे।।३३
यस्य वाणानलोद्गारे त्रिपुरोऽभुत पतंगवत्।
हिमालयं धनुर्यस्य ज्या शेषो भुजगेश्वरः।।३४

शरः स भगवान् विष्णुस्त्रयीमुर्ति सनातनः ।

आदि रामायण १.७६.३३ख-३५क

Seeing this, Shri Ram immediately picked up Har bow playfully. This bow was used to destroy the three cities (tripura) that shone like moths. The bow of which is the Himalayas and the pratyancha is the lord of the serpents ie sesh naag. That arrow is the eternal Lord Vishnu, the idol of the tri vedas

यह देखकर श्रीराम ने तुरंत खेल-खेल में शिव धनुष को उठा लिया। इस धनुष का उपयोग पतंगों की तरह चमकने वाले तीन शहरों (त्रिपुर) को नष्ट करने के लिए किया गया था। वह बाण तीनों वेदों के आराध्य सनातन भगवान विष्णु ही हैं।

यत्र त्रैलोक्यवीराणां शक्ति शौर्यापकर्षकम्।
तन् महेश्वरकोदण्डमखण्डय चाति दुर्गयम्।।

Maha ramayan

Shri Ramchandra broke the shiva dhanush in the city of mithila

श्री रामचन्द्र ने मिथिला नगर में शिव धनुष तोड़ा था।

पुनरन्य समुत्थाय पिनाक निकटं ययौ।
धनुषस्तोलनार्थं हि तथा भंगाय वीर्यवान्।
ददर्श शिवरुपं च ननाम च पुनः पुनः ।।

सत्योपाख्यान २.५२.१८

Another got up and went near Pinaka. He is mighty enough to lift the bow and to break it. He saw the form of Lord Shiva and bowed down again and again.

दूसरा उठकर पिनाका के पास गया। वह धनुष उठाने और उसे तोड़ने में काफी शक्तिशाली है। उन्होंने भगवान शिव के स्वरूप को देखा और बार-बार प्रणाम किया।

देव! रघुनाथ! किं बहुतया, दासोऽस्मि ते लक्ष्मणो
मेर्वादीनपि भुधरान्न गणये, जीर्णः पिनाकः कियान्।

Hanuman natak 1.12a

Lakshman says:- O deva! O raghunath! Talking and listening is useless. This is your dasa lakshman who thinks of mountains like sumeru like nothing. What about this Pinaka dhanush.

लक्ष्मण कहते हैं:- हे देव! हे रघुनाथ! बोलना-सुनना व्यर्थ है। यह आपका दास लक्ष्मण है जो सुमेरु जैसे पर्वतों को शून्य समझता है। इस पिनाक धनुष के बारे में क्या?

शीघ्रमानय विश्वेश चापं रामाय दर्शय

Adhyatm ramayan 1.6.18

Raja Janak says:- you hurriedly bring the shiva dhanush , so Shri Ram can see that bow

राजा जनक कहते हैं- तुम जल्दी से शिव धनुष ले आओ, ताकि श्रीराम उस धनुष को देख सकें।

न्यस्तकोदण्डतुणीर शिवचाप अभिसंमुखम्।

आनन्द रामायण १.३.१०६

Shri Ram stands before shiva dhanush.

श्री राम शिव धनुष के सामने खड़े हैं।

यो लोकवीरसमितौ धनुरैशमुग्रं सीतास्वयंवरगृहे त्रिशतोपनीतम् ।

आदाय बालगजलील इवेक्षुयष्टिं सज्ज्यीकृतं नृप विकृष्य बभञ्ज मध्ये ।।

Shrimad Bhagwatam 9.10.6

O King, the pastimes of Lord Rāmacandra were wonderful, like those of a baby elephant. In the assembly where mother Sītā was to choose her husband, in the midst of the heroes of this world, He broke the bow belonging to Lord Śiva. This bow was so heavy that it was carried by three hundred men, but Lord Rāmacandra bent and strung it and broke it in the middle, just as a baby elephant breaks a stick of sugarcane.

हे राजन, भगवान रामचन्द्र की लीलाएँ हाथी के बच्चे की तरह अद्भुत थीं। जिस सभा में माता सीता को अपना पति चुनना था, इस संसार के नायकों के बीच में, उन्होंने भगवान शिव का धनुष तोड़ दिया। यह धनुष इतना भारी था कि इसे तीन सौ व्यक्तियों द्वारा उठाया गया था, लेकिन भगवान रामचन्द्र ने इसे मोड़कर प्रत्यंचा चढ़ाई और इसे बीच से तोड़ दिया, जैसे एक हाथी का बच्चा गन्ने की छड़ी को तोड़ देता है।

भंक्त्वा शैवंधनुर्दिव्यं अजितवान् जनकात्मजाम्।
अथ असौ वीर्य शुल्केन महतापरितोषितः ।।

Padmapuran 5.242.146

Shri Ram broke the divine shiva dhanush and won Janaka's daughter.

श्री राम ने दिव्य शिव धनुष को तोड़कर मिथिला नरेश जनक जी की पुत्री को जीत लिया।

तथेत्युक्त्वा च राजा हि भवचापं तद् अद्भुतम्।
अनेक भुभुजां भुंगि स्थापयामास पुर्ववत्। ।

Narsimha puran 47.116

Then, saying 'very good', the king placed the wonderful Shiva bow there in the past, which broke pride.

तब 'बहुत अच्छा ' कहकर राजा ने मान भंग करनेवाले उस अद्भुत शिवधनुष को पुर्ववत वहां अनेक भुपालों वहां रखवाया।

पिनाकभञ्जनः श्रीमज्जानकी प्रेम पालकः ।
जामदग्न्यप्रतापघ्न श्रीरामः शरणं मम्। ।

Narad Pancharatra antargat brihad Brahma samhita

Shri Ram who had broken the shiva dhanush Pinaka and is the love of the blessed Janaki and who has taken away vaishnav shakti of son of Jamadagni, is my refuge.

जिन्होंने शिव धनुष पिनाक को तोड़ा था, जो धन्य जानकी के प्रिय हैं और जिन्होंने जमदग्नि के पुत्र की वैष्णव शक्ति को छीन लिया है, वे श्रीराम ही मेरे आश्रय देने वाले हैं।

सीतापति पुण्यकीर्तिर्हरकोदण्ड भंजनः ।
सत्यवाक् पितृ सद्भक्तिर्मार्गनेता नरोत्तमः । ।

Shandilya samhita

Janki vallabh Shri Ram who has the holy fame of the breaking of the shiva dhanush.He was truthful to his

father and had good devotion to him and was a guide to the path and is the best of men.

जानकीवल्लभ श्री राम जिन्हें शिव धनुष तोड़ने का पवित्र यश प्राप्त है। वह अपने पिता के प्रति सच्चे थे और उनके पिता के प्रति उसकी अच्छी भक्ति थी और वह मार्ग का मार्गदर्शक थे और पुरुषोत्तम हैं।

रामेति द्वयक्षरं नाम मानभंगपिनाकिनः ।
अभेदो बोध्यते तेन सततं नामनामिनो। ।

Lomesh samhita

दो अक्षरी मंत्र राम नाम ने शिव शंकर का मान भंग किया। इससे प्रतीत होता है कि राम और राम नाम दोनों अभेद है।

The two-syllable mantra named Ram defamed Shiv Shankar. From this it appears that both Ram and the name Ram are inseparable.

From **Brihad vishnu puran**

सम्यक् पृष्ट त्वया ब्रह्मन् यद् एतत् शाम्भवन् तनुः ।
तस्य प्रभावो धर्म्मज्ञैः विज्ञातं ब्रह्मलौकिकैः । ।

हे मुने! आपने सही पुछा है। यह शिव धनुष साक्षात् शिव का शरीर है। इसका प्रभाव धर्मिष्ठ ब्रह्मलोक वासी ही जानते हैं।

तद् एतत् शाम्भवं दिव्यं वि श्वकर्मा विनिर्मितम्।
यथा रामे श्वरलिंगम् धनुषो दर्शनन्तथा। ।

ये शिव जी का दिव्य और सुन्दर धनुष वि श्वकर्मा द्वारा निर्मित है। जैसे रामे श्वर लिंग पुण्यवान है ठीक वैसे ही शिव धनुष का दर्शन ।

अतिपातक जातानां साधनं द्वितयंमतम्।
कलौयेन महाभाग कृतायात्रा स्वयंमुने। ।

कलियुग मे अतिपातक आदि नाश करने के लिए दो ही साधन है १) रामे श्वरलिंगम् दर्शन २)शिवधनुष दर्शन

अयवातं नमस्यन्ति जीवन्मुक्त तमोहिसः ।
परलोक भयात् भीतास्तं नमस्यन्ति ये नराः । ।
तेपि पापैः विमुच्यन्ते यान्ति शुभगांगतिम्।

जो जन इस शिवधनुष को प्रणाम करता है वो जीवन्मुक्त है। नरकादि यातना से डरे हुए मनुष्य उस धनुष को प्रणाम करते हैं वे मनुष्य भी पापों से मुक्त होकर शुभ गति को प्राप्त करता है।

मिथिलायां समागम्य येद्दष्ठ्व शाम्भवन् धनुः ।
पापापनोदनन् तेषां जायते तस्य दर्शनात्। ।

मिथिला जाकर जो शिवधनुष देखते हैं उनका सभी पाप दर्शन मात्र से मिट जाता है।

यनद्दष्टं धनुः खण्डम् सर्व्व पापापनोदनम्। ।
श्रीरामकरजस्पृष्टं साक्षाद् भुवनपावनम्।

जो शिवधनुष का खंड को देखते हैं उनका समस्त पाप मिट जाते हैं। यह श्रीराम के द्वारा स्पर्श हुआ शिव धनुष साक्षात् भुवन पावन है।

प्रत्यक्षं ज्ञापकं श्रेष्ठं धनुर्वीर्य्यं प्रकाशनम्।
आसृष्टि निश्चलं दिव्यं स्थास्यत्यवनिमण्डले।।

शिवधनुष का शक्ति और प्रकाश प्रत्यक्ष श्रेष्ठज्ञापक है। जब तक सृष्टि रहेगी तब तक स्थिर होकर ये शिवधनुष पृथ्वी पर रहेगा।

महावैष्णवसंस्कारैः महायज्ञव्रतादिभिः।
महापुण्य अतिरकैश्च धनुषोदर्शनं भवेत्।।

विष्णुभक्ति के संस्कार से तथा यज्ञ व्रत यज्ञ आदि से महापुण्य के संचय से ही ये शिवधनुष का दर्शन होता है।

पुराणज्ञैश्च निर्णीतं यद् रामाभिमुखो भवेत्।

पुराण जानने वालो के द्वारा निर्णीत है कि जो रामभक्त है वे ही इसका दर्शन पा सकते हैं।

राम एवं परं ब्रह्म रामो नित्य निरामयः ।
रामात् परतरो नास्ति सत्यं जानीह शंकरः । ।
राममंत्रस्य व्याख्यान राममंत्रस्य धारणा।
रामभक्तस्य पुजादि रामतत्वस्य गोपनम्। ।
रामात् सर्वेपि जायन्ते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
रामात् परतरं नास्ति कार्यकारण गौरवम्। ।

अद्भुत रामायण

Rama is thus the Supreme Brahman, Rama is eternal rasa. There is no one greater than Rama, Lord Shiva know the truth here. Explanation of the Rama Mantra and the retention of the Rama Mantra. The worship of a devotee of Rama and the concealment of the essence of Rama.From Rama, all Brahma Vishnu and Mahadeva are born. There is no dignity of cause and effect greater than Rama

यतो विनिर्गताश्चांशा विष्फुलिंगाइवारणे।
तथा सर्वेऽवसाराणाम् अवतारी रघुत्तमः । ।

Bhusundi ramayan

जैसे अग्नि से विस्फुलिंगा निकलते हैं ठीक वैसे ही संपुर्ण अवतार श्रीराम जी से प्रादुर्भाव होते हैं।

स च सीतापतिः श्रीमान् जगजीव विलक्षनः।
वेदवेदान्त सर्व अर्थो योगिनां परमागतिः।।
एतस्मिन् कीर्तिते ध्यायते श्रुते वापि अर्चितेऽर्थिते।
पातिव्रति अक्षयो नैव सतीनाम् अपि जायते।।

शिव संहिता

वे श्रीराम सीता के पति हैं और संसार में सुन्दर तथा चरित्रवान और जिनमें जड़जीव का लक्षण नहीं हैं। वे ही वेद और वेदांत सभी का अर्थ हैं और योगियों का अंतिम लक्ष्य हैं। इनका पाठ, मनन, श्रवण, पूजन और प्रार्थना की जाती है। पवित्रता पवित्र के लिए भी अक्षय नहीं है। अर्थात वे सबके पति है।

तत्र हेतुस्त्वदीयन्तु रुपं सौन्दर्यमुत्तमम्।
माधुर्ये यौवनारम्भः सौगन्ध्यं सुकुमारता।।

लावण्या परमां कान्तिः सुशील्यं खलसौहृदम्।
सौलभ्यं परमवात्सल्यं प्रसन्नं तं स्वभावतः।।
शक्तिलर्नानाविधासर्वकलाप्रावीण्यम् आश्रमम्।।
अन्येऽपि ते स्युः कल्याणगुणाः सर्वत्र पुजिता।

शिव संहिता

रामाद् अन्यं परं श्रेष्ठं यो वै पाणिडत्यमात्रतः।
संतप्त हृदयः तस्य जिह्वां छिन्द्याम् अहम् मुने।।

शिव संहिता

शंकर जी का वचन है:- जो कोई भी यह कहता है कि राम से बड़ा अन्य कोई श्रेष्ठ है, तो मेरा हृदय जला उठता है, मैं उसका ज़बान काट लेता हूं।

शंकर उवाच:-
अहं विधाता गरुडध्वजश्च रामस्य बाले समुपासकानाम्।

गुणान् अनन्तान् कथितं न शुक्लाः सर्वेषुभुतेषु अपि पावनास्ते।।

महारामायण

Shankara said:-

I, the creator brahma and the flagbearer of Garuda maha Vishnu are among the worshipers of Rama as a child. The infinite virtues are said to be not white, but they are holy even in all beings.

पुत्रवत् पितृवद् रामो मातृवद् भ्रातृवत् सदा।
श्यामलवद् भामवद् रामः श्वश्रूवच्छ्वशुरादिवत्।।
पुत्रिवत् पौत्रवत् रामो भागिनेयादिवन्मम।
सखावत् सखिवद् रामः पत्नीवद् अनुजादिवत्।।
यः प्रीतिः सर्वभावेषु प्राणिनाम् अनपायिनी।
रामे सीतापतावेव निधिवन् निहिता मुने।।

शिव संहिता

Rama was always like a son like a father like a mother like a brother. Rama was like Shyamala like Bhama like his father-in-law and father-in-law. Rama is like a daughter to me like a grandson like a partner to me. Rama was like a friend like a friend like a wife like a brother. That love which is inexhaustible in all beings.O sage she is enshrined in Rama like a treasure in the father of Sita

को महामोह भुतादि सृष्टिस्थितिध्वंस हेतुर्महाविष्णुरास्ते।
रामस्तुतद्गीत पदाम्बुजातः परः कारणात् कार्यतोऽसौ परात्मा।।

बृहद् हनुमान नाटक

Who is the great delusion, the Mahavishnu, the cause of creation, existence and destruction of elements and others that maha Vishnu is, born of the lotus feet of Shri Ram, who is the Supreme Self in cause and effect.

लिखितं त्रिविधं सीताकंकणाकृति शोभितम्।
चित्रकाव्यं भवेत् तत्र जानंति कविपंडिताः।।

तकारं तत्पदं विद्धि त्वमपदाकार उच्यते।
दीर्घता च असि प्रोक्तं तत् त्वम् असि महामुने।।

महासुंदरी तंत्र

रकारादिनि नामानि श्रृण्वतो मम पार्वती।
मनः प्रसन्नतां याति रामनामाभिशंकया।।

पद्मपुराण उत्तरखंड २८१.२३

जैसे ही कोई साधक के मुंह से र कार निकलता है, उसे सुनकर मेरा चित्त प्रसन्न हो जाता है कि उसके मुंह से "राम" नाम निकलेगा।

Characters of Shrimad Ramayanam

१)
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्व च अर्थदर्शनम्।
इति इमानि दशांगानि रथनामानि यस्य।
ज्ञेयो दशरथो वेदः साध्यसाधनदर्शनः।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

४ वेद+ ४ उपवेद+१ साध्य+१ साधन =१० रथ

वेद विदित तेहि दशरथ नाउ।
रामचरितमानस

२)
तासां क्रिया तु कैकयी सुमित्र उपासनात्मिका।
ज्ञानशक्तिश्च कौसल्या वेदो दशरथो नृप।।

शिव संहिता

क्रिया शक्ति=> कैकयी
उपासना शक्ति=>सुमित्रा
ज्ञान शक्ति=> कौसल्या

३)

सर्वधर्मः क्रिया जन्मसर्गादिस्थिति कारणम्।
कैकेय्याख्याक्रियायान्तु जातोयं भरतात्मना।।
सर्वेषां जगतां नित्यं धारणात् भरणात् च सः।
भव्यवस्तुरत्वात् च ख्याताऽसौ भरताऽख्यया।।
क्रियाकाण्डस्य शास्तासावैश्वर्यस्यापि शक्तिभृत।
पद्मपाती च धर्माणाम् अधिष्ठाता प्रतिष्ठितः।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

संपुर्ण धर्म जो कि सृष्टि का उत्पत्ति , पालन करने वाले वहीं क्रियाशक्ति कैकेयी के यहां भरत नाम से जन्म लिया। समस्त जगत का नित्य पालन पोषण करने के कारण तथा जो मंगल करने वाले वस्तु में रहते हैं वहीं भरत नाम से विख्यात हुए।

विश्व भरण पोषण कर जोई।
ता कर नाम भरत अस होई।।
रामचरितमानस बालखाण्ड

४)

सुमित्रारुपशक्त्या तु जनितो लक्ष्मणोऽर्भकः ।
भक्त्यापारितो दासः सखासेवादिदैशिकैः ।।
भगवद् रामदेवस्य कल्याणगुणशालिणः ।
अर्चनीयांघ्रिपद्मस्य दातुश्चानन्दसंपदाम्।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

सुमित्रारुप उपासनाशक्ति ने लक्ष्मण रुप पुत्र को जन्म दिया जो कि सब रामभक्तो में सर्व श्रेष्ठ और सखा सेवा आदि धर्म के दैशिक आचार्य हैं। लक्ष्मण जी सीताराम जी के चरणकमल के बड़े पुजक और आनंदरुप संपत्ति देने वाले तथा रामजी का कल्याण गुणों के धाम हैं।

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार।।

रामचरितमानस बालकाण्ड

९)
शत्रुघ्नो नित्यशत्रुघ्न रामरामजनाऽवलेः ।

तयैव जनितो देव्या रामप्राणसेमानुज।।
श्रीरामायुधानां राजारत्नभुजांवरः।
शस्त्रशास्त्रसमुहज्ञेयो रामप्रेमामितोत्सुकः।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

शत्रुघ्न जी रामभक्तो के शत्रु (मद, मोह आदि) का विनाश करनेवाले, उन्हीं शत्रुघ्न सुमित्रा देवी के यहां जन्म हुए, जो रामजी के प्राण समान प्रिय है। रामजी के जो आयुध अस्त्र शस्त्र का समुह जानने वाले हैं, राजाओं में श्रेष्ठ और श्रीराम जी के अमित प्रेम में विह्वल रहते हैं।

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।।
रामचरितमानस बालकाण्ड

६)
लोके रमयतां पुंसाम् एकम् अद्वैत धर्मिणाम्।
कौशल्या सुषुवेयत्तु कर्तारं जगतां सुतम्।।
मोक्षाख्यापुरुषार्थस्य भर्त्ताऽसौ जगतांपतिः।
श्रीरामोराम इत्युक्त ऋषिभिः त्व एक ईश्वरः।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

एक अद्वितीय जो धार्मिक व्यक्तियों में रमण करते हैं, उन्हीं संसार के कर्ता को कौशल्या ने जन्म दिया। वे जगत के नाथ तथा मोक्षाख्य पुरुषार्थ के पति जो योगिजन, ऋषि-मुनियों के एकमात्र ईश्वर श्रीराम हैं।

७)

हिरण्यवर्णा सीतां च माण्डवी पाटलप्रभाम्।

उर्मिला श्यामवर्णाभां श्रुतिकीर्तिसमप्रभाम।।

नारद पंचरात्र

राम श्यामवर्ण ,सीता जी गोरी है, तथा भरतजी श्याम वर्ण ,माण्डवी भी गौरी हैं। लक्ष्मण जी गौरवर्ण, उर्मिला श्याम तथा शत्रुघ्न गौरवर्ण , श्रुतिकीर्ति श्याम वर्ण की है।

यं वेदान्त विदो ब्रह्म वदन्ति ब्रह्मवादिनः ।

परमात्मेति च योगीन्द्राः भक्तास्तु भगवानिति ।

यज्ञो विष्णुरिति स्पष्टमृत्विजो ब्रुवते बुधाः ।
स्वभावकाल कर्मादि शद्ववाच्यं तु हैतुकाः ।।

भोगेनासौ स्वतः पूर्णो दाता भगगरणस्य च ।
स्वतोऽवाप्त समस्तर्द्धी रामकामवरप्रदः ।।

Shiv Samhita, chapter 2, verse 36-38)

वेदान्त तत्व के जानने वाले ब्रह्मज्ञानी जिसको 'ब्रह्म' कहते हैं, योगीन्द्र महात्मा जिसको परमात्मा कहते हैं, भक्त जन जिसको भगवान कहते हैं, ऋत्विजगरण "यज्ञो वै विष्णुः" ऐसा विद्वान स्पष्ट उद्घोष करते हैं। नैयायिक तर्क प्रधान तथा कर्म शास्त्र की मीसांसा करने वाले जिसको काल-कर्म-स्वभाव का प्रेरक ईश्वर कहते हैं, वही श्रीराम है। वह अपने भोगैश्वर्य से स्वतः परिपूर्ण आप्तकाम सर्वकाम है तथा अन्य उपर्युक्त अपने अंश कालाशों से भगवान् कहे जाने सभी को उत्कृष्ट भोग ऐश्वर्य प्रदान करने वाले महादानी दाता हैं, सभी को कामना पूर्ति का वर प्रदान करने वाले श्रीराम ही हैं।

बहुचक्र समं विष्णोः बहुशुल समं हरः ।

बहुव्रज समश्चासौः रामबाणः प्रतापवान्।।

तुणेनैकशरं करेण दशधा सन्धानकाले शतं चापेऽभुतं सहस्रगमने कोटिश्च कोटिर्वधे।

अन्तेखर्वनिखर्व बाण विविधैः सीतापतेः शोभितः एतद् बाण पराक्रमस्य महिमा सत्पात्रदानं यथा।।

बृहद् हनुमान नाटक

श्रीविष्णु भगवान के चक्र से अनंत गुणा शक्तिमान, शंकर भगवान के त्रिशूल से अनंत गुणा शक्तिमान, इन्द्र के व्रज से अनंत गुणा शक्तिमान श्रीरामजी का बाण है। प्रभु श्रीराम का बाण तुणीर में एक रहता है, उसी को प्रत्यंचा चढ़ाने पर सौ रूप धारण करता है। और धनुष पर चढ़ाने पर हजार हो जाता है। तथा शत्रु का वध करते समय करोड़ों करोड़ बन जाता है। और यदि जरूरत पड़े तो अरब खरब बाणों की महान शक्ति से भरपुर हो जाता है। यह श्रीराम बाण के पराक्रम की महिमा है।

शत चक्र समो विष्णोः हर शुल शतैः समः।

शत वज्र समश्चासौ रामबाण प्रतापवान्।।

तुणेनैकः शरं करेण दशधा शन्धानकाले शतम चोपभुत सहस्र लक्षगमने कोटिश्च कोटिर्वधे।

अन्तेअर्व निखर्वबाण विविधैः सीतापतिश्शोभितः एतद्बाण पराक्रमस्य महिमा सत्पात्र दानेयथा।।

हनुमान नाटक

श्रीरामबाण तो भगवान विष्णु के चक्र से शत गुना, भगवान शंकर के त्रिशुल से शत गुणा, इन्द्र के वज्र से शत गुना प्रतापवान् है। (यहां शत भी सहस्र का वाचक है) श्रीराम का बाण तुणीर में एक रहता है, हाथ में लेने पर दंश गुना हो जाता है, सन्धान करते समय सौ, चलते समय लाख गुना , बध करते समय कोटि कोटि गुना और अन्त में अरब खरब गुना हो जाता है इस प्रकार के विविध बाणो से सीतापति शोभित होते हैं, ये बात के पराक्रम की महिमा है।

अवतारश्च ये तात त्वत्तः सर्वे भवन्ति ते।
उदयोद्ररिव प्रआच्यआम् आदित्यानां युगे।।

कश्यप स्मृति

ब्रह्म ऋषि कश्यप कहते हैं भगवान श्री राम से:- हे तात! जितने भी अवतार है वे सब आप ही से हुए हैं जैसे प्राचि दिशा में उदयाचल से ही युग युग में आदित्यों का उदय होता है।

Brahma Rishi Kashyapa says to Lord Rama:- O Father! All the incarnations have come from you, just as the suns rise from Udayachal in the eastern direction in the ages.

चैत्रमासे नवम्यांतु शुक्ल पक्षे रघुत्तमः ।
प्रादुरासीत् परं ब्रह्म परंब्रह्म एव केवलम्। ।

सनक सनातन संहिता

चैत्रमास के शुक्ल पक्ष में जो एकमात्र परंब्रह्म राम है वहीं दशरथ जी के पुत्र रुप मे अवतीर्ण होते हैं।

ये वेदान्त विदो ब्रह्म वदन्ति ब्रह्मवादिभिः ।
परमात्मेति योगिन्द्रा भक्तास्तु भगवान् इति।
सभां यस्य निपेवंते स श्रीरामः इतीरितः । ।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

जिनको वेदान्त ज्ञानी ब्रह्मवादी जन परंब्रह्म कहते हैं, योगी जन जिन्हें परमात्मा कहते हैं, भक्त जन जिन्हें भगवान कहते हैं, जिनकी सभा में मत्स्य,कुर्म , नरसिंह आदि अवतार सेवा करते हैं वे त्रिपाद्विभुति नायक श्रीराम हैं।

राम नित्यम् परमज्योति राम नित्यम् परात्परम्।
राम नित्यम् परमज्ञानम् राम नित्यम् परमतपः ।।

Agastya ramayan

Ram is the eternal supreme light, Ram is the eternal paratpar tatvam, Ram is the eternal supreme knowledge and Ram is the eternal supreme penance

एकोऽहं बहुता जायां तद् विराड उदपद्यत्।
द्विविधः सोषऽभवत् तत्र श्रीमन्नारायणो विभुः ।।

Shiva samhita

Shri Ram was all alone, I became many and from me that Virata purush arose.There blessed and mighty Narayana who is vibhuti swarup of Shri Ram.

अनंत ब्रह्मा शतकोटि शंभुः नवकोटि दुर्गा पद्मं गणेशः ।
श्रीरामचन्द्रस्य ह्यनादि पुंसः भवन्ति सर्वे चरणारविन्दे।।

नारद पंचरात्र

Infinite numbers of Brahma, hundred crores of Shambhu, nine crores of Durga, trillions of Ganesha, All are at the lotus feet of the eternal God Sri Ramachandra.

स बाह्याभ्यन्तरं कृतस्न आनंद रस स्पन्दितः ।
मधुदधिरिवापारो राम एव परत्वः पुमान्। ।
महाशिव संहिता

श्रीराम ही परमपुरुष है जो बाहर से लेकर भीतर तक आनन्द रस से भरपुर है।

कल्पितं चार रुपं नित्यं द्विभुजम् एतत्।
परम रस सम्पन्नं ध्येयं योगिविदां वरैः । ।
महाशिव संहिता

चतुर्व्युह आदि जितने रुप हैं, सब पर स्वरुप द्विभुज के अन्तर्गत रुप हैं।

परं ब्रह्म परंधाम जगतां कारणं परम्।
नागशय्या शयानं च द्विभुजो रघुनंदनः।।
महाशिव संहिता

Dhanush baan tapta mahatmya

श्रीरामायुधाभ्याम् तप्ताभ्यां सीताया मुद्रया सह।
अंकिता ये महाप्राज्ञा नित्यमुक्ताश्च मुक्तिदाः।।
महाशिव संहिता

महऋषि अगस्त्य का वचन सुतिक्षण मुनि से:- श्रीराम आयुध तप्त अर्थात धनुष-बाण और श्री सीताजी की मुद्रिका से जो महाप्राज्ञ अंकित है वे नित्य मुक्त हैं और दुसरों को मुक्ति देने वाले हैं।

श्रीरामवचनं श्रीजानकीं प्रति
रामायाः मुद्रिकां वापि मण्डिता भुजमुलयोः।
मम ये च धनुर्बाणौ प्राप्नोति परमं पदम्।।
ताप पुण्ड्रं तथा नाम मंत्र माला समाकुलम्।

स नरः परमश्रेष्ठः रसिको रामवल्लभः।।

हनुमान संहिता

भगवान श्रीराम कहते हैं जानकी जी से:- श्रीसीता जी की मुद्रिका तथा हमारा धनुष-बाण जिनके भुजाएं पर अंकित है वे परम पद को प्राप्त करते हैं। श्रीराम आयुध तप्त मुद्रा का छाप, तिलक (श्रीरामानन्दी उर्ध्वपुण्ड तिलक), प्रभु श्रीराम संबंधी नाम,श्रीराम मंत्र,तुलसी की माला- ये पांच संस्कार से संपन्न नरश्रेष्ठ श्रीराम का उपासक कहलाता है।

रामायुधाभ्याम् तप्ताभ्यां वह्निना धारणायः च।

तिलकं भुषणं भाले इन्दुबिन्दु समन्वितम्।।

रामायुधांकितो विप्रो रामतुल्यो हि विद्यते।

ब्राह्मणो नांकितो वापि विद्यते शुद्रवत्सदा।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत बृहद् वशिष्ठ संहिता

अग्नि में हवन विधि से तपाए हुए श्रीराम के आयुधों अर्थात धनुष-बाण को धारण करना तथा भाल मे तिलक श्रीसीता जी के भुषण चण्द्रिका मुद्रिका के साथ लगाना ये रसिक रामभक्तों का श्रृंगार है। श्रीरामायुध अर्थात धनुष-बाण से अंकित विप्र भी श्रीराम के तुल्य है। परन्तु जो ब्राह्मण धनुष-

बाण से अंकित नहीं है वो श्रीरामपुजा में शुद्र के समान वर्जित माना जाता है।

श्रीरामचन्द्र वाक्यं वशिष्ठ प्रति

धनुर्बाणादि चिन्हानाम धारिणं तिलकन्विताम्।

तुलसीकाष्ठ मालाढ्यं तं जानीतु सु वैष्णवं।।

राम गीता, बृहद् कौशलखंड

भगवान श्री राम कहते हैं ब्रह्म ऋषि वशिष्ठ से:- जो धनुर्बाणादि चिन्हों को धारण करने वाला है, उर्ध्वपुण्ड तिलक है सुशोभित, तुलसी माला धारण करने वाला है उसे सुन्दर वैष्णव जानना चाहिए।

सर्वैर्गुणैर्नियम संयमनित्ययुक्तो निष्कल्मषः सकल सिद्धि यो न अंकितो धनुश्शरैर्न च मंत्रराजस्य उपासको न सजनो रघुनंदनस्य।।

महारामायण

जो सब गुणों से तथा नियम संयम आदि से नित्ययुक्त भी है,पाप रहित होकर सब सिद्धियां देने वाला भी है, पर जो धनुष बाण से अंकित नहीं है तथा राम षडक्षरमंत्र का उपासक नहीं है वो रघुनंदन का दास नहीं है।

धनुर्बाणं परं श्रेष्ठं मम् नामानि च धारयेत्।
चक्रात् कोटिगुणं प्रोक्तं मम् नामानि च वै क्रमात्।।
आदि रामायण ४.१२.१३

भगवान श्रीराम कहते हैं दुर्वासा ऋषि से:-रामोपासक पर सर्वोत्तम धनुष-बाण और मेरा नाम अंकित होना चाहिए। जैसे धनुष-बाण तो तप्त चक्र से कोटि गुना श्रेष्ठ है, ठीक वैसे ही मेरा राम नाम तो नारायण नाम से कोटि गुणा श्रेष्ठ है।

बाहुमुले धनुर्बाणेनांकितो रामकिंकरः।
शीतलेनाथ तप्ते न तस्य मुक्तिर्न संशयः।।
नारद पंचरात्र अन्तर्गत अगस्त्य संहिता

महऋषि अगस्त्य कहते हैं सुतिक्ष्ण से:- बाहुमुल में शीतल अथवा तप्त धनुष-बाण से अंकित हो, वही रामभक्त है, उसकी मुक्ति होती है। इसमें कोई संशय नहीं है।

अंकयेत् चापबाणाभ्याम् नाम कुर्यात् च वैष्णवम्।
नारद पंचरात्र

रामोपासक वैष्णव को अपने दोनों बांहों पर धनुष-बाण तथा राम नाम धारण करना चाहिए।

ऊं यो वै नित्यं धनुर्बाणांकितो भवति स पाप्मानं तरति। स संसार तरति स भगवदाश्रितो भवति स भगवद्रुपो भवति।।

अथवर्ण श्रुति

जो नित्य धनुर्बाण से अंकित होता है, वो सारे पापों से तर जाता है। वो संसार से तर जाता है, वो भगवान श्रीराम के प्रति आश्रित होता है, वो भगवद् रुप होता है।

----------xxxxxxxxxxx----------

एक एव परमा लक्ष्मी प्रमोदवनचन्द्रिका।
सहजानन्दानी साक्षाद् रमते रामसंगिनी।।
स एव श्रीजानकी सीता नित्यम् अद्भुतकेलिनी।
नाम धाम स्वरुपं च तस्या वेदाद्य गोचरम्।।

आदि रामायण ३ भाग पेज २६०

There is only one supreme Lakshmi/परा श्री who is none other than moon of pramodvan bhagwati Sita, the eternal partner of bhagwan Shri Ramchandra. Her name, abode and swarup is visible in all 4 vedas

मत्स्यं कुर्मं वाराहं नृहरिमथ हरि वामनं हंसरुपं
यज्ञं नारायणाख्यं त्रिभुवनललितं भार्गवं वै हयास्यम्।
प्रद्युम्नं वासुदेवं कलिमलदमनं रेवतीप्राणनाथं
बुद्धं कल्कि यदन्त्ये न भवति सकलं ब्रह्म राम नमामि।।

आदि रामायण १.१.५

Brahma says:- I offer my obeisance to supreme brahman Shri Ram who has no end and took the avtars of matsya, kurma, varah, narsimha, bhuma purush, haygriva, vaman, Hansa, yagya, ksheersagar narayan, bhargav ram(parshuram), pradyumna, vasudev, balram, Sugata budha , kalki and others

अंशभूतौ विराट ब्रह्म विष्णु रुद्रासत्था परे ।
ब्रह्म तेजोङ्गभूतः वर्तते जानकी पतिः ।।

(वृद्धमनुस्मृति)

जिस विराट पुरुष के अंश के घुटनेभूत ब्रह्म तेज से ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित सभी प्रकाशित हैं, वही जानकी पति श्रीरामचंद्र हैं।

मनसश्च अपि अंहकारम् अंहकारान् महान परः ।
महतः परम अव्यक्तम् अव्यक्तात् पुरुषः परः ।।
पुरुषाद् भगवान्प्राणस्तस्थं विश्वमिदम् जगत्।
प्राणात् परतरं व्योम व्योमातीतोऽग् निरीश्वरः ।।
सोऽहं सर्वत्रगः शांतो ज्ञानात्मा परमेश्वरः ।
नास्ति मत्परम भुतं मां विज्ञाय विमुच्यते।।
नित्यं हि नास्ति जगति भुतं स्थावरं जंगमम्।
ऋते मामेकम् अव्यक्तं व्योमरुपं महेश्वरम्।।
अद्भुत रामायण १२.२०-२२

Shri Ram says:- Beyond mind is ego, beyond ego is mahat, beyond mahat is avyakt, beyond avyakt is

purusha, beyond purusha is bhagwan prana. The entire world is under control of prana . Beyond prana is vyom and beyond vyom is nirishwara. I (Shri Ram) is that nirishwara, omnipresent and omniscient. There is nothing beyond me. By knowing me, person becomes liberated. It is only I the great ishwara who eternally resides in movable, immovable, avyakt, purusha, prana and vyom.

मम अंश शक्त्या पुरुषः परोऽभत् नारायण
शंखगदादिपाणिः ।
सहस्रमुर्द्धा पुरुषः ततोऽभुद् यत् नाभिपद्म भगवान्
विरञ्चिः ।।

आदि रामायण ४.२३.९

By my power part, the Supreme Person became Narayana, holding a conch, club and other objects who has the thousand-headed and became brahma (viranchi)

ब्रह्मा उवाच:-
मत्स्योऽस्य हृदयं विष्णुर्योगरुपी जनार्दनः ।

कुर्मोऽस्य धारणाशक्तिर्वराहो भुजयोर्बलम्। ।
नारसिंहो महान् रोषो वामनः कटिमेखला।
भार्गवोऽस्य परो धर्मो बलरामश्च संमदः । ।
बुद्धस्तु करुणा साक्षात् कल्की चैतस्य संस्मृतिः ।
कृष्णोंऽशांशो ह एवास्य वृन्दावन विभुषणः । ।
ऐते चांशकलाश्चैव रामस्तु भगवान् स्वयम्। ।

आदि रामायण १.९.१५-१८क

All pervading Shri Ram’s heart is in form of matsya avtar, his ability to hold is in form of kurma avtar, his strength of arms is in form of varah avtar, his great wrath is in form of narsimha avtar, his thigh is in form of vaman avtar, his dharma is in form of parshuram avtar, his pride of king is in form of balrama avtar, his compassion is in form of Sugata Buddha avtar and his consciousness is in form of kalki avtar. Partial incarnation of his partial incarnation is vrindavan vihari krishna. All of these are ansh and kala avtars, Shri Ram is swaym bhagwan.

रामस्य बलकृष्णाद्याः सर्वेऽप्यंशाः सनातनाः ।
न ततोऽन्यत् किम् अपि अस्ति स्थुलं सुक्ष्मं जगत्त्रये।।

आदि रामायण १.६.३२

Garuda says:- All of incarnations of bhagwan Shri Ramchandra are eternal. There is nothing smaller or larger than Bhagwan Shri Ram.

यो ह वै एको रामो आसीत्। सर्वत्र एव गीतं रामस्य एदयं नान्योऽस्ति। रामाख्यं सर्वमिदम् आद्यं अक्षरं प्रकाशे प्रभवो प्रभुः परिभुः स्वयम्भुरिति श्रीरामसत्तायाः भुयसी सकाशात् प्रकटितं यो महादेवो भुः । सर्वान् भगवान् परित्यज्य आत्मज्ञान ऐश्वर्य महति महपति तस्माद् उच्यते महादेवं इति श्रुतिः ।

राम अथर्वशीर्ष उपनिषद

जो श्री रामचन्द्र सर्व प्रसिद्ध हैं, वह निश्चय ही एक हैं सभी शास्त्रों ने ऐसा ही गाया है दुसरा कोई और नहीं। राम नाम से ज्ञात होने वाला तत्व ही सर्वोपरि है। वे ही आद्य अक्षर , प्रकाशमय, सबका उत्पत्ति स्थान है। वे स्वयंभू है और

प्रभुओं का प्रभु है। श्रीराम की महान सत्ता के द्वारा प्रकट होने से महादेव इनका नाम पड़ा है। सभी भगवान का त्याग कर आत्मज्ञान के ऐश्वर्य से परिपुर्ण होकर महान आनन्द में निमग्न रहते हैं, इसलिए इनका नाम महादेव है।

ऊं यो वै श्रीरामचन्द्र लोचनभ्यां भाति स एव ब्रह्मेति। स एव केवलं निर्गुणात्मकं सम्मीलनम्। सृष्टिस्थितिअन्तकारिणे ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम् स संज्ञाययति। भगवान एक एव राम आसीत्। एकस्तु त्रयानुस्युतं सामर्थ्यरुप आसीत्।

राम अथर्वशीर्ष उपनिषद

श्रीरामचन्द्र जो प्रसिद्ध है उनके दोनों नेत्रो के रुप में प्रकाशित है वहीं ब्रह्म है। वे ही निश्चय पुर्वक सबके साक्षी हैं। वे ही केवल निर्गुणात्मक होकर सबको मिलते हैं। संसार के सृजन, संचालन और प्रलयादि करनेवाले ब्रह्मा, विष्णु और महेश नामों से वे ही पहचाने जाते हैं। आदिकाल में एकमात्र भगवान श्री राम ही थे। एक होकर भी त्रिदेवो से प्रचण्ड शक्ति से प्रविष्ठ होने का सामर्थ्य रखने वाले हैं।

रामो हि परम ब्रह्म ,काल माया क्षर अतिगम्।
सम्पुर्ण अक्षरातीतं पुरुषोत्तम शद्वितम्।।

आदि रामायण

क्योंकि राम परम ब्रह्म हैं, काल, माया तथा नाशवान से परे हैं। यह पूरी तरह से अक्षरों से परे है और भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व द्वारा ध्वनित है।

अनन्तकोटिमंत्रैश्च तात्पर्येण सुसंस्तुताः ।
ब्रह्माविष्णुशिवाद्यैश्च दैवतैश्च समुपासिता।।

आदि रामायण

Bhagwati Sita ji is well praised by innumerable crores of mantras in their meaning. She is worshiped by infinite numbers of Brahma, Vishnu, Shiva and other devas

कोटिब्रह्माण्डलक्ष्मीनामांशिनी ब्रह्मरुपिणी।
आद्या श्रीर्भविता तस्य तोषणार्थं तु जानकी।।

आदि रामायण १.९.२

Whose fraction satisfies millions of Lakshmi of millions of universes, is the original Sri Janaki Ji herself.

स जायमानो भवता विसृष्टो यथाविधानं सकलं संसर्ज। ।

अद्भुत रामायण १५.६

हनुमान जी प्रार्थना करते हुए कहते हैं:- हे श्रीराम! विराट पुरुष अर्थात श्रीमन्नारायण तो आप से उत्पन्न होकर सब जगत को उत्पन्न करके सब विधान को उत्पन्न किया है।

Hanuman ji while praying says:- O Shri Ram! Virat Purush i.e. Shriman Narayan is born from you and has created the whole world and created all the laws.

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेद: प्राचेतसादासीत् साक्षात् रामायणात्मना।
वेद उपबृंहणार्थाय तावग्रहायत प्रभु: । ।

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण तथा नारद पंचरात्र अन्तर्गत अगस्त्य संहिता

वेदों के द्वारा जानने योग्य परंब्रह्म जब साक्षात् चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी के यहां अवतीर्ण होते हैं तब तब स्वयं वेद भी रामायण रुप में वाल्मीकि जी के मुख से अवतीर्ण होते हैं। अर्थात वेदों का उपबृहण हेतु स्वयं भगवान श्रीराम अवतीर्ण होते हैं।

पुराणे क्वचिद् अंशत्वं रामस्यापि श्रुतं च यत्।
अन्याभिसन्धिकम् तत् तु मुलमानविरोधतः।।
नहि तेन बिना शुन्यं रामेण परमं पदम्।
लीलाभि व्यक्ति तापर्याद् अवतार कृति श्रुते।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

पुराण में यहां कहीं भी श्रीराम को अंश रुप सुनाया जाता है, तो मुल प्रमाण में विरोध होता है। श्रीराम के बिना परम पद भी शुण्य है। उनके प्राकट्य के तात्पर्यार्थ से श्रीराम को अवतार कहा जाता है।

ब्रह्म एव आत्मा मनश्चैव देहश्च प्रकृतिस्तथा।
घनीभुतं हरेस्तेजो ब्रह्मेति परि कथ्यते।।

सुन्दरी तंत्र

Brahman is Atman and both mind and body is nature. Shri Ramchandra’s condensed luminance is bhagwan shri Hari and hari is called as brahman

स बाह्याभ्यन्तरं कृतस्न आनंद रस स्पन्दितः ।
मधुदधिरिवापारो राम एव परत्वः पुमान्। ।

महाशिव संहिता

श्रीराम ही परमपुरुष है जो बाहर से लेकर भीतर तक आनन्द रस से भरपुर है।

अनंत ब्रह्मा शतकोटि शंभुः नवकोटि दुर्गा पद्मं गणेशः ।
श्रीरामचन्द्रस्य ह्यनादि पुंसः भवन्ति सर्वे चरणारविन्दे। ।

नारद पंचरात्र

Infinite numbers of Brahma, hundred crores of Shambhu, nine crores of Durga, trillions of Ganesha, All are at the lotus feet of the eternal God Sri Ramachandra.

कल्पितं चार रूपं नित्यं द्विभुजम् एतत्।
परम रस सम्पन्नं ध्येयं योगिविदां वरैः ।।

महाशिव संहिता

चतुर्व्यूह आदि जितने रूप हैं, सब पर स्वरूप द्विभुज के अन्तर्गत रूप हैं।

सनतकुमार संहिता से उद्धृत
परात्परतरं तत्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम्।
मनसा वचसा नित्यं प्रणमामि रघुत्तमः ।।

सनतकुमार संहिता

I always bow to you, O best of the Raghus, who is the supreme tattvam , the true bliss with my mind and words

रमन्ते योगिनोन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परंब्रह्म अभीधियते।।
इत्याद्याः श्रुतयः प्राहु रामब्रह्मपरात्परम्।
रामः स्वयं परंब्रह्म तस्मात् श्रुतिप्रमाणतः।।

Sanatkumar samhita

The yogis rejoice in the ultimate true bliss of the Self of consciousness.Thus by the name of Ram he is referred to as the Supreme Brahman. The scriptures say that Ram is the Supreme Brahman and the Supreme Being. Ram himself is the Supreme Brahman therefore according to the Vedas.

विभुतिद्वय स्वामि त्वं सर्वावतारि त्व आदिकम्।
रामाख्य ब्रह्मण एव तत् सर्वं उपपद्यते।।

Sanatkumar samhita

Thou art the Lord of the two vibhuti (ie ekpadavibhuti and tripadvibhuti), Thou art the supreme aadi avtari of

all, the beginning. All that is attained by the Brahman called Ram.

नारायणम्जगन्नाथमित्यादिभिः विशेषणैः ।
विशेष्य राघवं रामं तं हि सर्वावतारिणाम्। ।

Sanatkumar samhita

Dasrathi Shri Ram is specially regarded as Narayana, Lord of the universe, etc., by adjectives among all avtaris.

अक्षरादिक शद्वानां वाच्यो रामोऽत्र कीर्तितः ।
अक्षरात् न परः कश्चिद् इति याज्ञवल्क्योऽब्रवीत्।
बृहदारण्ये पृच्छन्ति मैत्रयीस्वभार्य्यां प्रति।
रामः तद् अक्षरः त्वस्ति त्वमक्षरमित्युक्तितः । ।

Ram is mentioned here as expressive of letters and other words There is no one beyond the akshar brahman, said Yajnavalkya. In the great forest Maitreya asks about his wife:- Shri Ram is that syllable akshar brahman.

महतः परम् अव्यक्तम् अव्यक्तात् पुरुषः परः ।
पुरुषान्न परं कश्चिद् सा काष्ठा सा परागतिः । ।
इति श्रुति उक्तं पुरुषो रामो भवति नापरः ।
त्वमेव पुरुषोत्तम इति अस्माद् वचनान् मुने। ।

The unmanifest beyond the great , the man is beyond the unmanifest. There is no one beyond the purusha, that is ultimate destination. It is said in the scriptures that Shri Ram is the purusha and no other. From these words, O sage, Dasrathi Shri Ram is the Supreme Personality of Godhead.

श्रुतिभिः यत् परं तत्वं परंब्रह्मेति गीयते।
तदेव साक्षाद् रामोऽस्ति परं ब्रह्म सनातनम्

That Supreme Being which is sung by the scriptures as the Supreme Brahman. Dasrathi Shri Ram Ram is that very same Supreme Eternal Brahman

स रामो न तस्माद् अन्यः कश्चिद् भवितु मर्हति।
न तत् समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते। ।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः ।
इत्याद्याः श्रुतयः प्राहुर्यस्य नाम महद् यशः ।।
न तस्य क्वापि उपमा अस्ति न समश्च आधिकः तत्।
रामनाम्नो यशतुल्यं न कस्यापि नाम्नोयशः ।।

Sanatkumar samhita

That Ram deserves to be none other than him. It does not appear to be equal or greater.

There is no image of him whose name is great fame.

The vedas and scriptures say that his name is great fame. There is no likeness to Him, nor is there any equal to Him. There is no name equal to the fame of Dasrathi Shri Ram

सत्यं सत्यं पुनः सत्यम् एतद् इह उच्यते।
रामः सत्यं परं ब्रह्म रामात् किंचन न विद्यते।।

सनतकुमार संहिता

Truth, truth, truth again, this is what is said here.

Dasrathi shri Ram is the truth and the Supreme Brahman and there is nothing beyond Shri Ram.

इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यं नैवान्यद् उच्यते।
रामः सत्यं परं ब्रह्म रामात् किंचन् न विद्यते।।

Anand ramayan and agastya samhita

This is true, this is true, this is true, and nothing else is said. Dasrathi Shri Ram is the truth and the Supreme Brahman and there is nothing beyond Ram.

सर्वेषु मंत्रवर्गेषु श्रेष्ठ वैष्णवम् उच्यते।
गाणपत्येषु शैवेषु शाक्तसौरेष्वभीष्टदः ।
वैष्णवेष्वपि सर्वेषु राममन्त्रः फलाधिकाः।
गाणपत्यादि मन्त्रेषु कोटिकोटि गुणाधिकाः।।

Sanatkumar samhita

श्रीराम उवाच:-

कोटिब्रह्माण्डविधयः कोटिब्रह्माण्डशङ्कराः ।
कुर्वन्ति रक्षणं चास्य कोटिब्रह्माण्डविष्णवः ।।
यत्राहं क्रीडनं कुर्वे साकेतपरितो वने।
तस्यैव रक्षकाः सर्वे त्रिदशाः सेवका मम।।
इत्युक्त्वा स्वस्य लोकस्य महिमानं रघूत्तमः ।
विसृज्य वेधसं सायं स्वगृहान् समुपाययौ।।

~श्रीभुशुण्डि_रामायण १.२१.६१- ६३

श्रीराम कहते हैं:–

करोड़ों ब्रह्मांड के ब्रह्मा, करोड़ों ब्रह्मांड के शंकर, और करोड़ों ब्रह्मांड के विष्णु जो साकेत (अयोध्या) के चारों ओर जहाँ मैं (राम) खेलता हूँ उसकी रक्षा करने के लिए कार्यरत हैं। ये साकेतपुरी के रक्षक समस्त त्रिदेव मेरे सेवक हैं। अपने लोक की ऐसी महिमा बताते हुए रघुवर श्रीराम संध्या होते ही अपने गृह को चले गये।

Sri Rama says:–

Brahma of millions of universes, Shankara of millions of universes, and Vishnu of millions of universes who are

working to protect Saket (Ayodhya) where I (Rama) play. These infinite number of three gods(trimurti), the protectors of Saketpuri, are my servants. Explaining such glory of his world, Raghuvar Sri Rama went to his house in the evening.

यः कृष्णैकान्ततरो भक्तो रामभक्ति विवर्जितः ।
तस्मै न कथयेदेतां लीला विश्वस्य पावनीम्। ।
~श्रीमद् आदि रामायण १.२९.४७

यदि भगवान कृष्ण के एकांतिक भक्त हैं पर उनमें भगवान श्रीराम के प्रति भक्ति नहीं है, तो उसे भी श्रीरामलीला का कथन नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रीरामलीला अत्यंत पवित्र और विश्व को पवित्र करने वाली हैं।

If he is a solitary devotee of Lord Krishna but he does not have devotion to Lord Sri Rama, then he too should not recite Sri Ramleela because Sri Ramleela is very holy and purifies the world.

किं तैरेकान्त भावस्य रामभक्तिसुधोदधेः ।

ब्रह्मचर्यव्रतस्यापि रामकेलिरतस्य मे।।

~नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता ४.१८

जिसको अमृत समुद्र के समान रामभक्ति प्राप्त हो गई हो, उन अनन्य भक्तों को अन्य अवतार से प्रयोजन ही क्या? मैं ब्रह्मचर्यव्रत का सौगंध खाकर कहता हूं कि मैं केवल रामकेलि/ रामभक्ति में ही निमग्न रहता हूं।

What is the need of devotion of other incarnations to those exclusive devotees, who have attained devotion to Rama like the nectar ocean? I swear by celibacy that I am only immersed in Ramakeli/Ramabhakti.

श्रीराम एव रसोवैसः ॥३।।यस्यदासरसोवैपादः ॥४॥यस्य शान्तरसो वै शिरः ॥५॥वात्सल्यः प्राणः ॥६॥शृङ्गारो बाहू ॥८॥सख्यात्मा ॥९॥

~Atharvavediya Sakhyopnishad

श्रीराम उवाच:-

श्रृंगाररूपोह्यहम् एकम एवं परात्पर...उभौ च बाहु परिकीर्तितौ..। दासश्च पाद परिकीर्तितौ मे शान्तश्शिरश्चैव वदन्ति वेदाः। वात्सल्य प्राणोहृदयोमनश्च तथापि सख्यः परतः परात्मा।।

~lomesh samhita

Shri Ram's hands:- shringar ras

Shri Ram's feet:- daasya ras

Shri Ram's head:- shaant ras

Shri Ram's praan:- vatsalya ras

Shri Ram's atma:- sakhya ras

As said by vedas

राम राम तव पादपङ्कजं चिन्तयामि भवबन्धमुक्तये ।
वन्दितं सुरनरेन्द्रमौलिभिर्ध्यायितं मनसि योगिभिः सदा ।। ३७।।

~anand ramayan, maharamayan

Shiva says:- O Dasrathnandan Shri Ram, O Ram, I meditate upon Your lotus feet for liberation from the

bondage of material existence. It is worshiped by the crowns of the demigods and kings and is always meditated upon by the yogīs in their minds. 37. 37.

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रदाता रघुनायकः ।
श्रूयते सततं वेदे जानकीजानिरीश्वरः ॥
~ वाल्मीकि संहिता

वह रघुनाथ हैं जो धर्म अर्थ काम और मोक्ष प्रदान करते हैं। वेदों में यह बात निरंतर सुनने को मिलती है कि जानकीवल्लभ श्रीराम निरीश्वर हैं।

सीता परात्परशक्तिः वेदशास्त्रेऽति विश्रुता।
नारद पंचरात्र

Sita is the Supreme shakti and is very famous in the Vedas

ध्यायेज्चपुंडरीकाक्षं परंज्योति परात्परं।
राम एव परं ब्रह्म सच्चिदानन्द विग्रहः ।

राम एव परं तत्वं राम एव परा गतिः । ।

~brahmayamal tantra

And meditate on the lotus-eyed, the Supreme Light, the Supreme Being. Dasrathnandan Shri Ram is the Supreme Brahman, the embodiment of truth and bliss. Ram is the supreme essence and Ram is the supreme destination.

और कमल-नेत्र, परम प्रकाश, परम सत्ता का ध्यान करो। दशरथनन्दन श्री राम ही परम ब्रह्म, सच्चिदानंद स्वरूप हैं। राम ही परम तत्व हैं और राम ही परम गन्तव्य हैं।

कौशल्यानदनं राम केवलम् भव खंडनं।
गीयमानं परं तत्वं श्रुति ज्ञाति विशारदैः । ।

सदाशिव संहिता

Koushalya Nandan Shri Ram is the only granter of moksha and supreme tattvam sung by experts in vedas

हनुमान उवाच:-

रामोऽस्य जगतो हेतु सच्चिदानन्दविग्रहः ।

परमात्मा प्रभु साक्षी स एव गतिनृणाम्। ।

न तं विना मुक्तिदोऽन्यो नामृतस्याश्रयोऽपि च।

स एव च परं ब्रह्म वेदमुर्द्धसु गीयते। ।

आदि रामायण

Hanuman said:-

Saketlokadhi pati swaym bhagwan Shri Ram is the supreme cause of the world and the embodiment of truth and bliss.He is the Supreme Soul, the Lord, is the witness of all and destination of all men.There is no other giver of liberation except Him, nor even the refuge of immortality.He is the very same Supreme Brahman is sung in the Vedas.

जयति जनकजायाः पादपद्म मनोज्ञ हरिहरविधि वन्द्यं साधकानां सुसेव्यम्।

नखर निकर कान्त्यै मुद्रिका नुपराद्यैः रहरह हृदि मध्ये योग योगेश भाव्यम्। ।

हनुमान संहिता

जय हो! जनकनन्दिनी जु के मनोहर श्रीचरणों की सदैव जय हो! जो हरि, हर और ब्रह्मा आदि देवताओं के द्वारा वन्दनीय तथा साधकों द्वारा सेवनीय हैं, नखों किरणों की कान्ति से चमकते हुए, नुपुर तथा अंगुठियों से सुशोभित तथा योगिजनो द्वारा तथा स्वयं योग के द्वारा निरन्तर रात दिन हृदय से भावनीय हैं, उनकी सदा जय हो! विजय हो!

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम

सम्यम्वदन्ति निगमा बहुसोऽवतारान् सद्ब्रह्मणोभुवितले निजभक्तहेतोः ।

यस्तान्नमेदनुदिनं च सहस्रजन्म रामस्य चैव हितदासमुपासकस्सः ॥

Maha ramayan

शंकर भगवान कहते हैं:- निगमों अर्थात चारों वेदों ने परमात्मा के निज भक्त हेतु बहुत से अवतार जो वर्णित किए हैं उन सम्पूर्ण अवतारों को सहस्त्र (अर्थात अनन्त)जन्मों तक जब कोई अनुदिन नमन करता है तब जाकर वह श्रीरघुनाथ जी का सम्यक अर्थात सच्चा उपासक होता है ।

Lord Shankar says: - The Nigamas i.e. the four Vedas have described many incarnations of God for his own devotees. When someone bows to all those incarnations daily for a thousands (i.e. infinite) of births, then he becomes a true worshipper of Sri Raghunath Ji.

विकाररहितं राम त्वद् रूप चिन्मयं सदा पुनः सत्यात्सत्य परंसत्यं चैतन्यात् चैतन्य परंचैतन्य आनन्दानन्द परं आनंद नित्यान् नित्य परं नित्य द्विभुजं धनुर्धरं।

~श्रुतिवचन

Without change, O Rama, Thy form is conscious, always again from truth, truth beyond truth, consciousness beyond consciousness, bliss beyond consciousness, bliss beyond bliss, eternal, eternal, beyond eternal, two-armed, bow-bearing.

In Kaushika Grihya Sutra of Atharva Veda:

वित्तिरसि पुरिसि प्राजापत्यानां त्वाहं मयि पुष्टिकामो जुहोमि स्वाहा || कुमुद्वती पुष्करिणी सीता सर्वाङ्गःशोभिनी |कृषिः सहस्रप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि |उर्वी त्वाहुर्मनुष्याः श्रियं त्वा मनवो विदुः |आशयेऽन्नस्य नो ह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।। पर्जन्यपत्नि हरिण्यभिजातास्यभि नो वेद |कालनेत्रे हविषा नो जुषस्व तृप्तिं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे || याभिर्देवा असुरानकल्पयन् यानून् गन्धर्वान् राक्षसांश्च |ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रापोषं सुभगे रराणा |हिरण्यस्रक् पुष्करिणी श्यामा सर्वाङ्गःशोभिनी |कृषिहिरण्यप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि |अश्विभ्यां देवि सह संविदाना इन्द्रेण राधेन सह पुष्ट्या न आगहि || विशस्त्वा रासन्तां प्रदिशोऽनु सर्वाहोरात्रार्धमासमास आतंवा ऋतुभिः सह |अत्र देवानामुत मर्त्यानां भत्र प्रजानामुत मनुष्याणाम् ।।हस्तभिरितरासैः

क्षेत्रसाराधिभिः सह हिरण्येश्चेरा गोभिः प्रत्याष्टा श्रीरियं मयि ॥

Kaushika Girhya Sutra of Atharva Veda: Chapter 13

O Sita! You are the giver of wealth and nourishment to us, the offspring of Prajapati. I offer you an oblation with the desire for nourishment.

Adorned with lotuses and blooming with beauty in all limbs, you are the thousandfold embodiment of agriculture, O Sita, ever-pervasive. May you always remain with me.

People call you “Urvi” (the vast one), and the wise refer to you as Lakshmi. Grant us ample, health-giving, and powerful food that increases our vitality in our storehouses.

O lush and verdant companion of rain, look upon us with your grace, moved by our devotion. O you with the eye

of time (Kala), receive this offering, and grant satisfaction to our bipeds and quadrupeds alike.

The powers by which the gods subdue the asuras, Gandharvas, and rakshasas—may those forces, now pleased, approach us. O blessed one, grant us thousandfold nourishment.

May you extend in all directions, spreading prosperity throughout the day, night, and all the months, together with the seasons.

You sustain mortal beings, including humans and other creatures, as well as the gods. May Lakshmi (Sita), who is abundant with swift-moving vehicles like elephants and horses, storehouses of grain, precious gems like gold, and cattle wealth, remain with us continuously and unwaveringly.

श्रीमद् राम स्वरूपतो जनवपुर्भिन्नं न जातं क्वचित् मीनाद्या रघुनाथयादवपतिः सर्वेऽवतारा यथा।।

Brahma ramayan

हे समृद्ध राम! कहीं भी मनुष्य का शरीर उसके स्वरूप से अलग नहीं हुआ है, जैसे कि रघुनाथ के सभी अवतार रघुनंदन से अवतरित हुए, जैसे कि मीन अर्थात मत्स्य, कुर्म और अन्य।

जानक्यांश समुद्भुत श्रीभुलीलादि भेदतः प्रकाशं श्रीश्च भुधारं लीलालयभस्थितिं।

Brahma ramayan

जानकी जी की अंश श्री शक्ति, भु शक्ति, लीला शक्ति और आदि शक्तियां उत्पन्न होती है। प्रकाश श्री , भु अर्थात भुमि/आधार और लीला सृजन,संचालन,लय है

“This Shruti Solely Declares The Glory Of The Name Of Lord Rama.”

***रामो नाम महायशाः ।**

— Padma Purana 1.37.127

शक्तो रामो महायशाः ३९॥

—VR 5.51.39

***रामो महायशाः ।**

— Mahabharat 3.292.

***रामो नाम महायशाः ।**

— VR 7.59.62

***रामो विक्रमेण महायशाः ।**

— VR 3.31.23

***यशसश्चैक भाजनम् ।**

Lord Rama is the sole repository of fame.

— VR 4.15.19

भुः श्रीलीलेश्वरी देवी लक्ष्मी लक्षसमंथिताः ।
ब्रह्माण्डकोटिभाण्डस्थसर्ववस्तु महेश्वरी। ।

वशिष्ठ रामायण

Siya ju is ishwari of Shri Devi, Bhu Devi and Lila Devi and great goddess of all things in million of universes. She is surrounded by millions of laxmis

सिया जू ही श्री देवी, भू देवी और लीला देवी की ईश्वरी हैं और लाखों ब्रह्मांडों में सभी चीजों की महान देवी हैं। वह करोड़ों लक्ष्मियों से घिरी हुई है

युगे युगे श्रीरामस्य अवतारः भवन्ति हि।
कोटिश्चकार्यार्थं सिन्धौ बीचीव वै मुने।।

युग युग में लोक कल्याण हेतु श्रीराम के करोड़ों अवतार होते रहते हैं, जैसे समुद्र में लहरें आती रहती हैं।

In the ages, millions of incarnations of Sri Rama continue to take place for the welfare of the people, just as waves continue to come in the sea.

परान् नारायणात् चैव कृष्णात् परतराद् अपि।
उभयपरात्मनः श्रीमान् रामो दशरथिः स्वराट।।

Anand samhita

श्रीरसागरवासी नारायण से परे और गोलोक निवासी भगवान कृष्ण से भी परे , इन दोनों के परमात्मा साकेतलोकाधिपति सर्वेश्वरेश्वर स्वयं भगवान श्रीराम है। इनके परे कोई भी नहीं है।

Saketlokadhi pati Shri Ram is beyond ksheersagar nivasi bhagwan narayan and golok nivasi bhagwan krishna. There is nothing beyond him.

कोशलेंद्र पदपंकज मंजुलौ कोमलावज महेश वन्दितौ।
जानकी कर सरोज लालितौ चिन्तकस्य मन भृंग संगिनौ। ।

वृहदकोशल खंड

Koushalya Nandan Shri Ram’s lotusfeet is constantly worshipped by brahma and janaknandini’s lotus feet is constantly worshipped by sadhakas who are firm in their mind

Mentions of Saket loka in Purana —

• यत्र रामाज्ञया विद्वन्साकेतनगरीजनाः ।
अवापुः स्वर्गमतुलं निमज्ज्य परमांभसि ॥११६॥

—Skanda Purāna 2.8.6.116

• ऋक्षवानररक्षोभिर्निषादवरसैनिकैः ।
प्रविवेश महातेजाः साकेतं पुरमव्ययम् ॥२६८॥

—Padma Purāna 6.242.268

• अवापुस्ते कथं स्वर्गं साकेतनगरीजनाः ।
कथं च राघवो विद्वन्नेतत्कथय सुव्रत ॥११७॥

—Skanda Purana 2.8.6.117

• रामः शोकसमाविष्टः संगृह्य तनयावुभौ ।
मुनिभिः पार्थिवेंद्रैश्च साकेतं प्रविवेश ह ॥३३॥

—Padma Purāna 6.244.33

• तथा नृपवरः श्रीमान्साकेते शुशुभे तदा ।
इंदीवरदलश्यामं पद्मपत्रनिभेक्षणम् ॥१८॥

—रामं त्रिणेत्रं सोमार्धधारिणं शूलिनं परम् ।
भस्माद्धलितसर्वाङ्गं कपर्दिनमुपास्महे 12॥

—अथर्ववेद रामरहस्योपनिषत् २.३२

रामं त्रिनेत्रं सोमार्द्धधारिणं शूलिनं परम् ।।
भस्मोद्धूलितसर्वांगं कपर्दिनमुपास्महे ।।११६।।

—नारदीयमहापुराणम् ७३.१२६adma Purāna 6.243.18

शुद्धं द्वैतमतम् सिद्धि सेवकसेव्य भावकम्।
सामीप्य च सुमुक्तिं च नित्यं साकेतधामकम्। ।

महाशंभु संहिता

साकेत धाम में सामीप्य मोक्ष पाने वाले मुमुक्षु जन शुद्ध द्वैत मत वाले सेवक-सेव्य भाव होते हैं।

The seekers of liberation who attain proximity salvation in Saket Dham have pure dualistic and sevak-sevya bhavas.

आगते तु जगन्नाथे साकेतात् पृथ्वीतले।

वैकुंठगणपुरस्कृत्य लोकाल्लक्ष्मीरवातरत्।।

यामलसारोद्धार तंत्र पटल ३ श्लोक १४

शिवजी का कथन है:- दिव्यधाम साकेतलोक नायक भगवान श्री राम समस्त जगत् के नाथ होने के कारण जगतीतल में संकट को दूर कराने हेतु भुतल पर पधारे, तब सभी लीला परिकरों के साथ साकेत धाम की लक्ष्मी अर्थात आदि महालक्ष्मी जानकी जी भी इस भुमि पर अवतरित हुई।

यस्य अंश मात्र विभवः श्रीमन् नारायण स्वयम्।
यस्य अंशांशाः प्रजायन्ते अवतारा ह्यनेकधा।।
भुमा अपि पुरुषो यस्य सहस्त्र वदनः स्वराट।
अंश एव प्रकथितो विष्णु ब्रह्माण्ड विग्रह।।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते ब्रह्मणां कोटयः किल।।
इदम् श्रीरामवैकुंठम् नित्यं धाम प्रकीर्तितम्।
सहजानन्दिनीलोको व्यापकश्चित् सुखाकृतिः।
रक्षकाः परितस्तस्य कोट्य चक्रधारिणः।
चतुर्मुखाः कोट्यश्च कोट्यश्चैव शंकरा।।

भुषुण्डि रामायण ३.३३. २१-२५

श्री राम जिनकी शक्ति का एकमात्र अंश श्री नारायण (क्षीरसागर वैकुंठ निवाशी विष्णु) स्वयं हैं। उनके अंशों के अंश कई प्रकार से करोड़ों अवतारों में जन्म लेते हैं। भूमापुरूष जिसके एक हजार चेहरे हैं, वह भी एक अंश है। ब्रह्मांड में रहने वाले करोड़ों विष्णु (गर्भोदक्षयी विष्णु) और करोड़ों ब्रह्मा, करोड़ों रुद्र वास्तव में उनमें उत्पन्न और विलीन हो रहे हैं। यह श्री राम वैकुंठ उर्फ साकेत धाम का शाश्वत निवास घोषित किया गया है। जगत् नित्य आनन्दमय, सर्वव्यापी और दिखने में सुखदायी है। यह धाम करोड़ों विष्णु, चार मुख वाले ब्रह्मा और भगवान शिव से घिरा हुआ है।

अथ ह स किंपुरुष नाम वर्ष नवसहस्रयोजनविस्तीर्ण स्वीय अनादिसिद्ध राममुर्ति देवतोपास्यविराजमानपवनसुतोपासकमधिष्ठितमुपजाम्।

आनंद रामायण ७.१.८.१

श्रीरामदास:- इसके अनन्तर राम नौ सहस्र विस्तृत किम्पुरुष नामक देश को गए जहां बहुत से देवताओं तथा हनुमान जी की मुक्ति के साथ भगवान श्री राम की अनादि (नित्य) मुर्ति स्थापित थी।

श्रृणुध्वमृषयो युयमुचितः संशयोऽस्ति वः ।
परं किं न जानीथ महाशंभुः स पावनिः ।।
नित्यसत्वविभुतिस्थो राघवस्य परं प्रियं।
जानकीशोकसंहर्ता स्वामिभक्तः स्वभावतः ।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत वाल्मिकी संहिता

Listen, sages, you are rightly in doubt. But what do you not know that Mahashambhu is the holy one? He is in eternal satva vibhuti ie tripadvibhuti and is supremely dear to Dasrathi Ram. MahaSambhu destroyed the sorrow of Janaki as hanuman and was devoted to his master bhagwan shri Ramchandra by nature

आलोद्य सर्वशास्त्राणि चक्रुः पापविमोचनम्।
श्रीरामप्रतिमां कृत्वा समाराध्य यथा विधि।

Vaishnav agama antargat uma samhita

They rolled up all the scriptures and practiced the redemption of sin. Make an idol of Lord Rāma and worship it according to the prescribed rituals

रा शब्दोच्चारणे जाते वक्त्रात्पापस्य निर्गमः ।
मकार स्मरणे जाते भस्मभावं व्रजन्ति ते।।

Uma samhita

When the word Rā is uttered, sin comes out of the mouth. When they remember the syllable m, they turn to ashes.

कपिलो देवलो व्यास वसिष्ठः पुलह क्रतुः । ।
अत्रिश्चांगिरसः कण्वश्चयवनो नारदो भृगुः ।
अष्टावक्रः पुलस्त्यश्च कुम्भजः शंकरो रविः । ।
स्वयंभुर्वे तथा ब्रह्मा तथैवान्ये प्रजेश्वराः ।
पृथक् पृथक् संहिताभिः एकम् रामं अधीयते। ।

आदि रामायण ३.९.६-८

Kapila, Devala, Vyasa, Vasishta, Pulaha and Kratu, Atri, Angirasa, Kanva, Chayavana, Narada, Bhrigu, Ashtavakra, Pulastya, Kumbhajna, Shiva, Ravi, Svayambhuva Brahma and other lords of the creatures. All of them have written down their own different samhitas where one and only Shri Ram is studied

अकाम: सर्वकामो वा मोक्षकाम उदारधी:।
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम्।।

Shrimad Bhagwatam 2.3.10

अकामो धर्मकामो वा मोक्षकामोपि यो भवेत्।
अथवा सर्वकामो यः स विष्णुं पुरुषं यजेत्।।
स्कन्द पुराण

अकाम: सर्वकामो वा मोक्षकाम उदारधी:।
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत रघुनंदनम्।।
आनंद रामायण मनोहरकाण्डम् ९.१६८ख-१६९क

Shri Ram is known by parampurusha and vishnu

न यद् भासयति अर्कबिम्बप्रकाशो न चन्द्रो न वह्निर्न वा विद्युतोऽपि।

इदं भाति सर्वं यदेवानुभात् च प्रभो पादुकायुग्मम् अस्मि आश्रितस्तम्। ।

आदि रामायण

Bharat ji says:- I take refuge in bhagwan Shri Ram's pair of sandals from whom everything appears, that which is not illuminated by the sun, moon, fire and lightening.

नान्यथा लभते मर्त्यो दुर्लभां दैवतैरपि।

रामभक्तिर्मुनिश्रेष्ठ कल्पकोटिशतैरपि। ।

आदि रामायण

Oh best of ascetics! Devotion to bhagwan shri ram is very rare even for devas for hundreds of thousands of kalpas.

हयग्रीवस्तथागस्त्यो मनुरत्रिचतुर्मुखः । । ३८१

कुबेरः कामदेवश्च पद्मबन्धु सुधिकरः ।

अहं हरिर्हरश्चैव नन्दीशश्च शतक्रतुः । । ३८२

शुको द्वापयणश्च वशिष्ठाद्यश्च योगिनः ।
नव योगीश्वराश्च याज्ञवल्क्यश्च गौतमः ।।३८३
जनकश्च तथान्ये च देवर्षिनरसत्तमा।
साक्षात् श्रीरामचन्द्रस्य नाममहात्मयवेदिनः ।।३८४
येषां तदेव सर्वस्वं प्राणपोषणमौषधम्।
~आदि रामायण १.११०

Hayagriva, Agastya, Manu, Atri four faced Brahma, Kubera, kaamdeva, padmabandhu, sun god, Durvasa, Hari, Rudra, Nandisha Shiva, Satakratu, Shuka, Krishna Dvapayana ved vyas, Vasishta and other Yogis muni, new yogis, Yajnavalkya , Gautama, Janaka, devrishi Narad and greatest among men :- These know the greatness of the name of Sri Ramachandra as the medicine that sustains their lives.

अति बल मधु कैटभ जेहिं मारे।
महाबीर दितिसुत संघारे।।
जेहिं बलि बाँधि सहस भुज मारा।
सोइ अवतरेउ हरन महि भारा।।

Ramcharitmanas yudhkhand

जिन्होंने (विष्णु रूप से) अत्यंत बलवान मधु और कैटभ (दैत्य) मारे और (वराह और नृसिंह रूप से) महान् शूरवीर दिति के पुत्रों (हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु) का संहार किया; जिन्होंने (वामन रूप से) बलि को बाँधा और (परशुराम रूप से) सहस्रबाहु को मारा, वे ही (भगवान) पृथ्वी का भार हरण करने के लिए (राम रूप में) अवतीर्ण (प्रकट) हुए

तम् आदिपुरुषं ज्ञात्वा परंब्रह्म स्वरुपिणम्।
तुष्टाव वैदिकैः शद्वैः स्वयं दशरथो नृपः।।
आदि रामायण १.१०.८

Knowing Shri Ram as the original Person (aadi purusha), the Supreme Brahman in His own form, King Dasaratha himself praised him with all Vedic hymns.

विदिते परम तत्वे तदा मुक्ति प्रजायते।
ताल वृतेन किं कार्यं लब्ध्वा मलयमारुतम्।।
~बृहद् रामायण

श्रीकृष्ण की भक्ति हुई साथ ही श्रीसीताराम परम तत्व का लाभ होने पर, संसार से निवृत्त होता है, जिस प्रकार किसी

मनुष्य को शीतल, मन्द, सुगन्ध, मलयाचल की वायु मिलने पर, पंखा की आवश्यकता नहीं रहती।

After worshipping Sri Krishna and attaining the ultimate truth of Sri Sitaram, one retires from the world just as a man does not need a fan after getting the cool, gentle, fragrant breeze of Malayachal.

सर्वशक्तिकलानाथं द्विभुजं रघुनन्दनम् ।
द्विभुजाद्राघवान्नित्यात्सर्वमेतत्प्रवर्तते ।

~आनंद संहिता तथा सुन्दरी तंत्र

दो भुजाओं वाले श्री रघुनन्दन सभी शक्तियों और कलाओं के स्वामी हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दो भुजाओं वाले राघव से सक्रिय होता है।

Two-armed, Shri Raghunandan is Lord of all powers and kalas, Entire universe is activated From the process of the two-armed Raghava.

स एव सच्चिदानन्दो विभुतिद्वयनायकः ।
वात्सल्याद्यद्भुत अनंतः कल्याणगुणवारिधिः ।।

~महारामायण तथा नारद पंचरात्र अन्तर्गत वशिष्ठ संहिता

Shri Ram is the only vibhuti dwaya lord who has infinite welfare qualities like affection, seriousness etc.

श्रीराम ही एकमात्र विभुतिद्वय नायक जिनमें वात्सल्य, गाम्भीर्य आदि अनंत कल्याण गुण है।

रामचन्द्रगुणग्राम गुणिनो गणयन्ति ये।
सर्वमभोनिधेरंभः कुंभेनाकलयन्ति ते।।
राम गीता १.१२

One who wants to count the qualities of Lord Shri Ram, wants to measure the water of a huge ocean with a pot.

जो भगवान श्री राम का गुणो का गणना करना चाहता है, वो मोनो विशालकाय समुद्र का जल एक घड़े से मापना चाहता है।

कौशल्येयो रघुनाथ एव महापुरुष।
तस्य नाम रुप लीला धाममना वचनाद्यविषया।

~अथवर्ण श्रुति

Koushalyanandan Shri Raghunath is alone mahapurush. His name, form, pastimes and abode are beyond words.

कौशल्यनन्दन श्रीरघुनाथ अकेले ही महापुरुष हैं। उनका नाम, रूप, लीला और निवास वचनो से परे तथा अविशय है।

इच्छाज्ञानक्रियाश्चैव विद्याविद्या परापरा।

सदसद्व्यक्तिरव्यक्तं त्वच्छेक्तखिलाः कलाः ।।

राम गीता १.५३

श्रीराम की शक्ति मात्र से इच्छा, ज्ञान, क्रिया, विद्या, अविद्या, सत्, असत्, व्यक्त, अव्यक्त आदि कलाएं उत्पन्न होती हैं।

The power of Sri Rama alone produces the arts, desire, knowledge, action, knowledge, ignorance, truth, falsehood, manifest, unmanifest and infinite kalas

बंधको भवपाशेन भवपाशात्प्रमोचकः ।

कैवल्यदः परं ब्रह्म विष्णुरेव सनातनः ।।

राम गीता , स्कन्द पुराण

भगवान श्रीराम ही एकमात्र परंब्रह्म हैं और वे ही कैवल्य मोक्ष प्रदान कर सकते हैं।

शास्त्रं न तत् स्यात् नहि रामः काव्यं न तत् स्यात् नहि रामः ।

न सा संहिता यत्र न रामदेवो न सा स्मृतिर्यत्र न रामचन्द्रः । ।

~पद्मपुराणम्

वो शास्त्र शास्त्र नहीं, वो काव्य काव्य नहीं, वो संहिता संहिता नहीं और वो स्मृति स्मृति नहीं जहां श्रीराम नहीं है।

That scripture is not scripture, that poetry is not poetry, that Samhita is not Samhita and that Smriti is not Smriti where there is no Sri Ram.

न संहिता सा नहि यत्र रामो, न सोऽस्ति वेदो नाहि यत्र रामः ।

स नेतिहासो नहि यत्र रामः । न तत् पुराणं नहि यत्र रामः ।।

~नारद पंचरात्र

वो संहिता भी संहिता नहीं है, वो वेद वेद नहीं है, वो इतिहास इतिहास नहीं है और वो पुराण पुराण नहीं है जहां श्रीराम नहीं है।

That Samhita is not Samhita, that Veda is not Veda, that itihaas is not itihaas and that Purana is not Purana where there is no Sri Ram

न तत् पुराणं नहि यत्र रामो यस्यां न रामो नहि संहिता सा।
स नेतिहासो नहि यत्र रामः काव्यं न तत् स्यात् नहि यत्र रामः ।।

~कोशलखंड

वो पुराण पुराण नहीं है, वो संहिता संहिता नहीं है, वो इतिहास इतिहास नहीं है और वो काव्य काव्य नहीं है जहां श्रीराम नहीं है।

That Purana is not Purana, that Samhita is not Samhita, that itihaas is not itihaas and that poetry is not poetry where there is no Sri Ram.

कपिलो देवलो व्यास वसिष्ठः पुलह क्रतुः ।।
अत्रिश्चांगिरसः कण्वश्चयवनो नारदो भृगुः ।

अष्टावक्रः पुलस्त्यश्च कुम्भजः शंकरो रविः।।
स्वयंभुर्वे तथा ब्रह्मा तथैवान्ये प्रजेश्वराः।
पृथक् पृथक् संहिताभिः एकम् रामं अधीयते।।

आदि रामायण ३.९.६-८

Kapila, Devala, Vyasa, Vasishta, Pulaha, Kratu, Atri, Angirasa, Kanva, Chayavana, Narada, Bhrigu, Ashtavakra, Pulastya, Kumbhajna, Shiva, Ravi, Svayambhuva Brahma and other lords of the creatures. All of them have written down their own different samhitas where one and only Shri Ram is studied

कपिल, देवल, व्यास, वशिष्ठ, पुलह और क्रतु, अत्रि, अंगिरस, कण्व, च्यवन, नारद, भृगु, अष्टावक्र, पुलस्त्य, कुंभजना, शिव, रवि, स्वायंभुव ब्रह्मा और प्राणियों के अन्य स्वामी। इन सभी ने अपनी-अपनी अलग-अलग संहिताएँ लिखी हैं जिनमें केवल और केवल श्री राम का ही अध्ययन किया गया है

एकं चापि परं समस्तं जगतां ज्योतिर्मयं कारणं प्रागन्ते च
विकार शुन्यगुणं निर्नामरुपं च यत्।

तत् श्रीरामपदारविन्दनखरप्रान्तस्य तेजोमलं प्राज्ञा वेदविदो वदन्ति परं तत्त्वं परं नास्त्यतः ।।

~परमसिद्धांत संहिता

The Light that emnates from nails of lotus feet of Shri Ram is hailed by scholars of vedas as parambrahman, the supreme cause of all cause that is nirguna, nirnaam, Nirrupa and supreme tattvam. There is nothing beyond it.

कोटिकन्दर्पलावण्यश्चण्डिकानन्तविक्रमः ।
कोटि इन्द्रवद्विलासी च कोटि ब्रह्माण्ड नायकः ।।

Bharadwaj ramayan

Shri Ram has beauty of millions of cupid aka kamadeva and the infinite prowess of Chandika. He has luxurious of million times of Indra and is the hero of millions of the universes.

राघवदेवभक्ति सत्या च समस्तं जगद्धि स्वप्न मिथ्या

सनतकुमार संहिता

श्रीराम भक्ति ही सत्य है, समस्त जगत स्वप्न मिथ्या है।

रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ॥

रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ॥

Rig Veda 6.47.18

English translation:

“Indra, (form of parabrahman Ram), has assumed various forms, and such is his form as that which (he adopts) for his manifestation; Indra, multiform by his illusion, proceeds (to his many worshippers), for the horses, yoked to his car are a thousand.”

Rāsa Līlā performed by Sri Krishna is Anukriti(replay) of the Rāsa Līlā which is already performed by Sri Rāmachandra at Pramodavana.

तस्याप्यनुकृतिं कृष्णश्चक्रे वृन्दावने वने ।

Bhushundi Rāmāyana.Purva.25/30

The Rāsa Līlā performed at Vrindāvana by Sri Krishna is but an anukriti(imitation) of the Rāsa Līlā performed by Sri Rāmachandra at Pramodavana.

इति चांशकला सर्वे रामस्तु भगवान स्वयम्।
यतोविनिर्गतश्चांशाः विस्फुल्लिंगास्वपि प्रभा।।
महारामायण

All other incarnations are Ansha Kala of the Lord. Sri Rama is God Himself. Just as many sparks come out of burning fire, so all incarnations arise from Lord Rama Himself.

दासेषु साधुष्वमरेषु सत्क्रियां कृत्वावतीर्णोऽसि यदादिपूरुषः ।
तदेव दृश्योऽसि न चेत्तु मादृशै र्मर्त्यैः सुखाद् यो भगवान् स्वयम्प्रभुः ॥५॥

Bhushundi Ramayana: Purva Khanda: Chapter 10: Verse 15

“You have descended, O Adi Purusha, to bestow honor upon devotees, saints, and even the gods. If not for your visible form, how could mortal beings like us experience the bliss of seeing you, the self-luminous Bhagavan?”

राम एव घनस्तेजो ब्रह्मैव व्यापक त्वात् व्यापक एवं साक्षिणः निराकारो सुक्ष्म त्वात् सुक्ष्मतरो चेतन त्वात् चेतनकरो बाह्यांतर प्रकाशरुपेण एकैव इति श्रुति।

राम ही घन तेज है, सर्वव्यापक ब्रह्म है क्योंकि वह व्यापक है, इस प्रकार साक्षी निराकार है क्योंकि वह सूक्ष्म है, सूक्ष्म चेतन है क्योंकि वह चेतन है, और वह बाहरी और आंतरिक प्रकाश के रूप में एक है।

Shri Ram is the condensed effulgence, the all-pervading Brahman because he is pervasive, thus he is the witness formless because he is subtle, he is the subtle conscious because he is conscious, and he is one as external and internal light.

ब्रह्मैव आत्मामनश्चैव देहश्च प्रकृतिस्तथा।

घनीभुत हरेस्तेजो ब्रह्मेति परिकथयते।।

सुन्दरी तंत्र

ब्रह्म ही आत्मा, मन, देह तथा प्रकृति है। हरि अर्थात राम का घनीभुत तेज है और वह ही सर्वत्र व्याप्त ब्रह्म कहलाता है।

Brahman is the soul, mind, body and nature. Hari, or Shri Ram's condensed effulgence and He is called the omnipresent Brahman.

विकाररहितं राम त्वद् रुप चिन्मयं सदा पुनः सत्यात्सत्य परंसत्यं चैतन्यात् चैतन्य परंचैतन्य आनन्दानन्द परं आनंद नित्यान् नित्य परं नित्य द्विभुजं धनुर्धरं।

श्रुति

Without change, O Rama, Thy form is conscious, always again from truth, truth beyond truth, consciousness beyond consciousness, bliss beyond consciousness, bliss beyond bliss, eternal, eternal, beyond eternal, two-armed, bow-bearing.

महाशंभु उवाच:-

द्विभुज अवयवोद्दक्तः शरकोदंड मंडितः ।
इति रामो विग्रहवान् परं ब्रह्म अभीधियते।।
भुक्ति मुक्ति प्रदानार्थं साधकानां पुनः पुनः ।
आनंदवाचको शद्व विभुति संप्रयोजितः ।।
~सदाशिव संहिता

Mahashambhu said:-

The two-armed god is and decorated with arrowheads. Thus the form of Ramchandra is addressed as the Supreme Brahman. To grant enjoyment and liberation to the seekers again and again. The word denoting bliss is applied to the Lord Raghunandan

श्रीराम उवाच:-
कोटिब्रह्माण्डविधयः कोटिब्रह्माण्डशङ्करः ।
कुर्वन्ति रक्षणं चास्य कोटिब्रह्माण्डविष्णवः ।।
यत्राहं क्रीडनं कुर्वे साकेतपरितो वने।
तस्यैव रक्षकाः सर्वे त्रिदशाः सेवका मम।।
इत्युक्त्वा स्वस्य लोकस्य महिमानं रघूत्तमः ।
विसृज्य वेधसं सायं स्वगृहान् समुपाययौ।।

~श्रीभुशुण्डि_रामायण १.२१.६१- ६३

श्रीराम कहते हैं:–

करोड़ों ब्रह्मांड के ब्रह्मा, करोड़ों ब्रह्मांड के शंकर, और करोड़ों ब्रह्मांड के विष्णु जो साकेत (अयोध्या) के चारों ओर जहाँ मैं (राम) खेलता हूँ उसकी रक्षा करने के लिए कार्यरत हैं। ये साकेतपुरी के रक्षक समस्त त्रिदेव मेरे सेवक हैं। अपने लोक की ऐसी महिमा बताते हुए रघुवर श्रीराम संध्या होते ही अपने गृह को चले गये।

Sri Rama says:–

Brahma of millions of universes, Shankara of millions of universes, and Vishnu of millions of universes who are working to protect Saket (Ayodhya) where I (Rama) play. These infinite number of three gods(trimurti), the protectors of Saketpuri, are my servants. Explaining such glory of his world, Raghuvar Sri Rama went to his house in the evening.

यः कृष्णैकान्ततरो भक्तो रामभक्ति विवर्जितः ।
तस्मै न कथयेदेतां लीला विश्वस्य पावनीम्। ।

~श्रीमद् आदि रामायण १.२५.४७

यदि भगवान कृष्ण के एकांतिक भक्त हैं पर उनमें भगवान श्रीराम के प्रति भक्ति नहीं है, तो उसे भी श्रीरामलीला का कथन नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रीरामलीला अत्यंत पवित्र और विश्व को पवित्र करने वाली हैं।

If he is a solitary devotee of Lord Krishna but he does not have devotion to Lord Sri Rama, then he too should not recite Sri Ramleela because Sri Ramleela is very holy and purifies the world.

किं तैरेकान्त भावस्य रामभक्तिसुधोदधेः ।
ब्रह्मचर्यव्रतस्यापि रामकेलिरतस्य मे।।

~नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता ४.१८

जिसको अमृत समुद्र के समान रामभक्ति प्राप्त हो गई हो, उन अनन्य भक्तों को अन्य अवतार से प्रयोजन ही क्या? मैं ब्रह्माचर्यव्रत का सौगंध खाकर कहता हूं कि मैं केवल रामकेलि/ रामभक्ति में ही निमग्न रहता हूं।

What is the need of devotion of other incarnations to those exclusive devotees, who have attained devotion to Rama like the nectar ocean? I swear by celibacy that I am only immersed in Ramakeli/Ramabhakti.

श्रीराम एव रसोवैसः ॥३॥ यस्यदासरसोवैपादः ॥४॥यस्य शान्तरसो वै शिरः ॥५॥वात्सल्यः प्राणः ॥६॥शृङ्गारो बाहू ॥ ८॥सख्यात्मा ॥९॥

~Atharvavediya Sakhyopnishad

श्रीराम उवाच:-

श्रृंगाररूपोह्यहम् एकम एवं परात्पर...उभौ च बाहु परिकीर्तितौ..। दासश्च पाद परिकीर्तितौ मे शान्तश्शिरश्चैव वदन्ति वेदाः। वात्सल्य प्राणोहृदयोमनश्च तथापि सख्यः परतः परात्मा।।

~lomesh samhita

Shri Ram’s hands:- shringar ras

Shri Ram’s feet:- daasya ras

Shri Ram’s head:- shaant ras

Shri Ram’s praan:- vatsalya ras

Shri Ram’s atma:- sakhya ras

As said by vedas

Upbrahmana of manduka upanishad

यथा नद्यः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपतः ।

तथा विद्वान्कला देवप्रतिष्ठायां च संक्षयम्। ।

आनंद रामायण मनोहर खंड ४.२१३

नारायणं जगन्नाथं इत्यादिभिः विशेषणैः ।

विशेष्य राघवं रामं तं हि सर्वावतारिणम्। ।

~सनतकुमार संहिता

नारायण, जगन्नाथ, हरि आदि ये सब श्रीराम के विशेषन शद्ब है। और श्रीराम इन शद्बों के विशेष्य तथा सब के अवतारी हैं।

तत्वं विद्यार्थिनो नित्यं रमन्ते चित्सुखामनि।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्म अभिधीयते। ।

~narad pancharatra antargat hiranyagarbh samhita and Anand ramayan

तत्व विज्ञान की कामना करने वाले साधक जिस चेतना में नित्य रमण या आनन्द लेते हैं, वो परंब्रह्म को राम पद के द्वारा निरूपण किया जाता है।

The the seeker who desires the tattva science in which , constantly enjoys in consciousnes, that parabrahman is described by the term “Ram”.

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रदाता रघुनायकः ।

श्रूयते सततं वेदे जानकीजानिरीश्वरः ।।

~ वाल्मीकि संहिता

वह रघुनाथ हैं जो धर्म अर्थ काम और मोक्ष प्रदान करते हैं। वेदों में यह बात निरंतर सुनने को मिलती है कि जानकीवल्लभ श्रीराम निरीश्वर हैं।

कौशल्यानदनं राम केवलम् भव खंडनं

गीयमानं परं तत्वं श्रुति ज्ञाति विशारदैः । ।

सदाशिव संहिता

Koushalya Nandan Shri Ram is the only granter of moksha and supreme tattvam sung by experts in vedas

शिव उवाच –

पुराणे क्वचिदंशत्वं रामस्यापि श्रुतं च यत्।

अन्याभिसन्धिकं तत्तु मूलमानविरोधतः ।।

नहि तेन विना शून्यं रामेण_परमं पदम्।

लीलाभि व्यक्तितात्पर्यादवतारकृतिश्रुते।।

अवतारित्वमस्य एव रामस्याप्यवतारता।

आदित्यवद्विरोधोऽत्र न स्वरूपभिदा क्वचित्।।

– श्रीशिव संहिता ५.४.१९-२१

भगवान् शिव देवी पार्वती से कहते हैं –

कहीं-कहीं पुराणों में श्रीराम को अंश भी बोला गया है, वह अन्य गौण उद्देश्यों से बोला गया है जो मूल सत्य से विरोध खाता है। परमपद स्वरूप श्रीराम के बिना समस्त जगत शून्य है, उनकी लीलाओं से ही समस्त अवतार प्रकट होते हैं इसलिए श्रीराम ही एकमात्र अवतारी है यही व्यक्ति को शास्त्रों का परम तात्पर्य समझना चाहिए।

Lord Shiva says to Goddess Parvati –

Sometimes in the Puranas, Sri Rama is also called ansh, he is called for other secondary purposes which contradict the basic truth. Without the supreme form of Sri Rama, the entire world is empty. All incarnations are revealed by His deeds. Therefore, Sri Rama is the only Incarnator. This person should understand the ultimate meaning of the scriptures.

महाशंभु सहस्रस्य महाब्रह्मा शतस्य च।
सृष्टिस्थितिलयानां च कर्ता श्रीरघुनंदनः।।
~हनुमान संहिता

सहस्र महाशंभु और शत महाब्रह्मा के सृजनकर्ता,
संचालनकर्ता तथा लयकर्ता साकेतलोकाधिपति श्रीराम हैं।

The creator, operator and rhythmist of thousand of Mahashambhu and hundred of Mahabrahma is Saketlokadhipati Shri Ram.

महाविष्णु सहस्राणाम् महाशम्भु शतस्य च।
सृष्टिस्थितिलयाञ्च कर्ता रघुनंदन।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

अनंत सहस्र महाविष्णुओं और अनंत शत महाशंभुओं के सृजनकर्ता, संचालनकर्ता, लयकर्ता साकेतलोकाधिपति श्रीराम हैं।

Saketlokadhi pati Shri Ramchandra is creator, sustainer and destroyer of infinite thousands of mahavishnu and infinite hundreds of mahasambhu

रामन्देवं परम्ब्रह्म भगवन्तं पुरुषोत्तमम् ।
राममेवपरं प्राप्यं मन्वानाः पुरुषास्तुये।।
तद्भक्तिज्ञानदातारमुमे मां समुपाश्रिताः ।
आचार्यत्वेन सेवन्ते ते तरन्ति भवाम्बुधिम्।।
मामेवं परमत्वेन भजन्तोऽपि द्विषन्ति ये।
न ते मुक्तिपदं यान्ति भूतयोनय एव ते।।
आचार्यं सर्वदेवानां ब्रह्माणं च भजन्ति ये।
रामप्रापक बुद्ध्यो ते मोक्षं यान्ति सुदुर्लभम्। ।

Narad pancharatra antargat shiva samhita 5.20.49-51

शिव जी कहते हैं:- जो श्रीराम को ही परम-देव, परमब्रह्म, भगवान् और पुरुषोत्तम मानकर एवं उन्हें ही परम प्राप्य मानकर उनकी उपासना करते हैं, वे ही सही अर्थों में पुरुष कहलाते हैं। ऐसे भक्त जो भक्ति और ज्ञान के दाता श्रीराम का आश्रय लेते हैं और आचार्य भाव से उनकी सेवा करते हैं, वे भवसागर को पार कर जाते हैं। जो लोग मुझे (शिव को) परम मानकर भी श्रीराम से द्वेष भाव रखते हैं, वे मुक्ति को प्राप्त नहीं कर पाते और बार-बार जन्म-मरण के चक्र में फंसते हैं एवं भूत-प्रेत बनते हैं। जो श्रीराम को ही समस्त देवों के आचार्य और परम ब्रह्म मानकर उनकी भक्ति करते हैं, वे बुद्धिमान श्रीराम को प्राप्त करने के इच्छुक अत्यंत दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मा स ब्रह्मणां कर्ता प्रजापतिपतिगर्ति ।

रुद्राणां स पती रुद्रो रुद्रकोटिनियामकः ॥१०॥

चन्द्रादित्य सहस्त्राणि रुद्र कोटि शतानि च ।

इन्द्रकोटि सहस्राणि विष्णु कोटि शतानि च ॥११॥

ब्रह्मकोटि सहस्त्राणि दुर्गाकोटि शतानि च ।

महाभैरवकल्पानि कोट्यर्बुदशतानि च ॥१२॥

अवतार सहस्त्राणि भक्त कोटि शतानि च ।

गन्धर्वानां सहस्त्राणि देव कोटिशतानि च ॥१३॥

वेदाः पुराण शास्त्राणि तीर्थ कोटि शतानि च ।

देवब्रह्ममहर्षीणां कोटि कोटि शतानि च ।

सततं यं निषेवन्ते स श्रीराम इतीरितः ।।

Narad pancharatra antargat shiva samhita 5.3.30-34

1000 करोड़ों सूर्य, 1000करोड़ो चन्द्र, 100 करोड़ रुद्र, 1000 करोड़ों इन्द्र, 100 करोड़ों विष्णु, 1000 करोड़ों ब्रह्मा, 100 करोड़ों दुर्गा और 100 करोड़ों महाभैरव, हजारों हज़ारों अवतार, 100 करोड़ों भक्त, 100 करोड़ों गंधर्व, 40वेद, पुराणों, शास्त्रों, 100 करोड़ों देवता, महर्षि निरंतर साकेतलोकपति श्री राम के चरण कमलों की पूजा करते हैं।

1000 crores of surya chandras,100 crores of rudras,1000 cores of indras,100 crores of vishnus,1000 crores of Brahmas,100 crores of Durgas and 100 crores mahabhairavas, thousands of avtars,100 crores of bhaktas, 100 crores of gandharvas, vedas, puranas, shastras, 100 crores of devas, maharishi constantly worships the lotus feet of saketlokadhi pati Sri Ram

आसीनं तमयोध्यायां सहस्त्र स्तम्भमण्डिते ।
मण्डपे रत्नसंज्ञे च जानक्या सह राघवम् ।।२३।।
मत्स्यः कूर्मः किरिर्नैको नारसिंहोप्यनेकधा ।

वैकुण्ठोपि हयग्रीवो हरिर्वामनकेशवौ ॥४॥
यज्ञ नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोपि सः ।
देवकीनन्दः कृष्णो वासुदेवो बलोपि च ॥५॥
पृष्णिगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोपि च ।
वासुदेवः परोनन्तः सङ्कर्षण इलापतिः ॥६॥
प्रद्युम्नोप्यनिरुद्धश्च व्यूहा सर्वेपि सर्वदा ।
रामं सहोपतिष्ठन्ते रामादेशव्यवस्थिताः ॥७॥
एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः ।
तेषामैश्वर्यदातृत्वान्मूलत्वात्ते निरीश्वराः ॥८॥

Narad pancharatra antargat shiva samhita 5.2.23-28

हजारों रत्न से शोभित रत्नमण्डप में श्रीनित्यअयोध्या में जानकी के सहित रामजी को बैठे हुए हैं । सामने मत्स्य, कुर्म, वाराह, नरसिंह, अनेक वैकुंठ भगवान, हयग्रीव, हरि, केशव, वामन, यज्ञनारायण, धर्मपुत्र नरश्रेष्ठ, देवकीनंदन कृष्ण, वासुदेव मुर्ति, बलदेव, पृष्निगर्भ, मधुसुदन, गोविंद, माधव, वासुदेव, पर प्रभु अनंत, संकर्षण, लक्ष्मीपति, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, सब चतुर्व्युह सर्वदा श्रीराम जी के सामने खड़े हैं आज्ञा में स्थित होकर राम नाम को जपते हैं। इन सब को ऐश्वर्य प्रदान करने वाले श्रीराम स्वयं मुल निरीश्वर हैं।

विष्णोः सर्वेऽवताराये स्वयं विष्णुश्च शाश्वतः ।
अहं ब्रह्मा च सिद्धाश्च सर्वे ते राममाश्रिताः ।।
रामाद् अन्यं न रामो सावाश्रितो गिरिनन्दिनि।
आद्यः कश्चित् परस्तस्मादाश्रयेत्तं स नास्ति सः ।।

Narad pancharatra antargat shiva samhita 5.19.12-13

विष्णु के सभी अवतार स्वयं सनातन विष्णु, मैं (शिव), ब्रह्मा और समस्त सिद्धगण सभी श्रीराम के आश्रित हैं। हे गिरिनन्दिनी ! श्रीराम के अतिरिक्त कोई अन्य राम(अर्थात रमन कराने वाला/आनंद देने वाला) भी अवलम्बन योग्य नहींहै। श्रीराम स्वयं आदि और परम तत्व हैं। उनसे परे कोई अन्य नहींहै, जिसे आश्रय देने योग्य माना जाए।

All the incarnations of Vishnu, Sanatan Vishnu himself, I (Shiva), Brahma and all the Siddhas are dependent on Shri Ram. O Girinandini! Apart from Shri Ram, no other Ram (i.e. one who makes others enjoy/gives joy) is worth depending upon. Shri Ram himself is the original and ultimate element. There is no one other than him who is worth depending upon.

रामाद् अन्यं परं श्रेष्ठं यो वै पाण्डित्यमात्रतः ।
संतप्तहृदयस्तस्य जिह्वां छिन्द्याम्यहं मुने। ।

Narad pancharatra antargat shiva samhita 5.4.38

शिव कहते हैं पार्वती से:- जो मनुष्य किसी अन्य को श्रीराम से ज्यादा श्रेष्ठ बोलता है, उसके वचन से हम संतप्त हृदय होकर उसकी जिह्वा का उच्छेदन करने में उद्यत रहते हैं।

Shiva says to Parvati:- We are filled with anguish at the words of the person who speaks of anybody else as superior to Lord Rama and are ready to cut off his tongue.

अवतारस्तु बहवः कला अंशविभूतयः ।
रामोधनुर्धरः साक्षात् सर्वेशो भगवान् स्वयम्।।

Narad pancharatra antargat shiva samhita 5.19.43

भगवान के विभिन्न कला, अंश और विभुति अवतार हुए हैं, पर दशरथनन्दन श्रीराम साक्षात् सर्वेश्वर भगवान हैं।

God has had various incarnations in his various forms, parts and glory, but Dasharathanandan Shri Ram is the Supreme God himself.

गीतानाम् सहस्रे द्वे स्तवराजो ह्यनुस्मृतः ।
यस्य कुक्षौ तु वर्तन्ते स वै रामः स्मृतः ।।

Narad pancharatra hiranyagarbh samhita antargat ramstav Raj

जिनके उदर में दो हजार गीताएँ (जिन्हें स्तवराज भी कहा जाता है) स्थित हैं, वे भगवान श्री राम हैं।

He in whose abdomen two thousand Gitas(which are also called as stavraj) are situated is bhagwan Shri Ram.

हे रावण त्वं श्रृणु भारतींमे लब्ध्वा बलं यस्य करोति माया।
ब्रह्माण्डवारं च बलाद्धि यस्य लोकेशवेकुण्ठमहेश्वराद्याः ।।
सृजन्ति रक्षन्ति हरन्ति लोकं तस्यैव रामस्य वरिष्ठदुतः ।
शेषो बलाद् यस्य दधाति मुर्ध्नि ब्रह्माण्डकोशं वनशैलसंयुतम्।।

नारायणो देवरिरक्षया च यो नाना अवतारान्विदधाति सर्वदा।

भगवान् यशानां च महाशठानां ददाति दण्डं जनशिक्षणार्थम्। ।

कठोरम् ईशस्य धनुर्हि भक्त्वा त्वया समेतस्य नृपव्रजस्य।

गर्व मुहर्तेन जहार यस्तं राम मम स्वामिनमाशु विद्धि।

अयोध्यानरेशस्य रामस्य तस्य त्वहं किऔकरस्त्वामुपेतः प्रवोद्धम्। ।

~हनुमद् रामायण

हनुमान:- हे रावण!मेरा बात सुनो! जिसके बल के द्वारा माया क्रिया करती है, जिसके बल से वैकुंठनाथ, महेश्वर, ब्रह्मा, आदि अन्य देवताओं ने ब्रह्माण्डों में सृजन, संचालन और संहार किया करते हैं, जिनके बल से अनंत शेषनाग अपने उपर ब्रह्माण्डो को संभाल हैं, मैं उन्हीं भगवान श्रीराम का वरिष्ठ दुत हूं। वे ही मनुष्य, देवताओं के रक्षा हेतु अनंत कोटि अवतार धारण कर राक्षसों और दानवों को दंड देते हैं। हे रावण! ये जान लो कि श्रीराम मेरे स्वामी हैं जिन्होंने मेरे गर्व को क्षण भर में नष्ट कर दिया और मैं उन्ही भगवान अयोध्या नरेश श्रीराम का दास हूं।

तम् आदिपुरुषं ज्ञात्वा परंब्रह्म स्वरुपिणम्।

तुष्टाव वैदिकैः शद्वैः स्वयं दशरथो नृपः ।।

आदि रामायण १.१०.८

Knowing Shri Ram as the original Person (aadi purusha), the Supreme Brahman in His own form, King Dasaratha himself praised him with all Vedic hymns.

यो न पूजयते देवं रघुनाथं रमापतिम् ।

स तेन ताड्यते दण्डैर्यमस्यापि भयावहैः ।।४।।

~ पद्मपुराण : पातालखण्ड : ३२

जो व्यक्ति सीतापति श्रीरामजी की पूजा नहीं करता है, उस व्यक्ति की यमराज डंडों से अच्छी तरह से कुटाई करते है ।

रामैव यस्य बहिरन्तर्पापकोटिनिर्वासनैकरणं शरणं जनानाम्।

कस्तस्य कोशलपुराधिपराजसुनोरन्यवतारनिवहस्तुलने प्रयातु।।

~आदि रामायण

जिन भगवान श्रीराम का नाम जीवमात्र के बाहर भीतर के अनन्त पापों का एकमात्र नाशक एवं साधक लोगों का रक्षक है, उन कोशलेन्द्रनन्दन भगवान श्रीराम की तुलना अन्य अवतार समुह कैसे कर सकते हैं??

How can other incarnations compare to Lord Rama, whose name is the only destroyer of infinite sins inside and outside the living entity and the protector of the seekers?

पुरा कृतयुगे केचित् जनाः सुकृतिनो नल।
सरहस्यं रामनाम सकृदास्वाद्य सद्गुरुं।।
भित्वाऽज्ञानतमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम्।
परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्ता विनाश्रमं।।

~आदि रामायण

हे नल! बहुत पहले सतयुग में कुछ सुकृती लोग सद्गुरुस्वरुप श्रीराम नाम को एक बार आस्वादान करके अज्ञानरीप अन्धकार समुह का नाश करके, अपने आत्मस्वरुप का प्रकाश करके बिना परिश्रम के ही परात्पर ब्रह्म श्रीराम में संलींन होकर सिद्धि को प्राप्त कर लिए।

O Nala! Long ago in Satyug, some pious people, by chanting the name of Sadgurusvarup Sri Rama once,

destroyed the darkness of ignorance, illuminated their self-image and merged in the Supreme Brahman Sri Rama without any effort and attained perfection.

सः तस्मिन् भवने भाति कोटिब्रह्माण्डनायकः ।
रामचन्द्रो धर्ममयः साक्षात् परात्पर प्रभुः ।।
~आदि रामायण १.११४.१५६

Ram shines in that building as the leader of the millions of universes. Ramachandra is the embodiment of righteousness and is himself the Supreme Lord.

तस्यात्मजोऽभवन् नाम्ना प्रह्लाद इति कीर्तितः ।
शान्तो दान्तो रामभक्तः क्षमावाननसूयकः ।।
Aadi ramayan 1.113.186

Hirankasyapu had a son named Prahlada. He was peaceful, self-controlled, forgiving and devoted to Ram(rambhakta)

देव! त्वद् भुजदण्डचण्डिम चमत्कारि प्रतापानल
ज्वालाजाल भयाद् इवाभिविशति क्षीराम्बुधिं माधवः । ।

Prashasti khand and maha nataka

Hanuman ji says:- God Shri Ramchandra! The bow in your arm is so miraculously dangerous and has fire of glory and network of flames, even in fear, Madhava(killer of madhu and kaitabha asura)enters the ksheersagar.

यथा अहं सच्चिदानन्दरूपः श्रीविग्रहं दधत्।
तथैव मत्प्रियां युयं सच्चिदानन्द विग्रहाः । ।

आदि रामायण १.५३.८

श्रीराम कहते हैं:- जैसा मेरा दिव्य शरीर सच्चिदानन्द स्वरूप है ठीक वैसे ही मेरी प्रिया भी सच्चिदानन्द स्वरूपा हैं।

Sri Rama says:- Just as my divine body is the form of true bliss, so my beloved is the form of true bliss.

जानकी उवाच:-

द्वय वनचरं ज्ञेयं तृतीय जलगोचरम्।
एकोदृष्टा तथा क्षोण्यादेवं सर्वेषु मार्जवम्। ।
महाविष्णुर्महाशम्भुर्महामाया जलेशया।
महाहंकृतिविश्वज्च कारणानि च सर्वशः । ।
गुणत्रय प्रकृतिश्च सुर्येन्दु हव्यवाहनाः ।
ब्रह्माविष्णुरुद्रश्च देवेन्दो ऋषयस्तथा। ।
स्थावरा जंगमाश्चैव ये चान्ये भुत भाविनः ।
एते तावत कलां योगिन् मम् राम स्वयं प्रभुः । ।

~सुन्दरी तंत्र

जानकी जी कहते हैं:- मत्स्य और कुर्म दो जलचर हैं, वाराह और नरसिंह दो वनचर हैं। वामन और परशुराम ब्राह्मण हैं। राम और कृष्ण क्षत्रिय है और बुद्ध और कल्कि ये दोनों मिलकर प्रसिद्ध दस अवतार है। महाविष्णु, महाशम्भु, महामाया, क्षीरसागर नारायण, महत् तत्व,अहंकार ये सब विश्व के कारण हैं, सत्व, रज,तमस त्रयगुण, सुर्य-चन्द्र-अग्नि, ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र, देवेन्द्र, ऋषिगण, स्थावर जंगम जो हुए हैं और जो होने वाला है, ये संपुर्ण प्रकृति श्रीराम की कलांश की ही विभुति है। हे योगीराज! मेरे राम स्वयं भगवान है।

Janaki says:- Matsya and Kurma are two aquatic animals, Varaha and Narasimha are two forest animals. Vamana and Parashurama are Brahmins. Rama and Krishna are

Kshatriyas and Buddha and Kalki are the famous ten incarnations. Mahavishnu, Mahashambhu, Mahamaya, Kshirsagar Narayana, Mahat Tattva, Ego are all the causes of the world, Sattva, Raja, Tamas Triguna, Sun-Moon-Agni, Brahma-Vishnu-Rudra, Devendra, Rishis, movable and immovable that have been and are to be vibhuti of kalansh of Shri Ram. O Yogiraja! My Ram is God Himself.

ब्रह्माण्डानाम् असंख्यानाम् ब्रह्माविष्णुहरात्मानाम्।
उद्भवे प्रलये हेतु राम एव इति श्रुतिः ।।

~sadashiva samhita

Saketlokadhi pati Shri Ram is alone creator and destroyer of brahma, vishnu and shiva of infinite universes.

कोटिकन्दर्पलावण्यश्चण्डिकानन्तविक्रमः ।
कोटि इन्द्रवद्विलासी च कोटिब्रह्माण्डनायकः ।।

Bharadwaj Ramayan

Shri Ram has crore times beauty of kamadeva, infinite times prowess of chandika and crore times opulence of Indra. He is lord of infinite universes

राम एव परंब्रह्म परमात्माभिधीयते।
रामात् परतरं नास्ति यत् किञ्चित् स्थुलसुक्ष्मकम्।।
रामस्यपुरुषो लोके सत्यधर्मयशोगुणैः।
समो न विद्यते कश्चित् विशेषस्तु कुतो पुनः।।

~maha ramayan

Shri Ramchandra is alone Supreme Brahman and known by paramatma. There is nothing bigger and smaller than him. There is no one in this loka who is equivalent to Shri Rambhadra in dharma, truth, opulence and attributes.

राम एव परं प्राहुः परमात्माभिधीयते।
रामात्परतरं नास्ति यत् किञ्चित् स्थुल सुक्ष्म च।।
ब्रह्माविष्णुशिवाः सर्वे इन्द्राग्नि वरुणो यमः।
सुर्यचंद्रश्च खं भुमिरवकाशे व्यवस्थितम्।।
दशहस्तांगुलयो दशपादादिद्वौ बाहु आत्मा वै पंचविंशकः।।

~अथवर्ण श्रुति

Shri Ramchandra is alone Supreme Brahman and known by supreme soul. There is nothing bigger and smaller than Shri Ram. Brahma, vishnu, shiva, indra, surya, chandra, varuna, yama, prithvi, akasha and all others are under his control. He is present asTen hand fingers, ten leg fingers and two handed twenty fifth soul.

राम एव परं ब्रह्म परमात्माभिधीयते।
रामात्परतरं नास्ति यत्किंचित्स्थूलसूक्ष्मकम्।।
ब्रह्मविष्णुशिवाः सर्वेइंद्रो निर्वरुणो यमः ।
सूर्यश्चंद्रश्च खं भूमिराकाशस्त्वनिलो ह्यपः ।।
सर्वे ते रामचंद्रस्य तेजसा संप्रतिष्ठिताः ।
भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वे रामसमुद्भवम्।।

~Parashar smriti quoted in omkarnath rachnavali

Meaning- Lord Śrī Rāmbhadrā is alone Supreme God, whatever is gross and subtle, none of them is beyond Śrī Rāma, that is why Brahma, Vishnu, Shiva all these and

Indra, Agni, Varun, Yama, Sun, Moon, Heaven, Earth, sky, wind, water, all these have been established by the glory of Lord Śrī Rāmachandrā and all these three times past, future and present and whatever will be born and has been born in these three times, all that has been born from Śrī Rām only.

एवं सर्वावतारेषु कलास्वंशेषु चाग्रणीः ।
उत्पत्तिविलय श्चैव रामो साकेतनायकः ।।
श्रीमदादि रामायण १.८९.१५

Thus saketlokadhi pati Shri Ramchandra is the foremost among all ansha , kala incarnations and is the origin and dissolution of all incarnations.

यत् पादाम्बुज विस्फुरन् नखमणि ज्योत्स्ना प्रकाशोद्यमम्।
साक्षाद् ब्रह्म परं यदन्तिमगिरा नेतीति वेदाः जगुः ।।
Adi ramayan 1.141.84

Vedas call parabrahman is light coming from nails of feet of bhagwan Shri Ramchandra as neti neti (not that, not that).

यावन्ति सन्ति रुपाणि विष्णोरमिततेजसः ।
तावन्ति तव पुत्रस्य परंब्रह्मस्वरुपिणः । ।
~श्रीमदादि रामायण १.१३.९१

जितने भी रूप अत्यन्त तेजस्वी भगवान विष्णु के हैं, वे सब रूप आपके पुत्र परब्रह्म श्रीराम का है।

चैत्रमासे नवम्यां तु शुक्लपक्षे रघुद्वह।
प्रादुरासीत् परब्रह्म परब्रह्मैव केवलम्। ।
~सनतकुमार संहिता

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के नवमी तिथि पर स्वयं परंब्रह्म श्रीराम अवतरित होते हैं।

On the ninth day of the Shukla Paksha of the month of Chaitra, Parambrahman Sri Ram Himself descends.

चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु नवम्यां श्रीपुनर्वसौ।
अभिजिन्नामयोगेऽसौ कौसल्यानन्दनोऽभवत्। ।
~श्रीमदादि रामायण 1.10.2

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के नवमी तिथि को अभिजित योग तथा पुनर्वसु नक्षत्र मे साकेतलोकाधिपति भगवान श्रीराम का प्राकट्य हुआ।

On the ninth day of the Shukla Paksha in the month of Chaitra, Lord Shri Ram, lord of Saketloka, appeared in Abhijit Yoga and Punarvasu constellation.

तस्मिन्साकेतलोके विधिहरहरिभि: सन्ततं
सेव्यमाने दिव्ये सिंहासने स्वे जनकतनयया राघव: शोभमान:।
युक्तो मत्स्यैरनेकै: करिभिरपि तथा नारसिंहैरनन्तै:
कूर्मै: श्रीनन्दनन्दैर्हयगलहरिभिर्नित्यमाज्ञोन्मुखैश्च ।।
यज्ञ: केशववामनौ नरवरो नारायणो धर्मज:
श्रीकृष्णो हलधृक् तथा मधुरिपु: श्रीवासुदेवोऽपर: ।
एते नैकविधा महेन्द्रविधयो दुर्गादय: कोटिश:
श्रीरामस्य पुरो निदेशसुमुखा नित्यास्तदीये पदे ।।
इत्यादीनि बृहद्ब्रह्मसंहितावचनानि सङ्गच्छन्ते ।
अत्र नन्दनन्दनशद्ब: नन्दं नन्दयति विविधोक्त्या
शोकत्याजनाद्वर्धयतीति मथुरानिवासिपर: ।
श्रीकृष्णशद्बो द्वारकानिवासिपर इति न विरोध: ।

Narad Pancharatra antargat Brihad Brahma samhita quoted in ramayan shiromani tika

राघव सान्तानिक वन की दुनिया में दिव्य सिंहासन पर सीता के साथ चमकते हैं जहां ब्रह्मा, शिव और विष्णु लगातार उनकी पूजा करते हैं। वह (भगवान राम) कई दिव्य मत्स्य अवतारों, बंदरों और प्रचुर मात्रा में नरसिम्हा या नरसिम्हा अवतारों, कुर्म अवतारों और श्री नंद के पुत्रों, यानी श्री कृष्ण, हया, गाला और हरि से घिरे हुए हैं। वे सभी भगवान राम का आदेश प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं। केशव, वामन आदि पुरुष, नारायण, युधिष्ठिर, श्री कृष्ण, हलाध्रिक बलराम और वासुदेव, राक्षस मधु के शत्रु, साथ ही विभिन्न प्रकार के महेंद्र और लाखों देवी दुर्गा, हमेशा श्री राम (श्री राम) के सामने रहते हैं, उनका पैर कू सामने खड़े रहते हैं। यहां, नंद-नंदन विशेषण भगवान कृष्ण के उस रूप को दर्शाता है, जो नंद को प्रसन्न करते हैं और मथुरा में रहते हैं, जबकि श्री कृष्ण उस व्यक्ति को संदर्भित करते हैं जो द्वारिका में रहते हैं।

Raghav shines with Sita on the divine throne in the sanatanik forest where Brahma, Shiva and Vishnu constantly worship him. He (Lord Rama) is surrounded

by many divine fish incarnations, monkeys and plenty of Narasimha or Narasimha incarnations, Kurma incarnations and the sons of Sri Nanda, namely Sri Krishna, Haya, Gala and Hari. They are all eager to receive the order of Lord Rama. Keshav, Vamana and other men, Narayana, Yudhisthira, Sri Krishna, Haladhrika Balarama and Vasudeva, the enemies of the demon Madhu, as well as various types of Mahendra and millions of goddesses Durga, are always in front of Sri Rama (Sri Rama), standing in front of his feet. Here, the adjective Nanda-Nandana refers to the form of Lord Krishna who pleases Nanda and resides in Mathura, while Sri Krishna refers to the person who resides in Dwarka.

यद् अक्षरं ब्रह्म सनातनं स्वराट् सहस्रनेत्राननपादबाहुकम्।
निरंजनं निष्प्रतिमं निरीहं श्रीराम तत्वत् चरणं वदन्ति।।
~आदि रामायण १.१०.१९

That imperishable Brahman, eternal, self-sufficient, with thousands of eyes, face, feet and arms, devoid of colour, incomparable, selfless is called as the feet of Shri Ram.

श्री राम के चरण को अविनाशी ब्रह्म, शाश्वत, स्वयंभू, हजारों नेत्रों, मुखों, पैरों और भुजाओं वाला, रंग से रहित, अतुलनीय, निष्काम को कहते हैं।

श्रीरामे देवदेवेश कोशलायां विराजते।

अंशावतारः कृष्णाद्या प्रणमन्ति ह्यसंख्यकाः । ।

~aadi ramayan 1.6.30

Sri Ram, Lord of the gods, resides in Kosala (saket loka) Innumerable partial incarnations such as Krishna, Balram and others bow before him

भगवानों के भी भगवान श्री राम, कोसलपुर (नित्य साकेत लोक) में रहते हैं, जहां कृष्ण, बलराम और अन्य असंख्य अंश, कला, विभुति, गुण अवतार उनके सामने झुकते हैं।

सर्वस्वरुपो भगवान् अयमेव रघुत्तमः ।

यादृशी भावना यस्य तादृशस्तस्य भासते। ।

~आदि रामायण १.५.२०

This is the Supreme Lord in all His forms, the best of the Raghu dynasty. Whatever feeling one worships with, he takes that form.

रामायण परत्वार्थ प्रतिपाद्य परः स्मृतः ।

एकान्तिकानां सेव्योऽयं मंत्रराज षडक्षरम्। ।

~वैष्णवागम अन्तर्गत उमा संहिता

रामायण के परत्वार्थ यही प्रतिपादन करता है कि ऐकान्तिक रामभक्तों को मंत्रराज षडक्षरम् का सेवा/उच्चारण करना चाहिए।

The meaning of supremacy of Ramayana states that the solitary devotees of Ram should serve/recite the king of mantras ie six-letter mantra.

रामैव यस्य बहिरन्तर्पापकोटिनिर्वासनैकरणं शरणं जनानाम्।

कस्तस्य कोशलपुराधिपराजसुनोरन्यवतारनिवहस्तुलने प्रयातु। ।

~आदि रामायण

जिन भगवान श्रीराम का नाम जीवमात्र के बाहर भीतर के अनन्त पापों का एकमात्र नाशक एवं साधक लोगों का रक्षक

है, उन कोशलेन्द्रनन्दन भगवान श्रीराम की तुलना अन्य अवतार समुह कैसे कर सकते हैं??

How can other incarnations compare to Lord Rama, whose name is the only destroyer of infinite sins inside and outside the living entity and the protector of the seekers?

पुरा कृतयुगे केचित् जनाः सुकृतिनो नल।
सरहस्यं रामनाम सकृदास्वाद्य सद्गुरुं।।
भित्वाऽज्ञानतमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम्।
परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्ता विनाश्रमं।।
~आदि रामायण

हे नल! बहुत पहले सतयुग में कुछ सुकृती लोग सद्गुरुस्वरुप श्रीराम नाम को एक बार आस्वादान करके अज्ञानरीप अन्धकार समुह का नाश करके, अपने आत्मस्वरुप का प्रकाश करके बिना परिश्रम के ही परात्पर ब्रह्म श्रीराम में संलींन होकर सिद्धि को प्राप्त कर लिए।

O Nala! Long ago in Satyug, some pious people, by chanting the name of Sadgurusvarup Sri Rama once, destroyed the darkness of ignorance, illuminated their self-image and merged in the Supreme Brahman Sri Rama without any effort and attained perfection.

देव! त्वद् भुजदण्डचण्डिम चमत्कारि प्रतापानल
ज्वालाजाल भयाद् इवाभिविशति क्षीराम्बुधिं माधवः।।

Prashasti khand and maha nataka

Hanuman ji says:- God Shri Ramchandra! The bow in your arm is so miraculously dangerous and has fire of glory and network of flames, even in fear, Madhava(killer of madhu and kaitabha asura)enters the ksheersagar.

यथा अहं सच्चिदानन्दरूपः श्रीविग्रहं दधत्।
तथैव मत्प्रियां युयं सच्चिदानन्द विग्रहः ।।
आदि रामायण १.५३.८

श्रीराम कहते हैं:- जैसा मेरा दिव्य शरीर सच्चिदानन्द स्वरूप है ठीक वैसे ही मेरी प्रिया भी सच्चिदानन्द स्वरूपा हैं।

Sri Rama says:- Just as my divine body is the form of true bliss, so my beloved is the form of true bliss.

जानकी उवाच:-

द्वय वनचरं ज्ञेयं तृतीय जलगोचरम्।
एकोदृष्टा तथा क्षोण्यादेवं सर्वेषु मार्जवम्।।
महाविष्णुर्महाशम्भुर्महामाया जलेशया।
महाहंकृतिविश्वज्च कारणानि च सर्वशः।।
गुणत्रय प्रकृतिश्च सुर्येन्दु हव्यवाहनाः।
ब्रह्माविष्णुरुद्रश्च देवेन्दो ऋषयस्तथा।।
स्थावरा जंगमाश्चैव ये चान्ये भुत भाविनः।
एते तावत कलां योगिन् मम् राम स्वयं प्रभुः।।

~सुन्दरी तंत्र

जानकी जी कहते हैं:- मत्स्य और कुर्म दो जलचर हैं, वाराह और नरसिंह दो वनचर हैं। वामन और परशुराम ब्राह्मण हैं। राम और कृष्ण क्षत्रिय है और बुद्ध और कल्कि ये दोनों मिलकर प्रसिद्ध दस अवतार है। महाविष्णु, महाशम्भु, महामाया, क्षीरसागर नारायण, महत् तत्व,अहंकार ये सब विश्व के कारण हैं, सत्व, रज,तमस त्रयगुण, सुर्य-चन्द्र-अग्नि, ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र, देवेन्द्र, ऋषिगण, स्थावर जंगम जो हुए हैं और जो होने वाला है, ये संपुर्ण प्रकृति श्रीराम की कलांश की ही विभुति है। हे योगीराज! मेरे राम स्वयं भगवान है।

Janaki says:- Matsya and Kurma are two aquatic animals, Varaha and Narasimha are two forest animals. Vamana and Parashurama are Brahmins. Rama and Krishna are Kshatriyas and Buddha and Kalki are the famous ten incarnations. Mahavishnu, Mahashambhu, Mahamaya, Kshirsagar Narayana, Mahat Tattva, Ego are all the causes of the world, Sattva, Raja, Tamas Triguna, Sun-Moon-Agni, Brahma-Vishnu-Rudra, Devendra, Rishis, movable and immovable that have been and are to be vibhuti of kalansh of Shri Ram. O Yogiraja! My Ram is God Himself.

कोटिकन्दर्पलावण्यश्चण्डिकानन्तविक्रमः ।
कोटि इन्द्रवद्विलासी च कोटिब्रह्माण्डनायकः ।।

Bharadwaj Ramayan

Shri Ram has crore times beauty of kamadeva, infinite times prowess of chandika and crore times opulence of Indra. He is lord of infinite universes

सः तस्मिन् भवने भाति कोटिब्रह्माण्डनायकः ।
रामचन्द्रो धर्ममयः साक्षात् परात्पर प्रभुः ।।

~आदि रामायण १.११४.१५६

Ram shines in that building as the leader of the millions of universes. Ramachandra is the embodiment of righteousness and is himself the Supreme Lord.

स भुमा पुरुषोऽस्यांश किमुतान्ये सुरादये।
सर्वावतारमुलं तत् कालमायागुणातिगम्। ।

~आदि रामायण ३.२९.२४

अष्टभुजा विष्णु अर्थात भुमा पुरुष श्रीराम के अंश मात्र है, तो दुसरे देवताओं की बात ही क्या? श्रीराम समस्त अवतारों के मुल है और काल, माया, गुणों से भी परे हैं।

Ashtabhuja Vishnu, the Bhuma Purusha, is only a part of Sri Rama, so what about other gods? Sri Rama is the root of all incarnations and is beyond time, illusion and qualities.

नारायणोऽपि रामांश शंखचक्रगदाब्जभृत्।
चतुर्भुजस्वरुपेण वैकुंठे च प्रकाशते। ।

~आदि रामायण ३.२९.३०ख & ३१क

क्षीरसागर वैकुंठ के निवासी, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करने वाले भगवान श्रीमन् नारायण भगवान श्री राम के अंश हैं

Resident of ksheersagar vaikunth Lord shriman narayana, the wielder of Shankha, Chakra, Gada and Padma is the ansha manifestation of Bhagavan Shri Ram

धर्मादिरक्षणविधौ सुरपालनाय ये च असुरान्दलयितुं बहुशोवतारः ।

सर्व्वस्यकारणं रघुनाथ एकोऽयोध्याधिनाथसुत एव परः परेशः । ।

~Maha Ramayana

धर्म और अन्यों की रक्षा के लिए, देवताओं की रक्षा के लिए तथा असुरों का नाश करने के लिए जिन्होंने अनेक अवतार लिए हैं,इन सब अवतारों के एकमात्र कारण दशरथनन्दन रघुनाथ हैं।

He who has taken many incarnations to protect Dharma and others, to protect the gods and to destroy the demons. The only cause of all these incarnations is Raghunath, the son of Dasaratha.

सर्वावताराणां मुलभुतः श्रीराम उच्यते।

Aadi ramayan 4.37.27

Saketlokadhipati Sri Ram is said to be the original cause of all incarnations.

साकेतलोकाधिपति श्री राम को सभी अवतारों का मूल कारण कहा जाता है।

Brahma Ji revealing ultimate Supremacy of the Supreme Lord Shri Ram in front of the world —

यत् परं श्रूयते ज्योतिर्यत् परं श्रूयते तमः ।
यत् परं परतश्चैव परमात्मेति कथ्यसे ॥२७ ॥
परमाख्यं पर यच्च त्वमेव परिगीयसे ।
स्थित्युत्पत्ति विनाशानां त्वामाहुः परमां गतिं ॥२८ ॥

~Valmiki Ramayana: Yuddha Kanda: 117.27-28 (based on bengali recension, the oldest manuscript of Valmiki Ramayana which is found from Nepal)

Brahma Ji says –

O Ram ! You are heard as a supreme effulgent (in vedas), You are heard as the one who is beyond Tama (prakriti). You are the one who is beyond the beyond — You are

referred to as the Paramatma. You are celebrated as the Supreme, bearing the name ‘Parama’. O Raghava! You are declared as the Supreme Goal of Jivas, you are responsible for creation, preservation, and dissolution of this universe.

ब्रह्मा जी कहते हैं –

हे राम ! आप (वेदों में) एक परम तेजोमय के रूप में सुने गये हैं, आप तम (प्रकृति) से परे सुने गये हैं। आप ही वह हैं जो सबसे परे हैं – आपको परमात्मा कहा जाता है। आप ‘परम’ नाम से विख्यात हैं। हे राघव! आप जीवों के सर्वोच्च लक्ष्य घोषित किए गए हैं, आप इस ब्रह्मांड के निर्माण, संरक्षण और विघटन के लिए जिम्मेदार हैं।

अष्टादशपुराणा निभवाज्ञानाति मानद।
महाभारत युक्तानि सकाशात् कालिजस्य तु।।
तत् नास्ति न च वेदेषु पुराणेषु स्मृतिष्वपि।
चरिते रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरे।।

~narad puran ekadshi mahatmya chapter 2

O Manada! The eighteen puranas do not completely encompass all knowledge, even the Mahabharata composed in conjunction between them is marked by the influence of kaliyuga. There is nothing- not even in vedas, puranas and dharma shastras that fully contains infinite and countless deeds of Lord Raghunath which are spread across hundred crore narratives

एवं सर्वावतारेषु कलास्वंशेषु चाग्रणीः ।
उत्पत्तिविलय श्चैव रामो साकेतनायकः ।।
श्रीमदादि रामायण १.८९.१५

Thus saketlokadhi pati Shri Ramchandra is the foremost among all ansha , kala incarnations and is the origin and dissolution of all incarnations.

यत् पादाम्बुज विस्फुरन् नखमणि ज्योत्स्ना प्रकाशोद्यमम्।
साक्षाद् ब्रह्म परं यदन्तिमगिरा नेतीति वेदाः जगुः ।।
Adi ramayan 1.141.84

Vedas call parabrahman is light coming from nails of feet of bhagwan Shri Ramchandra as neti neti (not that, not that).

यावन्ति सन्ति रुपाणि विष्णोरमिततेजसः ।

तावन्ति तव पुत्रस्य परंब्रह्मस्वरुपिणः ।।

~श्रीमदादि रामायण १.१३.९१

जितने भी रूप अत्यन्त तेजस्वी भगवान विष्णु के हैं, वे सब रूप आपके पुत्र परब्रह्म श्रीराम का है।

चैत्रमासे नवम्यां तु शुक्लपक्षे रघुद्वह।

प्रादुरासीत् परब्रह्म परब्रह्मैव केवलम्।।

~सनतकुमार संहिता

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के नवमी तिथि पर स्वयं परंब्रह्म श्रीराम अवतरित होते हैं।

On the ninth day of the Shukla Paksha of the month of Chaitra, Parambrahman Sri Ram Himself descends.

यद् अक्षरं ब्रह्म सनातनं स्वराट् सहस्रनेत्राननपादबाहुकम्।

निरंजनं निष्प्रतिमं निरीहं श्रीराम तत्वत् चरणं वदन्ति।।

~आदि रामायण १.१०.१९

That imperishable Brahman, eternal, self-sufficient, with thousands of eyes, face, feet and arms, devoid of colour, incomparable, selfless is called as the feet of Shri Ram.

श्री राम के चरण को अविनाशी ब्रह्म, शाश्वत, स्वयंभू, हजारों नेत्रों, मुखों, पैरों और भुजाओं वाला, रंग से रहित, अतुलनीय, निष्काम को कहते हैं।

श्रीरामे देवदेवेश कोशलायां विराजते।

अंशावतारः कृष्णाद्या प्रणमन्ति ह्यसंख्यकाः।।

~aadi ramayan 1.6.30

Sri Ram, Lord of the gods, resides in Kosala (saket loka) Innumerable partial incarnations such as Krishna, Balram and others bow before him

भगवानों के भी भगवान श्री राम, कोसलपुर (नित्य साकेत लोक) में रहते हैं, जहां कृष्ण, बलराम और अन्य असंख्य अंश, कला, विभुति, गुण अवतार उनके सामने झुकते हैं।

सर्वस्वरुपो भगवान् अयमेव रघुत्तमः ।
यादृशी भावना यस्य तादृशस्तस्य भासते।।
~आदि रामायण १.५.२०

This is the Supreme Lord in all His forms, the best of the Raghu dynasty. Whatever feeling one worships with, he takes that form.

सहस्रशीर्षनयनः पुरुषोऽस्यांश उच्यते।
तस्माद् रामचन्द्रो देवः सर्वकारणकारणम्।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सृष्टिस्थित्यंतकर्मणि।
गुणावतारः तस्यैव पुराविद्भिरुदाहृता।।
तथान्ये मत्स्यकुर्माद्या अवतारः समीशितुः ।
स एव भगवान् साक्षाद भूद् दाशरथे गृहे।।

आदि रामायण १.११०.३५८-३६०

The purusha who is praised with the mantra of thousands head, eyes, foot, hands is said to be a part of Ram. Therefore God Ramachandra is the cause of all causes. Brahma, Vishnu and Rudra in the action of

creation, existence and destruction. The incarnations of the virtues of the same have been described by the ancient scholars. And other incarnations, such as the mataya , Kurma etc were present. That same Supreme Personality of Godhead appeared in the house of Dasaratha

सहजानंदनी सीता कोटिलक्ष्माद्य उपासितम्।
साकेतनगरी चैव प्रमोदवनम् उत्तमं। ।
आदि रामायण १.६०.९

Sita is worshipped by crores of laxmi and other goddesses

रामायण परत्वार्थ प्रतिपाद्य परः स्मृतः ।
एकान्तिकानां सेव्योऽयं मंत्रराज षडक्षरम्। ।
~वैष्णवागम अन्तर्गत उमा संहिता

रामायण के परत्वार्थ यही प्रतिपादन करता है कि ऐकान्तिक रामभक्तों को मंत्रराज षडक्षरम् का सेवा/उच्चारण करना चाहिए।

The meaning of supremacy of Ramayana states that the solitary devotees of Ram should serve/recite the king of mantras ie six-letter mantra.

रामैव यस्य बहिरन्तर्पापकोटिनिर्वासनैकरणं शरणं जनानाम्।

कस्तस्य कोशलपुराधिपराजसुनोरन्यवतारनिवहस्तुलने प्रयातु।।

~आदि रामायण

जिन भगवान श्रीराम का नाम जीवमात्र के बाहर भीतर के अनन्त पापों का एकमात्र नाशक एवं साधक लोगों का रक्षक है, उन कोशलेन्द्रनन्दन भगवान श्रीराम की तुलना अन्य अवतार समुह कैसे कर सकते हैं??

How can other incarnations compare to Lord Rama, whose name is the only destroyer of infinite sins inside and outside the living entity and the protector of the seekers?

पुरा कृतयुगे केचित् जनाः सुकृतिनो नल।

सरहस्यं रामनाम सकृदास्वाद्य सद्गुरुं।।

भित्वाऽज्ञानतमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम्।

परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्ता विनाश्रमं। ।

~आदि रामायण

हे नल! बहुत पहले सतयुग में कुछ सुकृती लोग सद्गुरुस्वरुप श्रीराम नाम को एक बार आस्वादान करके अज्ञानरीप अन्धकार समुह का नाश करके, अपने आत्मस्वरुप का प्रकाश करके बिना परिश्रम के ही परात्पर ब्रह्म श्रीराम में संलींन होकर सिद्धि को प्राप्त कर लिए।

O Nala! Long ago in Satyug, some pious people, by chanting the name of Sadgurusvarup Sri Rama once, destroyed the darkness of ignorance, illuminated their self-image and merged in the Supreme Brahman Sri Rama without any effort and attained perfection.

सः तस्मिन् भवने भाति कोटिब्रह्माण्डनायकः ।
रामचन्द्रो धर्ममयः साक्षात् परात्पर प्रभुः । ।

~आदि रामायण १.११४.१५६

Ram shines in that building as the leader of the millions of universes. Ramachandra is the embodiment of righteousness and is himself the Supreme Lord.

देव! त्वद् भुजदण्डचण्डिम चमत्कारि प्रतापानल
ज्वालाजाल भयाद् इवाभिविशति क्षीराम्बुधिं माधवः ।।

Prashasti khand and maha nataka

Hanuman ji says:- God Shri Ramchandra! The bow in your arm is so miraculously dangerous and has fire of glory and network of flames, even in fear, Madhava(killer of madhu and kaitabha asura)enters the ksheersagar.

राम विहाय पलकार्धमपि ममेणा ना स्मरन्ति न भजन्ति न च
श्रयंति रामं विहाय वचसा प्रवदन्ति नान्यं ध्यायन्ति चेत

सिकदापि न रामतोन्यं। ।श्रृन्वेति नान्यं चरितानि च
रामभक्ता रामात् परं प्रियतरं न विभावयन्ति। ।

~राम रहस्य १.५-६

Ekantik Rambhaktas do not remember, pray or take refuge even for half a moment, leaving Rama. They speak with words apart from Rama They never meditate on anyone else They never hear of anyone other than Rama ,The devotees of Rama do not think of anyone dearer to him than Ram.

रामाद् अन्यं न मे च चेतपतत्तु शिरसि मे कालदण्डः प्रचण्डो
जिह्वाये तां द्विजिंह्वोदसतुरघुपतेर्नाम तोन्यं जपेच्चेत्।
दम्भोलिर्माम कीर्तन दलपतसु हृदयं चित येद्वात् तोन्यं
जानीते सर्ववेत्तामम् संकलमिदंवेत्रुवान्योनवत्तु। ।

~रामरहस्य २.१

Shiva says If I ever bowed my head before anyone else other than raghunandan, then kaldand may fall upon my head. If I ever to chant anyone else other than raghunandan, may venomous cobra bite my tongue. If I ever to chant anyone else other than raghunandan, then

at that moment may vajra fall upon my heart. O Supreme god! You are omniscient. You think upon if I have ananya bhakti for you or not.